सम्पादकीय

गत वर्ष आचार्य श्री भवभूति जी ने आर्य-समाज, आर्य नगर, पहाड़गंज (दिल्ली) में लगभग पचास वर्ष पूर्व मुद्रित महापुरुषकीर्त्तन नामक पुस्तक दिखाई और निश्चय हुआ कि इसका पुनर्मुद्रण हो। इसके सम्पादन का कार्य मुझे मिला । हमने इसका कम्प्यूटर से पुनः टंकण कराया । ईक्षण किया । इसे गुरुकुलों के विद्यार्थियों के लिये रोचक एवं अधिक उपयोगी बनाने के लिये महापुरुषों के चित्रों को भी यथास्थान जोड़ दिया है।

आशा है यह पुस्तक विद्यार्थियों एवं स्वाध्यायशील जनता के लिए प्रेरक एवं उपयोगी सिद्ध होगी ।

महापुरुषों का जीवन संशयग्रस्त लोगों के लिए प्रेरक एवं अपने लक्ष्य पर चलने वालों के लिए उत्साहवर्धक तथा कष्टों को सहन करने की शक्ति देने वाला होता है।

महापुरुष प्रकाशस्तभ के समान मार्गदर्शन करते रहते हैं। हमें अपने लक्ष्य पर तेजी से चलने के लिए व्यवस्थित राजमार्ग मिल जाता है। वीतराग सन्तों का जीवन योगाभ्यास में भी विशेष सहायक होता है ।।

निवेदक

-आनन्दप्रकाशः

आर्ष-शोध-संस्थान

अलियाबाद

प्रस्तावना

महापुरुषलक्षणम्

के महापुरुषा नूनं, प्रश्नोऽस्ति विषमो ह्ययम्।
वेदमन्त्रमुदाहृत्य, तल्लक्षणमुदीर्यते।।
'सोमा:पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः।
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः।। 'साम588
आह्लादका ये विधुवच्छोभना मार्गदर्शकाः।
सर्वेषां मित्रभूता ये, धर्ममार्गोपदेशकाः।।
निष्पापाः शुभकर्माणः, शुद्धबुद्धियुतास्तथा।
पावयन्ति तु ये सर्वान्, सुखं संप्रापयन्ति च।।
ते महापुरुषा ज्ञेयाः,, सदैवेश्वरसेवकाः।
इति भावः शुभो मन्त्रे, सामवेदस्य कीर्तितः।।
आदर्शोऽस्त्ययमेवास्मिन्, मन्त्रे योऽस्ति निरूपितः।
यावानंशो भवेद् यस्मिन्, महत्ता तस्य तावती।।
नास्तिका ये न ते तस्मात्, पुस्तकेऽस्मिन्नुदाहृताः।
लैनिन् स्टैलिन् प्रभृतयः ख्याता यद्यपि ते भुवि।।
चरित्रदृष्ट्या ये हीनास्तेऽपि नात्र निरूपिताः।
यतश्चरित्रनिर्माणम्, अस्य मुख्यं प्रयोजनम्।।
गुणग्राहकतादृष्ट्या संग्रहोऽयं कृतो यतः।
स्वाभाविकं छिद्रजातं, तस्मान्नात्र प्रदर्शितम्।।
लक्षणं भर्तृहरिणा, कृतं चापि निरूप्यते।
यदत्रोदाहृते वर्गे, प्रायेण घटते बुधाम्।।
वदनं प्रसादसदनं, सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः।
करणं परोपकरणं, येषां केषां न ते वन्द्याः।।
मनसि वचसि काये, पुण्यपीयूषपूर्णा-स्त्रिभुवनमुपकार-श्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्, पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्तः, सन्ति सन्तः कियन्तः।।

-धर्मदेवो विद्यामार्तण्डः।

ओ३म्

आर्ष - विद्या-प्रचार - न्यास, ग्रन्थमाला-८

महापुरुषकीर्तनम्

(भाषानुवादसहितम्)

प्रणेता-

धर्मदेवो विद्यावाचस्पतिर्विद्यामार्तण्डः

(गुरुकुल-कांगड़ी-विश्वविद्यालयीयः)

संस्कृतधुरीणः, साहित्यभूषणम्

आनन्दकुटीरम्

ज्वालापुरम् (उ. खं.)

सम्पादकः-

आचार्य आनन्दप्रकाशः

आर्ष-शोध-संस्थानम्

अलियाबादः

प्रकाशकः-

आर्ष-विद्या-प्रचार-न्यास

आर्ष-शोध-संस्थान
अलियाबाद, मं. शामीरेपट
जिला.- रंगारेड्डी
(आं.प्र.) -500078

दूरभाषः - 08418-201165
चलभाषः- 09989395033
पुनर्मुद्रण- 2000 प्रतियाँ
चैत्र शु. 1 -2068 वि. सं. अप्रैल- 2011 ई.
मानक- पुस्तक -संख्या- 978-81-87931-06-5
ISBN- 978-81-87931-06-5

मूल्य- ₹40 (चालीस रुपये)

अन्य प्राप्ति स्थानः-
1. आर्य समाज आर्य नगर पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055
2. अमर स्वामी प्रकाशन,1058, विवेकानन्द नगर गाजियाबाद (उ. प्र.)-201001
3. गुरुकुल झज्जर महाविद्यालय, जि.- झज्जर (हरियाणा) 124103

मुद्रकः- Universal Graphics Secunderabad

MAHA-PURUSHA- KEERTANAM
by Dharmadev vidyamartand

आर्ष-पाठविधि

''जितनी विद्या इस रीति से बीस वा इक्कीस वर्ष में हो सकती है, उतनी अन्य प्रकार से शतवर्ष में भी नहीं हो सकती।''

(स.प्र.समु.३)

आर्ष-शोध-संस्थान

(कन्या-गुरुकुल)

अलियाबाद, मं.शामीरपेट

जि.रंगारेड्डी - 500 078

(आं.प्र.)

दूरभाष : 08418-201165

चलभाष : 09989395033;

09392476077

आर्ष-पाठविधि का प्रमुख केन्द्र

इस संस्थान की अन्य पुस्तकें

1. वेदांगपरिचय- (आचार्य आनन्दप्रकाश)

ज्ञान-राशि वेदों का अर्थ एवं गूढ रहस्यों को समझने के विशिष्ट साधन- शिक्षा,कल्प,व्याकरण,निरुक्त,छन्दः और ज्योतिष- ये छह वेदांग हैं। वेदार्थ को समझने के साथ-साथ ये वेदांग लोक- व्यवहार चलाने में भी महत्त्वपूर्ण हैं। इनका सरलता एवं विस्तार से परिचय दिया गया है। 60-00

2. देवों के वैद्य अश्विनीकुमार-(आचार्य आनन्दप्रकाश)

बहुत से वैदिक प्रमाणों के आधार पर यौवन-प्राप्ति एवं दैवी चिकित्सा-पद्धति का विस्तृत विवेचन किया गया है। 5-00

3. आर्य-विद्वत्-परिचय- (आचार्य आनन्दप्रकाश)

रंगीन फोटो सहित जीवित आर्य संन्यासी, गुरुकुलों के आचार्य, उपदेशक, शिक्षक, आर्य लेखक, आर्य-पुरोहित, वानप्रस्थी, आर्य भजनोपदेशकों का विस्तृत परिचय एवं कार्य बताया गया है, जिससे आर्य-जनता एवं जिज्ञासु उनका यथासम्भव लाभ प्राप्त कर सकें। 75-00

4.मनुस्मृति में महिला का स्थान- (आचार्या आनन्दप्रकाश) 5-00

5. सांख्यदर्शनम्- (आचार्य आनन्दप्रकाश)

वैदिक-सिद्धान्तों के अनुकूल महर्षि कपिल के आशय को सरल, संक्षिप्त और स्पष्ट शब्दों में समझाने वाला अद्भुत् भाष्य है।

150-00

6. संस्कृत की शब्द-सम्पदा (आचार्य आनन्दप्रकाश)

इस पुस्तिका में संस्कृत की विपुल शब्द-राशि एवं यौगिकता का विस्तार से दिग्दर्शन कराया गया है।

7. हिन्दु (एक समीक्षा)   (आचार्य आनन्दप्रकाश)

हिन्दु- शब्द की द्वेषपूर्ण व्याख्या-काला, काफिर, चोर इत्यादि का समीक्षा- पूर्वक निराकरण करके उसका वास्तविक अर्थ समझाया है।

5-00

8. वैशेषिक-दर्शनम्

(व्याख्याकार एवं सम्पादक-आचार्य आनन्दप्रकाश)

वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार पदार्थ-विद्या को समझने के लिये महर्षि कणाद का वैशेषिक-दर्शन अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ-रत्न है। जैसा कि प्रसिद्ध है...''काणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम्''

अर्थात् महर्षि कणाद का वैशेषिक-दर्शन एवं महर्षि पाणिनि का व्याकरण सभी संस्कृत-शास्त्रों को समझने के सर्वोत्तम सहायक ग्रन्थ हैं।

यह शास्त्र अभ्युदय एवं निःश्रेयस्(ऐहलौकिक एवं पारलौकिक उन्नति) को एक साथ बताने वाला प्रमुख आर्ष-ग्रन्थ है।

महर्षि दयानन्द के निर्देशानुसार इसमें प्रशस्तपाद-भाष्य भी सरल एवं स्पष्ट हिन्दी भाषा में अनुवाद- सहित दिखाया है। अर्थात् सभी 370 सूत्रों की व्याख्या के साथ-साथ सूत्र क्रम से सम्पूर्ण प्रशस्तपाद भाष्य भी व्याख्यात है। इस प्रकार लगभग 650 पृष्टों का यह ग्रन्थ जिज्ञासु पाठकों के साथ-साथ शोधकर्ताओं के लिये भी सहायक होगा।   300-00

ट्रस्ट के अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

धातुप्रकाशः   (ले. आचार्य आनन्दप्रकाश)

पाणिनीय संस्कृत-व्याकरण का यह ग्रन्थ डेमी साइज के लगभग बीस हजार (20,000) पृष्ठों की सामग्री वाला सरल संस्कृत भाषा में है। बीस वर्षों में लिखे गये इस विशाल ग्रन्थ में पाणिनीय धातुपाठ के सब (लगभग 2000) धातुओं के सब प्रक्रियाओं एवं लेट् लकार सहित सब

-1 They are only true great, who are truly good;

-George chapman

2 Great thoughts, great feeling, come to greatmen, Like instncts un- awares; -R.M. milne

3 great men are they who see that spiritual is stronger than any material force; -Emerson

समर्पणपत्रम्

विख्यातो भुवनेऽखिलेऽपि मतिमान् यो योग्यताकारणाद्
यो गीर्वाणगिरोऽस्ति लोकविदितो वेत्ता महान् कोविदः।
राष्ट्रस्योपपतिं पवित्रचरितं, देशस्य रत्नं महद्,
राधाकृष्णमहोदयं प्रति मया ग्रन्थो मुदा ह्मर्प्यते।।
दोषाः क्वचन दृश्यन्ते, महत्सु पुरुषेष्वपि।
समस्तदोषशून्यस्तु, केवलं परमेश्वरः।।
गुणग्राहकता दृष्ट्या संग्रहोऽयं मया कृतः।
गुणावलोकने प्रीतिम्, औदार्यं वर्धयिष्यति।
गिरा सरलयातीव, रचितं सुसहायकम्।
सच्चरित्रस्य निर्माणे, महापुरुषकीर्तनम्।।
उदारदृष्टिकोणस्य, राधाकृष्णमहोदयः।
समर्थको जगत्ख्यातस्तस्मै तेनेदमर्प्यते।।
उदारहृदयो धीमान्, वाग्मी दार्शनिकाग्रणीः। स्वीकरोतु
महाभागस्तुच्छमेतदुपायनम्।।
महान्तं पुरुषं दिव्यं, संस्मृत्य तदनुग्रहात्।
कृतेनानेन यत्नेन, प्रीयतां परमेश्वरः।

विनीतः समर्पको

धर्मदेवः

धन्यवादपत्रम्

रयीशः श्री प्रतापसिंहो वर्धताम्
यैर्विबुधैर्दत्ता लाभप्रदाः सुनिर्देशाः,
तेभ्यः सर्वेभ्योऽहं मुदितो वितरामि धन्यवादततिम्।।

एषु सर्वमान्येन्द्रविद्यावाचस्पति-काका कालेलकर-स्वामिसत्यदेवः श्रद्धेयो म. प्रभ्वाश्रित-श्रीभारतभूषणादीनां नामानि विशिष्टतयोल्लेख्यानि।

कृतज्ञो धर्मदेवः

शुभाशंसनम्

विद्यामार्तण्डेन, व्यरचि महापुरुषकीर्तनं काव्यम्।
श्रीधर्मदेव विदुषा, सद्गुणरुचिरं हितप्रदं ललितम् ।।1।।
पुण्यार्यभूपुरुषरत्नमहात्मनां तत्, संकीर्त्य पुण्यचरितं सुधिया प्रशस्तम्।
गीर्वाणगीः पिपठिषुव्रतिमानवेभ्यो, द्वारं ह्यपावृतामिवामरवाङ्मयस्य ।।2।।

कविरत्नं मेधाव्रताचार्यः,

Introduction

pandit Dharma Deva Vidyavachaspati, Vidyamartanda, of the Gurukula kangri vishva Vidyalaya, is an oracle of wisdom. He makes new things familiar and familiar things new. TO write well is to think well and to posses at once intellect] soul and tatse.

In this present book MAHA PURUSH KIRTANAM, there is not his talent alone, but he is behind it, as a friend and benefactor of his readers.

this book deals with prayers to God, praises of saints and sages, reesearches of scholars and philosophers, services of social reformers, greatness of heroes and martyrs, activities of national leaders, and nobility of the great men

of other countries. The author herein possesses a zeal for the welfare of human race.

since theauthor writes with ease and grace, this book can with credit be prescribed as a text book for high schools and colleges. this book makes your life, a divine landscape with a live espression of all race beauties. It raises your spirit , and inspires you with noble and holy thoughts.

Through this book ,the author pavs the way for the kingdom of Heaven on earth, inviting all mankind to share the Immorta I Kindly Light.

-Swami Rajeshwarananda. M.A.D.litt. Editor The call Divine Madras.
president Bharat Sadhu Samaj
(Madras branch)

Camp: Hardwar.
April 19,1959

I have duly received a copy of the महापुरुष कीर्तनम् insanskrit Verses with trans lation in Hindi by Pandit Dharma Deva Vidya Martanda.The verses are in easy and flowing Sanskrit and give in aconcise manner the sketches of the lives of great men. I am sure the book will be found very useful.

M.Anant Sayanam Ayyangar
(Speaker loka Sabha)

20 akbar road
New Delhi 22-4-1959

कुछ प्रसिद्ध विद्वानों की सम्मति

'मङ्गल प्रभात' के सम्पादक 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' के प्रवर्त्तक और राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन के अवसर पर 1500/= के महात्मा गान्धी पुरस्कार के यशस्वी विजेता श्री काका साहेबा कालेलकर जी, सदस्य राज्यसभा, नई देहली लिखते हैं-

विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड धर्मदेव जी द्वारा लिखित 'महापुरुषकीर्तनम्' यह संस्कृत प्रशस्ति ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित पढ़कर बड़ा ही आनन्द हुआ। संस्कृत भाषा अत्यन्त सरल और प्रवाही है। प्रशस्तियां गुणग्राही तो होती ही हैं, लेकिन इसमें परमात्मा से लेकर डा. भीमराव अम्बेडकर तक के महापुरुषों की प्रशस्ति में हर एक के स्वभाव की खूबी और सेवा कार्य का स्वरूप पाया जाता है। गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्राध्यापक के द्वारा लिखे हुये इस कीर्तन में स्वामी विरजानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, गुरुदत्त विद्यार्थी, श्रद्धानन्द जी, आचार्य रामदेव जी आदि महापुरुषों का कीर्तन तो होगा ही; लेकिन बौद्ध, जैन, मुसलमान, सिक्ख आदि हर समाज के पूज्य आदरणीय पुरुषों का भी अन्तर्भाव उदारता से किया गया है।

सुभाषित-ग्रन्थों में राजा-महाराजाओं की और प्राचीन कवियों की प्रशंसा पाई जाती है, देवताओं के और अवतारों के वर्णन और स्तोत्र आते हैं। उसी परम्परा को और प्रवृत्ति को अद्यतन बनाने का यह सुभग प्रयत्न है। संस्कृत-भाषा जैसी प्राचीन प्रत्न है, वैसी ही नूतन नूत्न भी है। इसीलिये उसे हम सनातन कहते हैं। **महापुरुषकीर्तनम्** सचमुच संस्कृत की सुभग कृति है।

'सन्निधि' राजघाट, —काका कालेलकर
नई देहली 6-5-59

'भारतीयं धर्मशास्त्रम्' के प्रणेता, सनातन धर्म संस्कृत कालेज, मुलतान के सेवानिवृत आचार्य, संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् श्री पं. चूड़ामणि जी शास्त्री(वर्तमान स्वामी विज्ञान-भिक्षु जी) लिखते हैं-

महापुरुषकीर्तनम् के विषय में मेरे कुछ शब्द :-

महापुरुषों का वर्णन संस्कृत कविता में होने से यह साहित्य अमर हो जाता है।

1. मुझे यह देखकर हर्ष हुआ है कि आस्तिक ग्रन्थकार ने आरम्भ में सब से बड़े पुरुष (प्रभु) का कीर्तन वेदमन्त्र देकर किया है। प्रभु का यह वर्णन सचमुच मांगलिक भी हुआ है और हृदयाकर्षक भी। यह वर्णन, नास्तिक को भी आस्तिक बनाने की क्षमता रखता है।

2. दूसरे काण्ड में-श्री बुद्धदेव, कबीर आदि त्यागी तपस्वियों का मनोमोहक वर्णन हुआ है। ये महामानव जनसुधारक बनकर आये हैं। इनका जीवन नितरां शान्त रहा है।

3. तीसरे काण्ड में-भारत के श्री शंकर आदि आचार्यों और राष्ट्र, कवियों किं वा विश्व कवियों का विशद कीर्तन किया गया है। इसमें कवीन्द्र, रवीन्द्र आदि राष्ट्रोद्धारक कवियों का भी सुन्दर वर्णन मिलता है।

4. चौथे काण्ड में-भारत के नानाप्रान्तीय समाजसुधारक नररत्नों का अत्याकर्षक वर्णन हुआ है। इनकी किरणें समाज से बाहर भी फैली हैं, जिनके जीवन से भिन्न-राष्ट्र निवासी भी प्रभावित हुये हैं।

5. पांचवे काण्ड में-भारतीय वीर सम्राटों का वर्णन अत्युत्तम रीति से किया गया है। इसमें युद्धवीरों के अतिरिक्त धर्मवीरों का भी प्रभावोत्पादक वर्णन हुआ है। श्री हकीकतराय तथा गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों का धर्म पर बलिदान तो सचमुच भारतीय बच्चों के अन्दर नवीन रक्त उत्पन्न करने की क्षमता रखता है।

6. छठे काण्ड में-राष्ट्र के नायकों (श्री दादाभाई तिलक, मालवीयादि) का इतना आकर्षक वर्णन हुआ है कि पढ़ते ही यह इच्छा जागृत हो जाती है कि हम भी कुछ बनें। उसमें उन सम्पूर्ण वीरों (श्री पटेल, मुखर्जी, सुभाष आदि नवयुवकों तथा श्री टण्डन, आजाद, भावे, आदि प्रौढ़ महानुभावों का भी हृदयाकर्षक वर्णन हुआ है। इनमें अजातशत्रु श्री राष्ट्रपति जी तथा अश्रांत कर्मवीर श्री जवाहरलाल जी का कार्य भी सुन्दर प्रकार से दिखाया गया है।

7. सातवें काण्ड में- भारत से बाहर के समस्त भूमण्डल के चुने हुये चरदुस्त, सुकरात, ईसा, आदि सत्य वक्ताओं का अतीव हृदयाकर्षक वर्णन हुआ है। यह काण्ड न तो यह ग्रन्थ जहाँ अधूरा समझा जाता वहाँ पक्षपातपूर्ण भी माना जाता है। इस काण्ड ने ग्रन्थ को विशाल गौरव दिया है। इनका वर्णन पूरी निष्पक्ष भावना से किया गया है। इसमें टालस्टाय, हिटलर का वर्णन भी पक्षपातरहित हुआ है। इस काण्ड के आ जाने से जहाँ ग्रन्थ से लेखक की विद्वत्ता का परिचय मिलता है, वहाँ इनकी दूरदर्शिता भी सिद्ध होती है।

8. परिशिष्ट में- आर्यसमाज के अनथक कार्यकर्त्ता श्री हंसराज जी आदि का सुन्दर वर्णन हुआ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ के अध्ययन से ग्रन्थकार की मेधाविता का पूरा परिचय मिलता है। इसके अध्ययन से भारतीय छात्रों के हृदय में व्यापक विचार आ सकते हैं- यदि भारत सरकार इसे अध्यापनीय विभाग में चुन ले। इसके अध्ययन से जहाँ राष्ट्रीय भावना जाग उठती है, वहाँ साम्प्रदायिक भावना- जो राष्ट्रोत्थान में भारी रुकावट है- घट भी सकती है। इसी भाव पर मैंने तीन श्लोक बनाये हैं-

मानवो मानवत्वेन मानवानां सहोदरः।
अतो मानवशिक्षायै महामानव आदृतः।।1।।
सांप्रदायिकभावांस्तु मानवो धारयेदपि।
महामानववृन्दं तु सम्प्रदायम् अति स्थितम्।।2।।
'मानवीयः सम्प्रदायः' तन्मते स्थिरताङ्गतः।
अतस्ते मानवैः सर्वैः साम्येनाऽर्चामवाप्नुयुः।।3।।

इतना लिखकर मैं अपनी लेखनी का जन्म सफल समझता हूँ।

-चूडामणिविज्ञानभिक्षुः

महापुरुषकीर्तनस्य विषयानुक्रमणिका

विषय-सूची पृष्ठ-संख्या

1. मङ्गलाचरणम्	15
2. देवेशमहिमा	15
3. देवेशस्तवः	17
4. आनन्दसाम्राज्यम्	19
5. कुतो न हसेयम् ?	21
6. पुरुषोत्तमः श्रीरामः	22
7. योगिराजः श्रीकृष्णः	24
8. महात्मा गौतमबुद्धः	28
9. भक्ति-योगी स्वामी रामानन्दः	30
10. महात्मा कबीरः	31
11. गुरुर्नानकः	32
12. महर्षिर्विरजानन्दः	33
13. महर्षिर्दयानन्दः	35
14. महर्षिस्तवः	37
15. धर्मवीरो महात्मा श्रद्धानन्दः	39
16. श्री रामकृष्णः परमहंसः	43
17. सुवाग्मी स्वामी विवेकानन्दः	44
18. ब्रह्मनिष्ठो महात्मा रामतीर्थः	45
19. महात्मा मोहनदास गांधी	47
20. समन्वययोग्यरविन्दः	49
21. रमणमहर्षिः	50
22. इतरे महात्मानः	52

23.	कविमूर्धन्यो वाल्मीकिः	53
24.	महामुनिर्वेदव्यासः	54
25.	आधुनिककविशिरोमणिः कालिदासः	55
26.	भासभवभूतिप्रमुखाः कवयः	56
27.	महाप्राज्ञः श्री शङ्कराचार्यः	56
28.	सुभक्तः श्री रामानुजाचार्यः	58
29.	भक्तियोगी श्री मध्वाचार्यः	59
30.	मेधावी गुरुदत्तः	60
31.	वैज्ञानिकमूर्धन्यो जगदीशचन्द्रवसुः	62
32.	कवीन्द्रो रवीन्द्रः	63
33.	त्यागमूर्तिराचार्यरामदेवः	64
34.	दाक्षिणात्यः सुधारकः श्री तिरुवल्लुवारः	66
35.	क्रान्तिकारी कविः श्री बसवेश्वरः	67
36.	श्री राजा राममोहनरायः	69
37.	दान्तो देवेन्द्रनाथः	70
38.	सुवक्ता श्री केशवचन्द्रसेनः	71
39.	पण्डितप्रवर ईश्वरचन्द्रविद्यासागरः	73
40.	महामतिर्महादेवगोविन्दः	75
41.	श्री नारायणगुरुस्वामी	76
42.	दलितोद्धारकः श्री कुड्मलरङ्गरावः	77
43.	विधवोद्धारकः श्री वीरेशलिङ्गं पन्तुलुः	79
44.	हरिजनसेवकठक्करबापा	80
45.	महाप्रतापी विक्रमादित्यः	82
46.	दयावीरः सम्राडशोकः	83
47.	महाराणा प्रतापसिंहः	85

	पृष्ठ-संख्या
48. महाराष्ट्रकेसरी शिवराजः	86
49. धर्मवीरो हकीकतरायः	87
50. धर्मवीरो गुरुरर्जुनदेवः	90
51. धर्मवीरो गुरुस्तेगबहादुरः	91
52. गुरुर्गोविन्दसिंहः	92
53. बन्दावीरः	93
54. धर्मवीरो लेखरामः	94
55. हैदराबादहुतात्मानः	95
56. देशभक्तो दादाभाई नौरोजी महोदयः	97
57. लोकमान्यो बालगंगाधरतिलकः	98
58. पञ्चाम्बुकेसरी लाजपतरायः	100
59. देशभक्तो विपिनचन्द्रपालः	102
60. भारतभूषणं मदनमोहनमालवीयः	103
61. देशबन्धुश्चित्तरञ्जनदासः	105
62. जनमान्यनेता सुभाषचन्द्रः	106
63. लोहपुरुषो वल्लभभाई पटेलः	107
64. बङ्गकेसरी श्यामाप्रसादमुखोपाध्यायः	110
65. विविधशास्त्रविशारदो भीमरावः	111
66. मौलाना अब्बुल-कलाम-आजादः	113
67. अजातशत्रू राष्ट्रपती राजेन्द्रप्रसादः	114
68. जगद्विख्यातो दार्शनिको राधाकृष्णः	116
69. माननीयो जवाहरलालः	117
70. राजर्षिः श्रद्धेयः पुरुषोत्तमदासः	119
71. आचार्यो विनायकः (विनोबा भावे)	121

पृष्ठ-संख्या

72. भारतीयस्वातन्त्र्यकर्णधारा: 123
73. महापुरुषाभिलषितम् अस्मदीयं गणराज्यम् 127
74. समाजसंशोधको जरदुष्ट्र: 130
75. पुण्यात्मा कन्फ्यूशियस: 131
76. सुकृती सुकरात: 133
77. महात्मेसामसीह: 134
78. संशोधको मार्टिन लूथर: 136
79. वैज्ञानिको न्यूटन: 137
80. वीरो जार्जवाशिंगटन: 138
81. अब्राहमलिंकनमहोदय: 139
82. मनस्वी तालस्ताय: 140
83. प्रतिभाशाली बर्नार्ड शा महोदय: 141
84. वीरो हिटलरमहोदय: 142
85. महात्मा हंसराज: 144
86. महात्मानो नारायण-स्वामिन: 145
87. वीताराग: स्वामी दर्शनानन्द: 146
88. उपसंहाररूपा प्रार्थना 148

ओ३म्

महापुरुषकीर्तनम्

प्रथमं काण्डम्

मङ्गलाचरणम्

ओं वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। यजुर्वेद31।16

महापुरुषशब्देन, देवो मन्त्रेऽस्ति कीर्तितः।
कीर्तनं तेन रूपेण, ग्रन्थादौ क्रियते मया ।।1।।

'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्' इस यजुर्वेद के मन्त्र में भगवान् का महान् पुरुष (सर्व व्यापक परमेश्वर) के नाम से कीर्तन किया गया है। इस लिये ग्रन्थ के प्रारम्भ में मैं उसी रूप में भगवान् का कीर्तन करता हूँ।

देवेशस्मरणं नित्यं, सर्वमङ्गलदायकम्।
कर्त्तव्यं भक्तिसहितं, पापतापापहारकम् ।।2।।

देवाधिदेव भगवान् का स्मरण सदा सर्व मङ्गल दायक है इसलिये सब को भक्ति सहित पाप ताप को हरने वाले उसका स्मरण नित्य करना चाहिये।

देवेश महिमा

इमानि दृश्यानि मनोरमाणि देवाधिदेवं प्रति मां नयन्ति।
योऽनन्तशक्तिर्भगवान् दयालुः सर्वान् पदार्थान् विदधाति दिव्यान्।।3।।

ये सब सुन्दर दृश्य मुझे उस परमेश्वर की ओर ले जाते हैं, जो भगवान् अनन्तशक्ति युक्त और दयालु है तथा जो इन सब दिव्य पदार्थों को बनाता है।

शक्नोति कस्तस्य महामहिम्नः प्राप्तुं तु पारं प्रबलो मनीषी।
हिमावृता पर्वतमालिकेयं गायत्यजस्रं* किल यस्य गीतम् ।।4।।

कौन अत्यन्त बली, बुद्धिमान् पुरुष भी उस अनन्त महिमा शाली का पार पा सकता है? यह बर्फ से ढकी पर्वतमाला जिसका निरन्तर* गीत गा रही है।

सुरापगा* यस्य यशो ऽभिरामं गायत्यनन्तस्य मुदा तरङ्गैः।
द्रुमाः समस्ता हरिताम्बराणि सन्धार्य चारूणि मनोहराणि ।।5।।
व्यात्ताननाः यस्य वदन्ति विष्णोः, कीर्तिं किरन्तः कुसुमानि तस्मै।
प्रातः समुत्थाय खगाः कलेन यं लोकनाथं मुदिताः स्तुवन्ति ।।6।।

गङ्गा नदी जिस अनन्त के सुन्दर यश का अपनी लहरों के साथ प्रसन्नता से गान कर रही है। सारे वृक्ष सुन्दर मनोहर हरे वस्त्रों को पहन कर मुख खोले हुए जिस सर्वव्यापक परमेश्वर की कीर्ति का कथन करते और उस पर फूल चढ़ाते हैं। पक्षी प्रातःकाल उठ कर प्रसन्नता के साथ मधुर स्वर से जिस जगदीश्वर की स्तुति करते हैं।।

दिवोकरोऽयं च हिमांशुरेषो, ग्रहा असंख्या गगने चरन्तः।
नीराजनं* वै विदधत्यभीक्ष्णं* हिरण्यगर्भस्य दयामयस्य ।।7।।

यह सूर्य, यह चन्द्र तथा आकाश में विचरण करते हुए असंख्य ग्रह जिस दयालु हिरण्यगर्भ (तेजोमय) परमेश्वर की लगातार आरती कर रहे हैं।

ब्रह्मा स विष्णुः स हरिः स शम्भुः, रुद्रः स मित्रो वरुणो गणेशः।
इन्द्रो यमोऽग्निः स हि मातरिश्वा सूर्यः सुपर्णः स तथा गरुत्मान्।।8।।
एतैरनेकैर्भुवि नामभिर्यं मनीषिणोऽनन्तगुणं स्मरन्ति ।
तमेव देवं विमलं सुशेवं 4* नित्यं प्रपन्नोऽस्मि शमाभिलाषी ।।9।।

वही एक अनन्तगुण युक्त परमेश्वर ब्रह्मा, विष्णु, हरि, शम्भु, रुद्र,

---

1.* अजस्त्रम् - निरन्तरम् ।

2.* सुरापगा- गङ्गा। 3 *नीराजनम् - आरतीति प्रसिद्धं कर्म ।

अभीक्ष्णम् - निरन्तरम् । 4. सुशेवम् - उत्तमसुखदायकम्।

मित्र, वरुण, गणेश, इन्द्र, यम, अग्नि, मातरिश्वा, सूर्य, सुपर्णा, गरुत्मान आदि अनेक नामों से संसार में बुद्धिमानों द्वारा स्मरण किया जाता है। उसी सर्वथा पवित्र, सुखदायक देव की शरण में मैं शान्ति की अभिलाषा से आता हूँ।

शान्तिं स दद्याच्छरणागताय ददातु मेधामचलां च भक्तिम्।
विपत्सु सम्पत्सु दिवानिशं तं देवं स्मरेयं मुदितो यथैकम् ।।10।।

वह देव मुझ शरणागत को शान्ति, मेधा (पवित्र बुद्धि) तथा अटल भक्ति को दे जिससे मैं विपत्ति और सम्पत्ति दोनों अवस्थाओं में प्रसन्नता सहित उस एक ही को दिन रात याद करूं।

देवेशस्तवः

परेशो विश्वात्मा, सकलभुवनं यो वितनुते
यदीयं माहात्म्यं, दिशि दिशि ततं विज्ञविदितम्।
ध्रुवां शान्ति दत्वा, सफलयति यो जन्म भुवने
दिशेयं देवेशं, कुत इह न मत्तो दिशि दिशि? ।।11।।

जो परमेश्वर संसार का सर्वान्तर्यामी आत्मा सारे संसार को बनाता है, जिस की महिमा प्रत्येक दिशा में विस्तृत और ज्ञानियों द्वारा जानी जाती है, स्थिर शान्ति देकर जो संसार में मनुष्य जन्म को सफल कर देता है मैं उस देवराज परमात्मा का मस्त होकर प्रत्येक दिशा में कीर्तन क्यों न करूं?

दयालुः सर्वज्ञः सकलमनुजानां स हि पिता,
सखासौ भक्तानां निखिलसुखदात्री च जननी।
यमेकं ध्यायन्ति, ध्रुवसुखमवाप्तुं मुनिजनाः,
दिशेयं देवेशं, कुतः इह न मत्तो दिशि दिशि? 12।।

जो परमेश्वर दयालु, सर्वज्ञ, सब मनुष्यों का पिता, सब सुखों का देने वाली माता और भक्तों के लिये मित्र के समान है, नित्य सुख को प्राप्त

करने के लिये मुनिजन जिस एक का ही सदा ध्यान करते हैं, मैं मस्त होकर उस देवराज जगदीश्वर का प्रत्येक दिशा में गुणगान क्यों न करूं?

स्तुवन्ति प्राज्ञा ये, बहुगुणयुतैर्नामभिरहो,
तमेवेन्द्रं मित्रं, वरुणमथ रुद्रं गणपतिम्।
य एको देवानाम्, अधिपतिरथानन्दसदनं,
दिशेयं देवेशं, कुत इह न मत्तो दिशि दिशि ? 13।।

बुद्धिमान् लोग जिस एक ही परमेश्वर की इन्द्र, मित्र, वरुण, रुद्र, गणपति आदि अनेक भिन्न-भिन्न गुणसूचक नामों से स्तुति करते हैं। जो एक ही सब सूर्य चन्द्रादि प्रकाशक पदार्थों और विद्वानों का स्वामी तथा आनन्द का स्रोत है, मैं मस्त होकर उस परमेश्वर का प्रत्येक दिशा में गुणगान क्यों न करूं ?

ददाति ज्ञानं यो निखिलमनुजानां हितधिया,
दयाया यः सिन्धुः, सकलबलशाली भुवनभृत्।
निराकारं नाथं, ध्रुवमजमनन्तं ह्यनुपमं,
दिशेयं देवेशं, कुत इह न मत्तो दिशि दिशि ? 14।।

जो दया का समुद्र, सर्वशक्तिमान् और सब लोकों का धारणा करने वाला परमेश्वर सब मनुष्यों के कल्याण की इच्छा से (वेद रूप) ज्ञान देता है। उस निराकार, स्वामी, नित्य, अजन्मा, अनन्त, अनुपम देवराज परमेश्वर का मैं क्यों न मस्त होकर प्रत्येक दिशा में गुणगान करुं?

विदुर्यं नह्यज्ञा भुवनविषयासक्तमनसो,
न यं पापाः पश्यन्त्यखिलभुवने व्यापकमपि।
तपः सत्यज्ञानैर्युतशुभगुणा यं विदुरजं,
दिशेयं देवेशं, कुत इह न मत्तो दिशि दिशि ? 15।।

जिस को संसार के विषय में आसक्त-मन वाले अज्ञानी नहीं जानते, जिस सारे संसार में व्यापक परमेश्वर को भी पापी नहीं देखते,

जिस अजन्मा परमेश्वर को तप, सत्य और ज्ञान के द्वारा उत्तम गुणयुक्त विद्वान् जानते हैं, मैं मस्त होकर उस जगदीश्वर का क्यों न प्रत्येक दिशा में गुण कीर्तन करूँ?

आनन्द-साम्राज्यम्

आनन्दसाम्राज्यमिदं समस्तं न क्लेशलेशः क्वचिदत्र दृष्टः।
माता यदानन्दमयी दयालुः क्रोडे न तस्यास्तु सुखं कथं स्यात्॥16॥

यहाँ (उपासना के समय) सब आनन्द का साम्राज्य है, कहीं क्लेश नाममात्र भी नहीं दिखाई देता। जब माता आनन्दमयी और दयालु है तो उस की गोद में सुख कैसे न मिले ?

अङ्के जनन्याः शिशुरेक आस्ते यथा विशङ्को मुदितो नितान्तम्।
जगज्जनन्या हि तथा शुभाङ्के सीदाम्यचिन्तो विभयः प्रशान्तः॥17॥

जैसे एक छोटा बच्चा माता की गोदी में निश्चिन्त और प्रसन्न होकर बैठता है, वैसे मैं जगज्जननी की उत्तम गोदी में निश्चिन्त निर्भय और बिल्कुल शान्त होकर बैठता हूँ।

उपासनार्थं किल मातुरङ्के यदा निषीदामि तदैव शान्तिः।
प्राप्नोति चानन्दसुशक्तिवृद्धिस्तमः समस्तं प्रलयं प्रयाति ॥18॥

जब उपासना के लिये मैं जगन्माता की गोदी में बैठता हूँ तो मुझे शान्ति प्राप्त होती है। आनन्द और उत्तम शक्ति की वृद्धि होती है और सारा अन्धकार नष्ट हो जाता है।

पयो यथा पाययतीह पुत्रं माता हि तस्याभिविवृद्धिकामा ।
ज्ञानामृतं शान्तिरसेन मिश्रं प्रदाय मातोपकरोति दिव्या ॥19॥

जिस प्रकार माता पुत्र को उस के शारीरिक विकास के लिये दूध पिलाती है, वैसे ही यह दिव्या माता शान्ति रस के मिश्रित ज्ञानामृत पिला कर मेरा बड़ा उपकार करती है। .

रसेन तृप्ता हि दयामयीयं सोमं प्रदायामरतां विधत्ते।

पीत्वाऽप्रमत्तोऽपि सदैव मत्तः स्तब्धः सुदान्तो विचरामि भूमौ।।20।।

यह आनन्द से भरी हुई दयामयी माता सोम (ज्ञानमय भक्ति का रस) देकर मुझे अमर बना देती है। उस रस का पान कर के मैं प्रमाद रहित होकर भी सदा मस्त, शान्त और आत्मसंयमी बन कर पृथिवी पर विचरण करता हूँ।

सैवास्ति माता स पिता सखा मे भ्राता स एवास्ति समस्तशक्तिः।
इत्थं जनन्यां परमानुरक्तिं दधान आप्नोमि परं पदं तत् ।।21।।

वही मेरी माता है, वही पिता, मित्र, भ्राता और सर्वशक्ति-सम्पन्न है। इस प्रकार माता में परम प्रेम को धारण करते हुए मैं परम पद को प्राप्त करता हूँ।

न यत्र चिन्ता न तमो विषादः पापं न सन्तापमयं च यत्र।
लोकाः सदानन्दमयाः प्रशान्ताः ज्योतिः परं प्राप्य रमे नितान्तम्।।22।।

मैं उस अवस्था को प्राप्त कर लेता हूँ जहाँ न चिन्ता है, न अन्धकार, न दुःख, न पाप तथा संताप। जहाँ सर्व लोक सदा आनन्दमय और प्रशान्त प्रतीत होते हैं। मैं उस परम ज्योति को पाकर अत्यन्त आनन्दित होता हूँ।

न कामये राज्यमहं समृद्धं वित्तं न चेहे विपुलं प्रतिष्ठाम्।
श्रद्धां च मेधामहमादधानः परोपकारे निरतो भवेयम् ।।23।।

न मैं समृद्धि सम्पन्न राज्य की कामना करता हूँ, न बहुत धन और मान की मुझे चाह है। मैं तो यही चाहता हूँ कि श्रद्धा और मेधा को धारण कर के मैं सदा परोपकार में तत्पर हो जाऊँ। (स्वर्गाश्रम)।

कुतो न हसेयम् ?

गङ्गातरङ्गा विहसन्त्यभङ्गा इमे हिमाद्रेरपि तुङ्गशृङ्गाः।
भृङ्गाः कुरङ्गास्तुरगा विहङ्गाः, आनन्दमग्नो न कुतो हसेयम्।।24।।

ये गङ्गा की न टूटती हुई लहरें, हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियाँ,

भ्रमर, हरिण, घोड़े और पक्षी सब हंस रहे हैं, तब मैं क्यों आनन्द में मग्न होकर न हंसूँ?

लीलाद्भुतेयं किल तस्य विष्णोः, यः सर्ववित् प्रेममयो दयालुः।
सृष्टं प्रमोदार्थमिदं जगन्नो ह्यानन्दमग्नो न कुतो हसेयम्।।25।।

यह सब उस सर्वव्यापक परमेश्वर की लीला है जो सर्वज्ञ, प्रेममय और दयालु है। उस ने हमारी प्रसन्नता के लिये ही यह जगत् बनाया है, तब मैं आनन्द में मग्न होकर क्यों न हंसूँ?

देवोऽयमेकोऽ'स्त्यमृतः स्वयम्भूः रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः'।
नित्यं स्मरंस्तस्य विभोः स्वरूपं ह्यानन्दमग्नो न कुतो हसेयम्?26।।

वह परमेश्वर एक ही है जो अमर, स्वयम्भू, आनन्द से परिपूर्ण और सर्वथा त्रुटिरहित है। उस सर्वव्यापक परमेश्वर के स्वरूप को नित्य स्मरण करते हुए आनन्द में मग्न होकर मैं क्यों न हंसूँ?

पिता यदानन्दमयो मदीयो माता तथा प्रेममयी प्रशान्ता।
भूत्वा सुतः शुद्धमना मनीषी ह्यानन्दमग्नो न कुतो हसेयम्?।।27।।

जब मेरा पिता आनन्दमय है, वही प्रेममयी शान्तिस्वरूपिणी मेरी माता है। तो मैं भी मन को शुद्ध बना कर और बुद्धिमान् होकर आनन्दमग्न हो क्यों न हंसूँ?

आयान्ति दुःखानि भयावहानि चरन्ति मेघा गगने सुघोराः।
आस्थां तथापीश्वर आदधानो ह्यानन्दमग्नो न कुतो हसेयम्।।28।।

बड़े भयङ्कर दुःख आते हैं, घनघोर बादल कभी-कभी आकाश में उमड़ने लगते हैं तो भी ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखता हुआ मैं आनन्द में मग्न होकर क्यों न हंसूँ?

पुरुषोत्तमः श्रीरामः

गुणेन शीलेन बलेन विद्यया सत्येन शान्त्या विनयेन चैव।
योऽभूद् वरेण्यः किल मानवनां रामं स्मरामः पुरुषोत्तमं तम्।।29।।

गुण, शील, बल, विद्या, सत्य, शान्ति और विनय से जो मनुष्यों में अत्यन्त श्रेष्ठ हुआ, ऐसे पुरुषोत्तम श्री राम का हम स्मरण करते हैं।

पितुः प्रतिज्ञा वितथा * नहि स्यात् इदं विचार्यैव वनं प्रतस्थे।
यः सत्यसन्धा* धृतिमान् महात्मा रामं स्मरामः पुरुषोत्तमं तम्।।30।।

पिता की प्रतिज्ञा झूठी न हो,यह विचार कर के जो वन को चला गया,जो सत्यवादी, धैर्य वाला महात्मा था,ऐसे पुरुषोत्तम श्री राम का हम स्मरण करते हैं।

पित्रोर्विनीतः द्विषतां विजेता सुहृत्सु यो निष्कपटो मनस्वी।
साम्यं दधानं हृदये ऽभिरामं रामं स्मरामः पुरुषोत्तमं तम् ।।31।।

जो पितृभक्त, शत्रुविजेता, मित्रों में निष्कपट और मनस्वी था। हृदय में जिस के उत्तम समता थी, ऐसे पुरुषोत्तम श्री राम का हम स्मरण करते हैं।

विजित्य लङ्काधिपतिं प्रदृप्तं * विभीषणायैव ददौ स्वराज्यम्।
निषादराजस्य तथा शबर्या उद्धारकं तं सततं स्मरामः ।।32।।

1.* प्रदृप्तम् – अभिमानिनम् । 1.* वितथा=असत्या ।

2.* सत्यसन्धः=सत्यप्रतिज्ञः ।

जिस ने अभिमानी रावण को जीतकर विभीषण को उस का राज्य दे दिया। निषदराज गुह तथा शबरी का जिस ने उद्धार किया हम ऐसे श्री राम का सदा स्मरण करते हैं।

य एकपत्नीव्रतभृत्सदासीत् भ्रातष्वमन्दं प्रणयं* दधानः।
पितेव पुत्रान् स्वविशोऽशिषद्*यः रामं स्मरामः पुरुषोत्तमं तम्।।33।।

2.* प्रणयम् - स्नेहम् ।

जो सदा एक पत्नि व्रत था, भाइयों से सदा बहुत स्नेह करता था, अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन करता था, ऐसे पुरुषोत्तम राम का हम सदा स्मरण करते हैं।

क्व यौवराज्यं क्व च दण्डकेषु, यानं तथापीह न विह्वलोऽभूत्।
अत्यद्भुतं धैर्यमदर्शयद् यः, रामं नमामः पुरुषोत्तमं तम् ।।34।।

कहाँ तो राज्याभिषेक, और कहाँ दण्डकारण्य गमन, फिर भी जो व्याकुल न हुआ। जिसने अत्यद्भुत धैर्य को दिखाया,उस पुरुषोत्तम राम को हम नमस्कार करते हैं।

यो वेदवेदाङ्गविदां वरिष्ठो बलेन चैवानुपमो यशस्वी ।
तथापि नम्रो ह्यभिमानशून्यः रामं नमामः पुरुषोत्तमं तम् ।।35।।

जो वेद, वेदाङ्ग को जानने वाला था, अतुल बली यशस्वी था फिर नम्र और अहंकार था, ऐसे पुरुषोत्तम श्री राम को हम नमस्कार करते हैं।

योगिराजः श्रीकृष्णः

यो योगिराजः किल कर्मयोगमार्गस्य नेतृत्वमलंचकार।
सद्धर्मसंरक्षणदत्तचित्तः कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः? 36।।

जिस योगिराज श्री कृष्ण ने कर्मयोग के मार्ग का नेतृत्व किया, जिसने सद्धर्म रक्षा में चित्त को लगाया, ऐसे श्री कृष्ण महात्मा किस से वन्दनीय नहीं?

ज्ञानी सुवीरः शुभगायको यो गुणाकरः शाश्वतधर्मगोप्ता।
तथाप्यहंकारलवेन हीनः कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?37।।

जो ज्ञानी, वीर, गायक, गुण-भण्डार और नित्य धर्म-रक्षक थे, फिर भी अहंकार-शून्य थे, ऐसे श्री कृष्ण महात्मा किस से पूजनीय नहीं?

परोपकारर्पितजीवतो यः कंसादिदुष्टारिगणस्य हन्ता।
गीतामृतं पाययिता प्रशस्तं कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?38।।

जिस ने परोपकार में जीवन लगाया, कंसादि दुष्ट शत्रुओं का हनन किया, प्रसिद्ध गीतामृत का लोगों को पान कराया, ऐसे श्री कृष्ण महात्मा किस से वन्दनीय नहीं ?

***सन्ध्याग्निहोत्रादिककृत्यजातं सन्निष्ठया यो विदधे ऽ प्रमत्तः।**
देवेशभक्त्याधिगतप्रसादः कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?39।।

जो सन्ध्या अग्निहोत्रादि नित्य कर्मों को बिना प्रमाद के करते थे, प्रभुभक्ति से जिन्हें अद्भुत शक्ति रूप प्रसाद प्राप्त हुआ था ऐसे श्री कृष्ण

1.* कृतोदकानुजप्यः स हुताग्निः समलंकृतः।। उद्योगपर्व 83.6।

महात्मा किस से पूजनीय नहीं?

***आत्मा ऽविनाशी ह्यजरोऽमरो ऽयं मृत्युस्तु वासः परिवर्त एव।**
इत्यादितत्त्वं प्रदिशन् यर्थार्थं कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?41।।

यह आत्मा अजर अमर है, मृत्यु तो चोला बदलना है। इस प्रकार के यथार्थ तत्त्व को बतलाने वाले श्री कृष्ण महात्मा किस से पूजनीय नहीं?

***भूत्वेह लोके गुणसागरोऽपि यः पादपूजां विदधे द्विजानाम्।**
आसीद् सुहृद् यो धनवर्जितानां कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्य?41।।

जिन्होंने गुणो का समुद्र होते हुए भी राजसूय यज्ञ में ब्राह्मणों के पैर धोने का काम लिया, जो निर्धनों के मित्र थे, ऐसे महात्मा कृष्ण किससे पूजनीय नहीं?

*** विप्रे सुशीले विनयोपपन्ने तथा श्वपाके शुनि गोगजेषु।**
समानदृष्टिं य इहादिदेश कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?42।।

जिन्होंने विनीत, सुशील विप्र, चाण्डाल, कुत्ते तथा हाथी में समदृष्टि का उपदेश दिया, ऐसे महात्मा कृष्ण किससे वन्दनीय नहीं?

आसीत् क्षमावान् धृतिमान् नयज्ञो यो राजनीतौ कुशलोऽद्वितीयः
त्राता सतां पापिदलस्य छेत्ता कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?43।।

जो क्षमाशील,धैर्यवान्,नीतिज्ञ, राजनीति में अद्वितीय कुशल थे, जो सज्जनों के रक्षक तथा पापियों के नाशक थे, ऐसे श्री कृष्ण महात्मा किस के वन्द्य नहीं?

2.* वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।–गीता 2.22।

3.* चरणक्षालने कृष्णो ब्राह्मणानां स्वयं ह्यभूत्।। सभापर्व 35.10।

1.* विद्या विनयसम्पन्ने, ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वापाके च पण्डिताः समदर्शिनः।। गीता 5. 18।।

***क्लैब्यं प्रपन्नं युधि पार्थशूरं विसृज्य चापं विकलं स्थितं तम्।**
विबोध्य धर्मं विदधे सुवीरं कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?44।।

युद्ध के प्रारम्भ में नपुंसक समान बने, धनुष छोड़े, व्याकुल हुए अर्जुन को धर्म समझा कर फिर वीर बनाने वाले कृष्ण महात्मा किस के वन्द्य नहीं?

योगस्य यज्ञस्य सुखस्य शान्तेस्त्यागस्य तत्त्वं सुरसम्पदश्च।
ज्ञानस्य भक्तेस्तपसो दिशन् नः कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?45।।

योग,यज्ञ, सुख, शान्ति, त्याग, दैवी सम्पत्ति, ज्ञान, भक्ति,तप के वास्तविक स्वरूप को जतलाने वाले महात्मा कृष्ण किससे वन्द्य नहीं?

जातो ऽमरो दिव्यगुणैः स्वकीयैर्मतो जनैर्यो भगवानिवेह।
यज्ञान्वितं जीवितमादधानः कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?46।।

जो अपने दिव्य गुणों से अमर हो गये, जिन्हें लोगों ने भगवान के समान मान लिया, ऐसे यज्ञमय जीवन धारण करने वाले श्री कृष्ण किस के वन्द्य नहीं?

यदीयशिक्षा प्रददाति मोदं स्फूर्तिं नवोत्साहबलं सुधैर्यम्।
श्रद्धान्वितानां मनसां स सम्राट् कृष्णो महात्मा न हि केन वन्द्यः?47।।

जिस की शिक्षा प्रसन्नता, नया उत्साह, जोश और धैर्य देती है, श्रद्धालुओं के मन के जो सम्राट थे, ऐसे श्री कृष्ण महात्मा किससे वन्द्य नहीं?

यो घातकायाशिष एव दत्वा चकार शान्त्या परलोकयात्राम्।
बभूव मुक्तः प्रभुतत्त्ववेत्ता कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?48।।

जिन्होंने मारने वाले को भी आशीर्वाद देकर शान्ति से परलोक यात्रा की। जो प्रभु–तत्त्व को जान कर मुक्त हो गये, ऐसे महात्मा श्री कृष्ण किस के वन्द्य नहीं?

1.* क्लैव्यम्-नपुंसकत्वम्।

संस्थाप्य साम्राज्यमधर्मनाशं कर्त्तुं तथा धर्मविवर्धनाय।
येन प्रयत्नो विहिनो ऽभिनन्द्यः कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?49॥

जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर के धर्म की वृद्धि और अधर्म के नाश के लिये प्रशंनीय प्रयत्न किया, ऐसे महात्मा श्री कृष्ण किस से वन्द्य नहीं?

यो मोहनः स्वीयगुणैः प्रशस्तैः स्थितो जनानां हृदयेषु नित्यम्।
निष्कामकर्माण्यकरोत्सदा यः कृष्णो महात्मा स न केन वन्द्यः?50॥

जो मोहन अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण लोगों के हृदय में घर किये हुए हैं, जिन्होंने सदा निष्काम कर्म किये, ऐसे महात्मा श्री कृष्ण किस के वन्द्य नहीं?

अथ द्वितीय-काण्डम्

महात्मवर्गः

महात्मा गौतमबुद्धः

(563-483 ई० पूर्व)

यज्ञेषु हिंसा प्रसमीक्ष्य योऽसौ दयार्द्रचेता व्यथितो बभूव।
तां वारयामास तथा महात्मा तं बुद्धदेवं प्रणमामि शुद्धम् ॥1॥

यज्ञो में हिंसा को देख कर जिस दयालु चित्त वाले को बड़ा दुःख हुआ और जिस महात्मा ने उसे हटाने का पूर्ण प्रयत्न किया उन शुद्ध

बुद्धदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

मैत्रीं प्रमोदं करुणामुपेक्षां य आदिशद् ब्रह्मविहारनाम्ना।

1.*यो ब्रह्मनिष्ठो व्यचरत् पृथिव्यां तं बुद्धदेवं प्रणमामि शुद्धम्।।2।।

मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा इन का ब्रह्मविहार के नाम से जिन्होंने वर्णन किया, जो ब्रह्मनिष्ठ होकर पृथिवी में विचरण करते रहे, उन शुद्ध बुद्धदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

हिंस्या नहि प्राणभृतः सुरक्ष्या यतो ह्यहिंसा परमोऽस्ति धर्मः।

इत्यादि तत्त्वानि पुनर्दिशन्तं तं बुद्धदेवं प्रणमामि शुद्धम् ।।3।।

प्राणियों की हिंसा न करनी चाहिए, किन्तु उन की भली-भांति रक्षा करनी चाहिये, क्योंकि अहिंसा परमधर्म है, इत्यादि तत्त्वों का प्रतिपादन करने वाले महात्मा बुद्धदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

अनित्यतां लोकसुखस्य पश्यन् यो राजपुत्रोऽपि भवन् मनस्वी।

निर्वाणमापात्र यती तपस्वी तं बुद्धदेवं प्रणमामि शुद्धम् ।।4।।

जिस मननशील राजपुत्र ने लौकिक सुख की अनित्यता को देखते हुए जितेन्द्रिय और तपस्वी बनकर निर्वाण वा मोक्ष को प्राप्त किया उन महात्मा बुद्धदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

जनान् दुराचाररतान् विलोक्य धर्मस्य नाम्नाप्यपथे प्रवृत्तान्।

अष्टाङ्गमार्ग* 2 पुनरादिशन्तं तं बुद्धदेवं प्रणमामि शुद्धम् ।।5।।

् आजीविका, सम्यग् व्यायाम,सम्यक् स्मृति,सम्यक् समाधिरूपम्।

मनुष्यों को दुराचार परायण तथा धर्म के नाम से पाप मार्ग में प्रवृत्त देख कर फिर अष्टाङ्ग मार्ग का उपदेश देने वाले महात्मा गौतम बुद्ध को मैं प्रणाम करता हूँ।

1* सब्बामित्ते वसीकत्वा, मोदामि अकुतोभयो।। बुद्धवचनम् सुत्तनिपात 561।

2 *सम्यग् दृष्टि,सम्यक् सकंल्प,सम्यग् वाक्,सम्यक् कर्म,सम्यक

य आर्यसत्यान्यदिशन्मुदार्यः *आराधयन् मार्गमृषिप्रदिष्टम्।
सुशान्तिमूर्तिं निरतं च योगे तं बुद्धदेवं प्रणमामि शुद्धम् ।।6।।

जिस आर्य ने ऋषियों द्वारा प्रदर्शित मार्ग का सेवन करते हुए आर्य सत्यों का उपदेश दिया, उत्तम शान्ति की मूर्ति, योग-परायण उन महात्मा गौतम बुद्ध को मैं प्रणाम करता हूँ।

न ब्राह्मणः कोऽपि भवेद्धिजात्या, वर्णव्यवस्था गुणकर्ममूला।
सुखण्डयन्तं* खलु जातिभेदं, तं बुद्धिदेवं प्रणमामि शुद्धम्।।7।।

जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं होता। वर्ण व्यवस्था गुणकर्मानुसार होती है। यह कह कर जातिभेद का भली-भाँति खण्डन करते हुए शुद्ध बुद्धदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।।

भक्तियोगी स्वामी रामानन्दः

(1300-1448 ई०)

यो भक्तियोगी हरिभक्तिमार्गे जनान् सदा नेतुमिहायतिष्ट।
न जातिभेदं न च वान्यभेदं यः सन्नुदारो ऽ गणयत्कदाचित्।।8।।

जिस भक्तियोगी ने विष्णु की भक्ति के मार्ग में लोगों को लाने का सदा प्रयत्न किया, जिस ने उदार होकर जाति भेद वा अन्य किसी प्रकार के कल्पित भेद की कभी परवाह नहीं की।

1.* ब्रह्मभूतो अतितुलो मारसेनप्पमद्दनो।

2.*आराधयेन्मार्गमृषिप्रवेदितम्-धम्मपद 281।

1 न जच्चा ब्राह्मणो होति, न जच्चा होति अब्राह्मणो।
कम्मना ब्रह्मणो होति कम्मना होति अब्राह्मणो।। सुत्तनिपात 650।

यस्याभवत् सुप्रथितः कबीरः शिष्यो हि यो भक्तजनाग्रगण्यः।
म्लेच्छाननेकानपि वैष्णवान् यः चक्रे प्रभावेन निजेन धीरः।।9।।

जिस का भक्त शिरोमणि सुप्रसिद्ध कबीर शिष्य था। जिस धीर ने अ्नेक म्लेच्छों को भी अपने प्रभाव से वैष्णव बना दिया ।

प्रचार्य भक्तिं विभयांश्चकार संचार्य देशे निखिलेऽपि लोकान्।
दिल्लीश्वरो ऽप्यास यदीयभक्तस्तं देवभक्तं विबुधं नमामि।।10।।

सारे देश में संचार करके और भक्ति का प्रचार कर जिस ने लोगों को निर्भय बना दिया। दिल्ली का बादशाह (गयासुद्दीन) भी जिस का भक्त था, ऐसे परमात्मभक्त बुद्धिमान स्वामी रामानन्द जी को मैं नमस्कार करता हूँ।।

शुद्धाचारा विमलमतयो देवभक्तौ निमग्ना
आत्मारामा अपि सुनिरता ये सदैवोपकारे।
शुद्धौदार्यं सकलविषयेऽदर्शयन् यं प्रशान्ता
रामानन्दान् प्रथितयशसस्तान् समानं नमामि।।11।।

जो शुद्धाचार सम्पन्न, शुद्ध-बुद्धि युक्त, देवभक्ति परायण, आत्मा में रमण करने वाले होकर भी जो सदा परोपकार में तत्पर थे, जिन्होंने प्रशान्त होकर सब विषयों में शुद्ध उदारता को प्रदर्शित किया, ऐसे कीर्तिशाली स्वामी रामानन्द जी को आदर के साथ नमस्कार करता हूँ।

महात्मा कबीरः
(1398-1518 ई.)

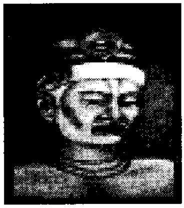

न यः साक्षरः किन्तु देवेशभक्त्या प्रसादं समासाद्य काव्यं चकार।
यदीयोक्तयो मोददाः सारयुक्ताः कबीरं सुभक्तं मुदा तं नमामः।।12।।

जिस ने अशिक्षित होते हुए भी परमेश्वर की भक्ति का प्रसाद पा कर उत्तम कविता की, जिस की उक्तियां हर्ष देने वाली और सारयुक्त हैं ऐसे उत्तम भक्त कबीर को हम प्रसन्नता से नमस्कार करते हैं।

न यो मूर्तिपूजां न चैवावतारं न वा तीर्थयात्रां प्रसेहे न 'बांगम्'।
सदाऽखण्यत् सर्वपाखण्डजालं कबीरं सुभक्तं मुदा तं नमामः।।13।।

जो मूर्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थयात्रा और बांग इत्यादि को सहन न करता था और सारे पाखण्ड जाल का खण्डन करता था ऐसे उत्तम भक्त कबीर को हम प्रसन्नता से नमस्कार करते हैं।

ऋजुस्तन्तुवायो* न दम्भे सहिष्णुः विभीः खण्डयन्नुग्रशब्देषु दम्भम्।
सदैवाप्रमत्तोऽपि देवेशमत्तः कबीरं सुभक्तं मुदा तं नमामः।।14।।

जो सरल-स्वभाव जुलाहे का कार्य करने वाला, दम्भ में असहनशील होकर निर्भयता से उग्रशब्दों में मक्कारी का खण्डन किया करता था। सदा प्रमाद-रहित होकर भी जो ईश्वरभक्ति में मस्त था, ऐसे उत्तम भक्त कबीर को हम प्रसन्नता-पूर्वक नमस्कार करते हैं।

---

* तन्तुवायः- वस्त्रकारः, जुलाहा इति ख्यातः।

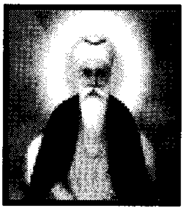

गुरुर्नानकः

(1469-1538 ई.)

यो देवभक्तः सरलो यतात्मा परेशभक्तिं बहुदा शशास।
छलाभिमानानृजुताविहीनं तं नानकं देवमहं नमामि॥15॥

जिस परमेश्वर के भक्त, सरलचित्त, संयमी साधु ने परमेश्वर की भक्ति का सदा उपदेश दिया, छल, अभिमान और कुटिलता से रहित ऐसे गुरुनानक देव को मैं नमस्कार करता हूँ।

यो मूर्तिपूजादिपरान् मनुष्यान् एकेश्वरोपासनमादिदेश।
सत्यं तथैवार्जवमादधानं* तं नानकं देवमहं नमामि॥16॥

मूर्तिपूजादि में लगे मनुष्यों को जिन्होंने एकेश्वरपूजा का उपदेश दिया, सत्य और सरलता को धारण करने वाले ऐसे श्री नानकदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

विलोक्य धर्मावरणे त्वधर्मं तत्खण्डने यो निरतो बभूव।
प्रीत्या समस्तैः सह वर्तयन्तं तं नानकं देवमहं नमामि॥17॥

धर्म के नाम से पाखण्ड को प्रचलित देख कर जो उस के खण्डन में प्रवृत्त हुए, सब के साथ प्रेम से व्यवहार करने वाले उन श्री नानकदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

***आर्जवम् = सरलताम्।**

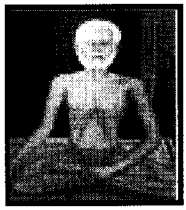

महर्षिर्विरजानन्दः
(1779-1868 ई.)

वैदिक विद्यामार्तण्डो योऽखिलपाखण्डविभेत्ता
येन दयानन्दर्षिसमानं, नररत्नं समपादि।
यस्याभ्यन्तरनेत्रे ह्यास्तां, दिव्यतेजसा पूर्णे
वन्दनीयकमनीयपदोऽसौ, विरजानन्दमहात्मा।।17।।

जो वैदिक विद्या के सूर्य-समान होकर समस्त पाखण्ड का खण्डन करने वाले थे, जिन्होंने ऋषि दयानन्द जैसे नवरत्न को प्राप्त किया था,
जिन के अन्दर के नेत्र दिव्य तेज से पूर्ण थे, वे महात्मा विरजानन्द वन्दना के योग्य सुन्दर चरणों वाले थे।

आर्षग्रन्थाध्ययनविलोपो जातो भारतवर्षे
सर्वत्रैवानार्षपुस्तकाध्ययने जना निमग्नाः।
दृष्ट्वानिष्टं खलु परिणामं, बद्धपरिकरो धीरो
वन्दनीयकमनीयपदोऽसौ, विरजानन्दमहात्मा।।18।।

भारत में आर्षग्रन्थों के अध्ययन का लोप हो गया, सर्वत्र लोग अनार्ष ग्रन्थों के अध्ययन में निमग्न हो गये, इस के अनिष्ट परिणाम को देखकर उस के निवारणार्थ कटिबद्ध धैर्यशाली महात्मा विरजानन्द जी अत्यन्त वन्दनीय हैं।

कथं दक्षिणा देया भगवन् धनरहितेन मयेयम्
दयानन्दयतिमेवं चिन्तातुरमवलोक्य नितान्तम्।
मैवं विधां दक्षिणामीहे माकार्षीस्त्वं चिन्तां
समाश्वासयन्नित्थं वन्द्यो, विरजानन्दमहात्मा।।19।।

भगवन्! मैं धनरहित कैसे गुरुदक्षिणा दूँ? संन्यासी दयानन्द को इस प्रकार अत्यन्त चिन्तातुर देखकर मैं ऐसी दक्षिणा नहीं चाहता, तू चिन्ता न कर, इस तरह शिष्य को आश्वासन देते हुये महात्मा विरजानन्द वन्दनीय हैं।

वैदिकमार्गं सरलं त्यक्त्वा जनाः शुद्धमतिहीनाः,
इतस्ततो भ्रष्टा अतिदीनाः, शोचनीयगतिमाप्ताः।
सन्मार्गं सन्दर्श्य वत्स तान्, दलितान् पतितानुद्धर,
एवं वदन्नुदारो वन्द्यो विरजानन्दमहात्मा ।।20।।

सरल वैदिक मार्ग को छोड़ कर शुद्ध-बुद्धि रहित लोग इधर-उधर भटकते हुए अत्यन्त दीन होकर शोचनीय दशा को प्राप्त हो रहे हैं। हे प्रिय शिष्य ! उन को सन्मार्ग दिखा कर दलित, पतित जनों का उद्धार कर। इस प्रकार उपदेश देते हुए उदार महात्मा विरजानन्द वन्दनीय हैं।

आर्षान् ग्रन्थानपठित्वा येऽनार्षपुस्तकेष्वास्थां,
कृत्वा सम्प्रदायशतभक्ता भूत्वातीव विभक्ताः।
निगमागमदीक्षां त्वं तेभ्यो दत्वा ध्वान्तं परिहर,
इमां दक्षिणामुररीकुर्वन् विरजानन्दयतीड्यः ।।21।।

आर्ष ग्रन्थों को न पढ़कर, अनार्ष पुस्तकों में ही विश्वास रख कर जो सैकड़ों सम्प्रदायों के भक्त बन कर अत्यन्त विभक्त हो रहे हैं, उन को वेद-शास्त्र की दीक्षा दे कर अन्धकार का नाश कर। इस दक्षिणा को स्वीकार करते हुए विरजानन्द संन्यासी पूजनीय हैं।

अन्तेवासी येन दयानन्दर्षिसमानोऽलम्भि,
यस्य ख्यातिस्तत्कृतसुकृतैरखिले भुवने व्याप्ता।

त्यागतपस्यामूर्तिरुदारो गुरुरादर्शाचार्यो,
वन्दनीयकमनीयपदोऽसौ विरजानन्दमहात्मा ।।22।।

जिन्होंने ऋषि दयानन्द जैसे योग्य शिष्य को प्राप्त किया, जिन की कीर्ति उन के किए उत्तम पुण्य कार्यों से सारे संसार में व्याप्त हो गई, त्याग और तपस्या की मूर्ति उदार आदर्श गुरु और आचार्य महात्मा विरजानन्द अत्यन्त वन्दनीय हैं।

स्वतन्त्रतार्थ* कृते विप्लवे, येन गृहीतो भागः,
तथा प्रेरिता भूपाः कर्तुं कान्तिमुत्तमां घोराम्।
देशोन्नतिहितशुभा भावना भरिताः प्रियतमशिष्ये,
नवयुगनिर्माता किल वन्द्यो विरजानन्दमहात्मा ।।23।।

स्वतन्त्रतार्थ की गई सन् १८५७ की क्रान्ति में जिन्होंने भाग लिया तथा राजाओं को उत्तम घोर क्रान्ति करने की प्रेरणा की, जिन्होंने अपने प्रियतम शिष्य दयानन्द में देशोन्नति के लिए उत्तम भावनाएं भर दीं, ऐसे नवयुग निर्माता महात्मा विरजानन्द निश्चय से वन्दनीय हैं।

महर्षिर्दयानन्दः

(१८२४-१८८३ ई०)

निखिलनिगमवेत्ता, पापतापापनेता,
रिपुनिचयविजेता, सर्वपाखण्डभेत्ता।
अतिमहिततपस्वी, सत्यवादी मनस्वी,
जयति स समदर्शी, वन्दनीयो महर्षिः।।24।।

1.* एतद्विषयकानि प्रमाणानि पं० पृथिवीसिंह विद्यालंकारकृते 'राजस्थान का इतिहास' इति ग्रन्थेऽवलोकनीयानि।

सम्पूर्ण वेदों को जानने वाले, पाप, संताप को दूर करने वाले, विपक्षिदल पर विजय प्राप्त करने वाले, पाखण्ड का खण्डन करने वाले, अति पूजनीय तपस्वी, सत्यवादी, मनस्वी, समदर्शी वन्दनीय महर्षि दयानन्द की जय हो।

विमलचरितयुक्तः, पापमुक्तः, प्रशस्तः,
सकलसुकृतकर्ता, कर्मराशावसक्तः।
दलितजनसुधारे, सर्वदा दत्तचित्तः,
जयति स कमनीयो वन्दनीयो महर्षिः।।25।।

शुद्ध चरित्र वाले, निष्पाप, प्रशंसनीय, परोपकारी, कर्मों में अनासक्त, दलितवर्ग के सुधार में दत्तचित्त सब से वन्दनीय महर्षि दयानन्द की जय हो।

प्रथितधवलकीर्तिः, शुद्धधर्मस्य मूर्तिः,
प्रसृतनिगमरीतिः, शत्रुवर्गेऽप्यभीतिः।
अनुसृतशुभनीतिः, वेदशास्त्रेष्वधीती,
विबुधगणवरेण्यो वन्दनीयो महर्षिः।।26।।

सर्वत्र प्रसिद्ध, कीर्तिमान्, शुद्ध धर्म की मूर्ति, वेद-मर्यादा-प्रसारक, शत्रुसमूह से न डरने वाले, शुभ नीति पर चलने वाले, वेदशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित, विद्वानों में श्रेष्ठ महर्षि दयानन्द वन्दनीय हैं।

अधिकतम उदारो धर्मसम्बोधकेषु,
श्रुतिविहितविचारो लोकसंरक्षकेषु।
विदितनिगमसारो ब्रह्मचार्यग्रगण्यो,
जयति स कमनीयो वन्दनीयो महर्षिः।।27।।

धर्म का उपदेश करने वालों में जो सब से अधिक उदार थे, लोक संरक्षकों में जो वैदिक विचारों के प्रचारक थे, ब्रह्मचारियों में अग्रणी, वेद-सार को जानने वाले, उन वन्दनीय महर्षि दयानन्द की जय हो।

महर्षिस्तवः

एकोऽपि सन् निर्भयवीरवर्यः, समस्तपाखण्डमखण्डयद् यः।
सत्यव्रतश्रेष्ठममुं महान्तम्, ऋषिं दयानन्दमहं नमामि ।।28।।

जिन निर्भय वीरवर ने अकेले होते हुए भी समस्त पाखण्डों का खण्डन किया, उन सत्यव्रतधारियों में श्रेष्ठ महान् ऋषि दयानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

न यं कृतान्तोऽप्यशकद् विजेतुं, यस्याग्रतो बद्धकरः स तस्थौ।
योगाग्निना दग्धसमस्तदोषम्, ऋषिं दयानन्दमहं नमामि।।29।।

जिसको मृत्यु भी न जीत सकी परन्तु वह जिसके आगे हाथ बाँधे खड़ी रही, जिसने योगाग्नि से समस्त दोषों को दग्ध कर दिया था, ऐसे ऋषि दयानन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

विषं प्रदायाप्यपकारकर्त्रे, योऽदाद् धनं तस्य हि रक्षणार्थम्।
प्रेम्णा स्वशत्रूनपि मोहयन्तम्, ऋषिं दयानन्दमहं नमामि।।30।।

विष देने वाले अपकारी को भी जिसने उसकी रक्षार्थ धन दिया, प्रेम से अपने शत्रुओं को भी मोहित करने वाले ऐसे ऋषि दयानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

यद्यङ्गुलीरप्यरयो दहेयुस्तथापि यास्यामि न तत्र चिन्ता।
इत्यादिवाक्यं समुदाहरन्तं, तं श्रीदयानन्दमहं नमामि।।31।।

चाहे विरोधी मेरी अंगुलियों की पोरियों को भी जला दें फिर भी मैं वहाँ (जोधपुर) अवश्य जाऊँगा, कहते हुए दयानन्द ऋषि को मैं नमस्कार करता हूँ।

दयाया यः सिन्धुर्निगमविहिताचारनिरतो,
विलुप्तं सद्धर्मं, पुनरपि समुद्धर्तुमनिशम्।
दिवारात्रं येते, यतिवरगुणग्रामसहितो,

दयानन्दो योगी, विमलचरितोऽसौ विजयते।।32।।

जो दयासागर थे, वेद-प्रतिपादित आचरण में तत्पर थे, विलुप्त सद्धर्म की रक्षा के लिए रात-दिन जिन्होंने यत्न किया, ऐसे शुद्ध चरित्र यतिवर दयानन्द योगी की जय हो।

यदीयं वैदुष्यं, श्रुतिविषयकं लोकविदितं,
यदीयं योगित्वं, कलियुगजनेष्वस्त्यनुपमम्।
हितार्थं सर्वेषाम्, इह निजसुखं यस्तु विजहौ,
दयानन्दो योगी, विमलचरितोऽसौ विजयते।।33।।

जिन की वेद विषयक विद्वत्ता लोक प्रसिद्ध है, जिन का योगित्व कलियुग में अनुपम था, सब के हित के लिए जिन्होंने अपना सुख त्याग दिया, ऐसे विमल चरित्र वाले योगी दयानन्द की जय हो।

स्वराज्यं* सर्वेभ्यः, परमसुखदं शान्तिजनकं,
स्वदेशीयो धार्यः, सकलमनुजैर्वस्त्रनिवहः।
स्वराष्ट्रं चाराध्यं, दिशिदिशि दिशन् भीतिरहितो,
दयानन्द योगी, विमलचरितोऽसौ विजयते।।34।।

स्वराज्य परम सुख और शान्ति देने वाला होता है, सब लोगों को स्वदेशी वस्त्र ही धारण करना चाहिए। इस प्रकार अपने राष्ट्र की आराधना या सेवा सदा करनी चाहिए। निर्भय हो कर जिन्होंने सब दिशाओं में उत्तम भावों का प्रचार किया ऐसे विमल चरित्र वाले योगी दयानन्द की जय हो।

जनाः सर्वे नूनं, भुवनजनितुः पुत्रसदृशाः,
अतोऽन्योन्यं स्नेहः, सकलमनुजानां समुचितः।

---

* कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीराज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। - सत्यार्थप्रकाश, समु. ८।

न कोऽप्यस्पृश्यो ना, इति विलमभावं प्रचुरयन्,
दयानन्दो योगी, सरलहृदयोऽसौ विजयते ।।35।।

संसार के सब मनुष्य जगदुत्पादक एक ईश्वर के पुत्र हैं, इसलिए सब को परस्पर स्नेह उचित है, कोई भी अस्पृश्य नहीं। इस प्रकार के विमल भाव के प्रचारक सरल-हृदय दयानन्द योगी की जय हो।

धर्मवीरो महात्मा श्रद्धानन्दः
(१८५७-१९२६ ई०)

येषां जीवितमेव सर्वमभवल्लोकोपकारेऽर्पितं,
दातुं वैदिकशिक्षणं गुरुकुलं, संस्थापितं यैः शुभम्।
अस्पृश्यत्वनिवारणार्थमनिशं, यत्नः कृतो यैः सदा,
श्रद्धानन्दमहोदयान् गुरुवरान् वन्देऽति भक्त्या युतः ।।36।।1.

जिन का समस्त जीवन लोकोपकार के लिए अर्पित था, वैदिक शिक्षा देने के लिए जिन्होंने गुरुकुल स्थापित किया, अस्पृश्यता दूर करने का जिन्होंने दिन- रात प्रबल प्रयत्न किया, ऐसे गुरुवर्य स्वामी श्रद्धानन्द जी को अतिभक्ति से मैं नमस्कार करता हूँ।

येषां निर्भयता हि लोकविदिताऽऽसीदद्वितीया ध्रुवं,
सेनायाः पुरतोऽप्यनावृतमुरो निर्भीकसंन्यासिभिः।
शुद्ध्यान्दोलनचालकान् धृतिधरान्, तानत्युदाराशयान्,
श्रद्धानन्दमहोदयान् गुरुवरान्, वन्देऽति भक्त्या युतः ।।37।।

जिन की निर्भयता लोकविदित थी, जिन निर्भीक संन्यासी ने गुर्खों

की सेना के सामने नंगी छाती तान ली, अति उदार विचार वाले, शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक, धैर्य-धारी महात्मा श्रद्धानन्द जी को अति भक्ति से मैं नमस्कार करता हूँ।

ऐक्यं स्थापयितुं जनेषु सततं हृद्योगजं शाश्वतं,
यत्नो यैर्विहितो दिवानिशमिह, प्रीत्यन्वितेनात्मना।
धर्मार्थं बलिदानतोऽमरपदं, ये धर्मवीरा गताः,
श्रद्धानन्दमहोदयान् गुरुवरान् वन्देऽतिभक्त्या युतः ।।38।।

लोगों में हृदय के मेल से उत्पन्न स्थिर एकता स्थापित करने के लिए, प्रीति भरे अन्तरात्मा से जिन्होंने रात-दिन महान् प्रयत्न किया, जिस धर्मवीर ने धर्म पर बलिदान के कारण अमर पद पाया, ऐसे गुरुवर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को अति भक्ति से मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रद्धाया जगदीश्वरे यतिवराः, ये मूर्तिमन्तोऽभवन्,
सत्यस्याविरतं व्रतं हितकरं, यैः सार्वभौमं धृतम्।
भक्तिं ये दधिरे ध्रुवा ध्रुवतमे, ब्रह्मण्यनन्तेऽव्यये,
श्रद्धानन्दमहोदयान् गुरुवरान्, वन्देऽतिभक्त्या युतः ।।39।।

जो यतिवर भगवान् में अत्यन्त श्रद्धालु थे, जिन्होंने सत्य पर चलने का सार्वभौम व्रत धारण किया हुआ था। अनन्त, अविनाशी, निर्विकार ब्रह्म में जो अगाध भक्ति रखते थे, ऐसे गुरुवर स्वामी श्रद्धानन्द जी को मैं भक्ति से नमस्कार करता हूँ।

विशुद्धा धर्मज्ञाः, सकलमलहीना बलभृतः,
अहिंसायाः पुण्यं, व्रतमिह धृतं यैर्यतिवरैः।
श्वपाके सद्विप्रे, शुनि करिणि नित्यं समदृशो,
गुरून् श्रद्धानन्दान् सविनयमहं नौमि सततम् ।।40।।

जो विशुद्ध धर्मज्ञानी थे, बलवान् निर्मल थे, जिस यतिवर ने अहिंसा के पुण्यव्रत को धारण किया था, जो चाण्डाल तथा ब्राह्मण, कुत्ते

तथा हाथी सब में सम दृष्टि रखते थे, ऐसे गुरु स्वामी श्रद्धानन्द जी को लगातार मैं विनय पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

सुताः सर्वे तुल्याः, जगति हि यतस्ते भगवतः,
ततः प्रीत्या प्रेक्ष्या भुवि खलु समस्ता असुभृतः।
इतीमं सद्बोधं, ददत इह नित्यं हितकरं,
गुरून् श्रद्धानन्दान् सविनयमहं नौमि सततम् ।।41।।

भगवान् की सृष्टि के सब लोग भगवान् के पुत्र होने के कारण बराबर हैं, इसलिए समस्त प्राणधारियों के साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। इस प्रकार जो सदा लोगों को उत्तम हितकारी उपदेश देते थे, ऐसे गुरु श्रद्धानन्द जी को मैं विनयपूर्वक सदा नमस्कार करता हूँ।

भक्तश्रेष्ठः, परजनहिते, सर्वदा दत्तचित्तः,
श्रद्धां शुद्धां विमलहृदये, मातरं मन्यमानः।
शिक्षां हृद्यां, शुभगुरुकुले, सन्ददानो वटुभ्यः,
श्रद्धानन्दो गुरुजनवरः, सर्वदा वन्दनीयः ।।42।।

जो भक्त-श्रेष्ठ और परोपकारी थे, श्रद्धा को अपने हृदय में माता के समान मानते थे; हृदयग्राहिणी शिक्षा को जो उत्तम गुरुकुल में विद्यार्थियों को दिया करते थे, ऐसे गुरुवर स्वामी श्रद्धानन्द जी सर्वदा पूजनीय हैं।

निर्भीको यः सरलहृदयः, सत्यवाक् स्पष्टवक्ता,
देवे भक्तिं, परमविमलाम् आदधानोऽविकम्पाम्।
शुद्धिद्वारा, सकलमनुजान् दीक्षमाणः सुधर्मे,
श्रद्धानन्दो गुरुजनवरोऽसौ सदा वन्दनीयः ।।43।।

जो निर्भय सरल हृदय सत्यवादी और स्पष्टवक्ता थे, जो परमात्मा में निश्चल भक्ति रखते थे, शुद्धि द्वारा जो सब मनुष्यों को धर्म की दीक्षा देते थे, ऐसे गुरुवर स्वामी श्रद्धानन्द जी सर्वदा पूजनीय हैं।

दत्वा तन्वो, मुदितमनसा, यो बलिं धर्मवेदौ,

प्राप्तो लोके, ह्यमरपदवीं,त्यागशीलो महात्मा।
आसीत्सर्वं, विमलचरितं, यस्य सद्यज्ञरूपं,
श्रद्धानन्दो गुरुजनवरोऽसौ सदा वन्दनीयः।।44।।

जिन त्यागी महात्मा ने प्रसन्न मन से धर्मवेदी पर बलिदान दिया और अमर धर्मवीर की पदवी पाई, जिनका सारा पवित्र चरित्र यज्ञरूप था, ऐसे गुरुवर स्वामी श्रद्धानन्द जी पूजनीय हैं।

अन्यायं यः सकलमहसा, रोद्धुकामः प्रयेते,
सत्याहिंसाबलयुत इहान्यायिभिर्योद्धुकामः।
काराकष्टं वयसि चरमे, यः समोदं विषेहे,
श्रद्धानन्दो गुरुजनवरोऽसौ सदा वन्दनीयः।।45।।

जिन्होंने अन्याय को प्रबल तेज से रोकने का प्रयत्न किया, अहिंसा बल से अन्यायियों से युद्ध किया, जिन्होंने वृद्धावस्था में भी कारागृह के कष्टों को प्रसन्नता पूर्वक सहन किया, ऐसे गुरुवर स्वामी श्रद्धानन्द जी सदा पूजनीय हैं।

येते नित्यं, दलितपतितान्, मानवानुद्दिधीर्षुः,
पूतान् सर्वान् श्रुतिवचनतः, पावनः संचिकीर्षुः।
अस्पृश्यत्वं, समसममनाः, दूरयन् जातिभेदं,
श्रद्धानन्दो गुरुजनवरोऽसौ सदा वन्दनीयः।।46।।

जिन्होंने दलितों और पतितों को उठाने का सदा प्रयत्न किया, सब को वेद शास्त्रों के वचन सुना कर पवित्र करने का संकल्प किया, सब में समानता का भाव मन में धारण कर के अस्पृश्यता और जाति भेद को दूर किया, ऐसे गुरुवर स्वामी श्रद्धानन्द जी सदा वन्दनीय हैं।

देवेन्द्रं तं, भुवनपितरं, प्रार्थयामो महेश,
दद्याच्छक्तिं, यतिपथि सदा, निर्भयत्वेन गन्तुम्।
श्रद्धां शुद्धां, सकलमनुजानां मनस्स्वत्र दध्याद्,

भूयाद् येनाखिलजनगणादर्शभूतः समाजः॥47॥

हम उस देवेन्द्र जगत्पति परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें शक्ति दे जिससे उस यति के बताये हुए मार्ग पर निर्भयता से चल सकें। वह कृपालु सब मनुष्यों में शुद्ध श्रद्धा को धारण कराए, जिस से हमारा समाज सब मनुष्यों के लिए आदर्शपूर्ण हो।

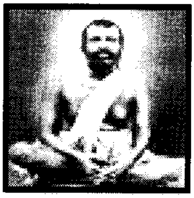

श्री रामकृष्णः परमहंसः
(1836-1886 ई.)

आसीद् यदीयं हृदयं विशुद्धं, देवेशभक्तौ सततं प्रसक्तम्।
दयार्द्रचित्तं विषये विरक्तं, श्री रामकृष्णं तमहं नमामि॥48॥

जिन का हृदय पवित्र और परमेश्वर की भक्ति में निरन्तर लगा हुआ था, ऐसे दयार्द्रचित्त और विषयों में विरक्त श्री रामकृष्ण परमहंस को मैं नमस्कार करता हूँ।

आलोकयन् ब्रह्म समस्तलोके, न जातिभेदं न मतादिभेदं।
योऽचिन्तयद् ब्रह्मपरो महात्मा, श्री रामकृष्णं तमहं नमामि॥49॥

सारे संसार में ब्रह्म के दर्शन करते हुए जिन्होंने जाति व मत आदि के भेद की पर्वाह नहीं की, जिस महात्मा ने ब्रह्मपरायण हो कर सदा चिन्तन किया, ऐसे श्री रामकृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ।

सेवा परोधर्म इति स्वशिष्यान्, निर्दिश्य सेवाव्रतिनो व्यधत्त।
यो बालवत् स्वार्जवमूर्तिरासीत्, श्री रामकृष्णं तमहं नमामि॥50॥

सेवा परमधर्म है ऐसा अपने शिष्यों को उपदेश देकर जिन्होंने

उनको सेवाव्रती बनाया, जो बालकों की तरह सरलता की मूर्ति थे, ऐसे श्री रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

माता परानन्दमयी दयालुस्तस्या अवाप्त्यै परमातुरः सन्।
तां निष्ठयावाप तपः प्रभावात्, श्री रामकृष्णं तमहं नमामि।।51।।

जगन्माता परम आनन्दमयी और दयालु है उस की प्राप्ति के लिए अत्यन्त आतुर हो कर तप के प्रभाव से बड़ी निष्ठा के साथ उसे जिन्होंने प्राप्त किया, उन श्री रामकृष्ण परमहंस को मैं नमस्कार करता हूँ।

अध्यात्मविज्ञानमृते न शान्तिः, सन्देशमेतं ददतं प्रशस्तम्।
समाधिमग्नं सरलं सुदान्तं, श्री रामकृष्णं तमहं नमामि।।52।।

अध्यात्मज्ञान के बिना शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती इस अत्यन्त प्रशंसनीय सन्देश को देते हुए, समाधिमग्न, सरल, मन पर विजय प्राप्त करने वाले श्री रामकृष्ण परमहंस को मैं नमस्कार करता हूँ।

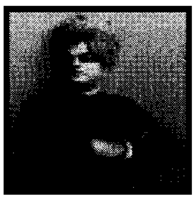

सुवाग्मी स्वामी विवेकानन्दः
(1863-1902 ई०)

अनेके तच्छिष्याः, प्रथितयशसः सर्वभुवने,
विवेकानन्दोऽयं, प्रथिततम आसीत् सुपठितः।
विदेशे गत्वा यो, दिशिदिशि च वेदान्तमदिशत्,

स लेभे सम्मानं, निखिलभुवि वाग्मी सुविदितः।।53।।

श्री रामकृष्ण के सारे संसार में प्रसिद्ध अनेक शिष्य थे जिन में से अधिक प्रख्यात और सुशिक्षित स्वामी विवेकानन्द हुए, जिन्होंने विदेश जाकर सब दिशाओं में वेदान्त का उपदेश दिया। अत्यन्त प्रभावशाली और प्रसिद्ध होकर उन्होंने सारे संसार में सम्मान प्राप्त किया।

गुरोर्नाम्ना सङ्घं, दिशिदिशि समस्थापयदसौ,
विवेकानन्दो वै, जनधनचयेऽतीव निपुणः।
शुभं कारंकारं, विधनजनसाहायकरणं,
बभूवुस्तच्छिष्याः प्रथितयशसः कर्मपटवः।।54।।

उन्होंने अपने गुरु श्री रामकृष्ण जी के नाम पर प्रत्येक दिशा में संघ (श्री रामकृष्ण मिशन) की स्थापना की। स्वामी विवेकानन्द लोगों और धन के इकट्ठा करने में अत्यन्त निपुण थे। निर्धन लोगों की सहायता के शुभ कार्य को करके उनके कर्मनिपुण शिष्य अत्यन्त यशस्वी बन गये।

ब्रह्मनिष्ठो महात्मा रामतीर्थः

(1873-1906 ई०)

पञ्चाम्बुवासी युवतीर्थरामः आसीदुपाध्यायपदे नियुक्तः।
विहाय गेहं स गतो विरक्तः तपश्च तेपे गिरिगह्वरेषु।।55।।

पंजाब निवासी युवक रामतीर्थ एम. ए.(लाहौर के सरकारी कालेज में गणित के) प्रोफेसर थे। वे वैराग्ययुक्त होकर घर छोड़कर चले गये और उन्होंने पहाड़ों की गुफाओं में तप किया।

पातालदेशं स ततो जगाम वेदान्तसन्देशहरो बभूव।
त्यागी तपस्वी स समाससाद कीर्तिं प्रतिष्ठाममलां महात्मा।।56।।

वहाँ से वे अमरीका चले गये और वेदान्त का सन्देश देने वाले बन गये। उन महात्मा ने त्यागी, तपस्पी के रूप में निर्मल यश और कीर्ति को प्राप्त किया।

ब्रह्मैकनिष्ठः सरलो मनीषी पपौ सुदिव्यां स सुधामजस्रम्।
चकार काव्यं सुमनोरमं तद् बुधान् यदानन्दयतीह गीतम्।।57।।

एक ब्रह्म में निष्ठा को धारण करते हुए उन सरल बुद्धिमान् स्वामी रामतीर्थ ने निरन्तर अतिदिव्य अमृत का पान किया और अत्यन्त सुन्दर कविताएं कीं जिनके गान से बुद्धिमानों को बड़ा आनन्द मिलता है।

वसन्नरण्ये टिहरीप्रदेशे देवे नितान्तं रममाण इत्थम्।
सुरापगायां स तरन् निमग्नो लीनः परब्रह्मणि तत्त्वदर्शी ।।58।।

टिहरी राज्य के एक वन में निवास करते और इस प्रकार परमेश्वर में रमण करते हुए वे तत्त्वदर्शी स्वामी जी एक बार तैरते हुए गङ्गा नदी में डूब गये।

तं सत्यसन्धं सरलं मरालं * दम्भेन लोभेन मदेन शून्यम्।
ब्रह्मैव सर्वत्र विलोकमानं श्री रामतीर्थं विनतो नमामि ।।59।।

उन सत्य प्रतिज्ञ, सरल स्वभाव, राजहंस के समान गुण- ग्राही, दम्भ, लोभ और अभिमान से शून्य, सर्वत्र ब्रह्म का ही दर्शन करने वाले श्री स्वामी रामतीर्थ जी को मैं नम्रभाव से नमस्कार करता हूँ।

*** मरालः- राजहंस इव सारग्रहीता।**

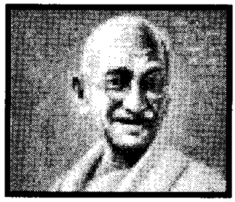

महात्मा मोहनदास गांधी

(२अक्टुबर १८६९-३० जनवरी १९४८ ई०)

सत्ये रतोऽहर्निशमत्र योऽभूत् परोपकारेऽर्पितचित्तवित्तः।
प्राणिष्वहिंसाव्रतभृत् सुवृत्तः गाँधीमहात्मा सकलैः स वन्द्यः।।60।।

जो दिन रात सत्य में तप्तर रहे, परोपकार में जिन्होंने अपने तन, मन, धन को अर्पित कर दिया, प्राणिमात्र में अहिंसा व्रती रहे, ऐसे पूर्ण सदाचारी महात्मा गाँधी सब के वन्दनीय हैं।

सत्याग्रहस्यायुधमप्यमोघं प्राचारयद् यो भुवि शुद्धचेताः।
तेनाद्भुतान्दोलनकारिवर्यः, गाँधी महात्मा सकलैः स वन्द्यः।।61।।

जिन्होंने शुद्ध चित्त होकर संसार में व्यर्थ न जाने वाले अहिंसा शस्त्र का प्रचार किया, इस के द्वारा अद्भुत आन्दोलन करने वालों में श्रेष्ठ महात्मा गाँधी सब के पूजनीय हैं।

देशं स्वतन्त्रं सुखिनं विधातुं, येते यती यस्तपसार्जवेन।
साफल्यमप्याप हरेर्दयातः, गाँधी महात्मा सकलैः स वन्द्यः।।62।।

देश को अपने तप और सरलता द्वारा स्वतन्त्र और सुखी बनाने के लिये जिन्होंने निरन्तर यत्न किया और परमात्मा की कृपा से सफलता भी पाई, ऐसे महात्मा गाँधी सब के पूजनीय हैं।

सारल्यमूर्तिर्दययार्द्रचित्तो दरिद्रदीनार्तदशामवेक्ष्य।
दीनोद्धृतौ यो निरतस्तपस्वी गाँधीमहात्मा सकलैःस वन्द्यः ।।63।।

जो सरलता की मूर्ति और दयालु थे। निर्धनों की दीन और दु:खित दशा को देख कर जो तपस्वी उन के उद्धार के लिये सदा तत्पर रहे ऐसे महात्मा गाँधी सब के पूजनीय हैं।

सर्वे समाना जगदीशपुत्राः, न तत्र भेदोऽस्त्युचितस्तु जात्या।
इत्यादि भावान् प्रदिशन्नुदारो, गाँधी महात्मा सकलैः स वन्द्यः॥64॥

परमेश्वर के पुत्र होने के कारण सब समान हैं। उन में जन्म जाति के भेद करना उचित नहीं है। इत्यादि भावों का उपदेश करते हुए उदारचित्त महात्मा गाँधी सब के लिए वन्दनीय हैं।

यः कर्मयोगी स्थितधीरिवाभूत्, प्रीतिं समस्तेषु सदा दधानः।
ऐक्यं तथानेतुमिहेहमानो, गाँधी महात्मा सकलैः स वन्द्यः॥65॥

जो कर्मयोगी सब में प्रेम को धारण करते हुए स्थित प्रज्ञ के समान थे तथा जो सब में एकता लाने की इच्छा रखते थे, ऐसे महात्मा गाँधी सब के लिये वन्दनीय हैं।

ऐक्यस्य वेद्यां बलिदानहेतोः स्वराज्यहेतोरमराभिधानः।
परेशभक्तो विनतः सुधीरो, गाँधी महात्मा सकलैः स वन्द्यः॥66॥

एकता की वेदी पर बलिदान तथा स्वराज्य की प्राप्ति के कारण जिन का नाम अमर रहेगा ऐसे परमेश्वर भक्त, विनीत, अति उत्तम ध ैर्यधारी महात्मा गाँधी सब के लिये वन्दनीय हैं।

वयं विनीता नृमणिं नमामः,सत्यादिकांस्तस्य गुणान् धरामः।
धर्मं प्रशान्ताः प्रमुदाचरामः, दीनान् दरिद्रांश्च सदोद्धरामः ॥67॥

हम नम्र होकर उन मनुष्यों में मणि के समान महात्मा गाँधी को नमस्कार करते हैं, उन के सत्यादि गुणों को धारण करते हैं, अत्यन्त शान्त होकर प्रसन्नता से धर्म का आचरण करते हैं और दीनों तथा निर्धनों का सदा उद्धार करते हैं।

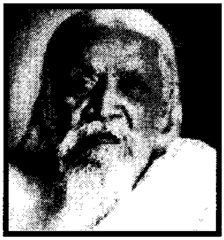

समन्वययोग्यरविन्दः

(१५ अगस्त १८७२-५ दिस. १९५० ई०)

तपसा सुविवेकपूर्वकं, स्थितबुद्धेः पदमास्थितं परम्।
अरविन्दमुनेर्महामतेः, स्मरणं स्फूर्तिविधायकं न किम्?।।68।।

तप से उत्तम विवेक पूर्वक स्थितप्रज्ञ के परमपद पर स्थित, महाबुद्धिमान् श्री अरविन्द मुनि का स्मरण क्या स्फूर्तिदायक नहीं?

जगतीह समन्वयात्मकं, किल योगं प्रदिशन्तमुत्तमम्।
अरविन्दमुनेर्महामतेः, स्मरणं स्फूर्तिविधायकं न किम्?।।69।।

जगत् में समन्वयात्मक उत्तम योग को निश्चयपूर्वक प्रदर्शित करने वाले महामति श्री अरविन्द मुनि का स्मरण क्या स्फूर्तिदायक नहीं हैं?

सकलस्य हिताय सन्ततं, जगतो योगपथोपदेशिनः।
अरविन्दमुनेर्महामतेः, स्मरणं स्फूर्तिविधायकं न किम्?।।70।।

समस्त संसार के हित के लिये योगमार्ग का निरन्तर उपदेश करने वाले महामुनि श्री अरविन्द मुनि का स्मरण क्या स्फूर्तिदायक नहीं है?

जगतो गुरुर्भारतं भवेदिति, भावं निदधानमद्भुतम्।
अरविन्दमुनेर्महामतेः, स्मरणं स्फूर्तिविधायकं न किम्?।।71।।

भारत जगत् का गुरु बने इस अद्भुत भाव को रखने वाले महामति श्री अरविन्द मुनि का स्मरण क्या स्फूर्तिदायक नहीं है?

जननीं सुखशान्तिदायिनीं, हृदयेऽर्चन्तमहर्निशं मुदा।
प्रभुराज्यविवर्धने रतम्, अरविन्दं सुमतिं नमाम्यहम्।।72।।

सुख शान्ति देने वाली जगन्माता की दिन-रात प्रसन्नतापूर्वक हृदय में पूजा करने वाले और भगवान् के राज्य को ही बढ़ाने (आस्तिकता का प्रसार करने) में तत्पर, उत्तम बुद्धि सम्पन्न, श्री अरविन्द जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

अदितिः सकलैर्जनैः सदा, समुपास्या ध्रुवशान्तिलब्धये।
इति नास्तिकलोकमादिशन्, अरविन्दः सुमतिः सदा जयेत्।।73।।

स्थिर शान्ति की प्राप्ति के लिये सब मनुष्यों को अविनाशिनी जगन्माता की सदा उपासना करनी चाहिये। इस प्रकार नास्तिकों को भी आदेश देने वाले उत्तम बुद्धिमान् श्री अरविन्द जी की जय हो।

समतां सकलार्पणं दिशन्, ध्रुवसिद्धेः परमं हि साधनम्।
अरविन्दमिव स्थितं पयस्यरविन्दं सुमतिं नमाम्यहम् ।।74।।

समता और भगवान् के प्रति सर्वार्पणा को स्थिरसिद्धि का परम साधन बतलाने वाले, जल में कमल के समान लोक में अनासक्त भाव से स्थित, उत्तम बुद्धिमान् श्री अरविन्द जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

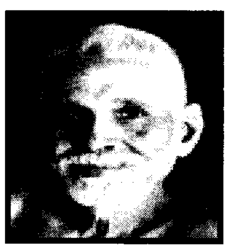

रमणमहर्षिः

(३०दिस. १८७९-१४ अप्रैल १९५० ई.)

ब्राह्मीस्थितौ सन्ततवर्तमानं कौपीनमात्रं वसनं दधानम्।
अध्यात्मसन्देशमिहाददानं तं त्यागमूर्तिं रमणं नमामि ।।75।।

निरन्तर ब्राह्मीस्थिति में वर्तमान, कौपीन (लङ्गोट) मात्र वस्त्र को

धारण करने वाले, अध्यात्म सन्देश को संसार में चारों ओर देने वाले त्याग मूर्ति रमण जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

महर्षिनाम्ना प्रथितं पृथिव्यां पाश्चात्यविज्ञानपि बोधयन्तम्।
तपस्विनं साधु समाधिनिष्ठं तं त्यागमूर्तिं रमणं नमामि ।।76।।

पृथिवी पर महर्षि के नाम से प्रसिद्ध, पाश्चात्य विद्वानों को भी ज्ञान देते हुए भली-भांति समाधिनिष्ठ तपस्वी, त्यागमूर्ति रमण जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

विज्ञेय आत्मा विबुधैः समस्तैर्ज्ञानादृते जातु न बन्धमुक्तिः।
इत्येवमार्षं ददतं सुबोधं तं त्यागमूर्तिं रमणं नमामि ।।77।।

सब बुद्धिमानों को आत्मा का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिये। ज्ञान के बिना कभी बन्धन से मुक्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार के आर्ष उत्तम बोध को देने वाले त्याग मूर्ति रमण जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

यद् दर्शनादेव जना अनेके प्रपेदिरे शान्तिमनुग्रमूर्तेः।
पॉल् ब्रन्टनाद्या* भुवि यस्य शिष्याः, तं त्यागमूर्तिं रमणं नमामि।।78।।

जिस सौम्यमूर्ति के दर्शन से ही अनेक लोग शान्ति को प्राप्त करते थे। (इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध पत्रकार) पॉल ब्रण्टन् आदि जिनके प्रसिद्ध शिष्य थे, उन त्यागमूर्ति रमण जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

इतरे महात्मानः

*** एभ्योऽतिरिक्ता अपि येऽपि केचिज्जाता महात्मान इहाप्रमत्ताः।**
परोपकारे ऽर्पितचित्तवित्ताः, नमामि सर्वान् परमेशभक्तान् ।।79।।

इन के अतिरिक्त भी जो प्रमाद रहित, परोपकार में अपने तन, मन, धन, को अर्पित करने वाले परमेश्वरभक्त महात्मा (चैतन्य गौराङ्ग, समर्थ

*** पॉल ब्रन्टनः- इङ्गलैण्डदेशस्य सुप्रख्यात एकः पत्रकारो रमणमहर्षेरन्तेवासी महर्षिसन्देशविषयेऽनेकपुस्तकप्रणेता।।**

***गौराङ्गचैतन्यसमर्थरामदाससाधुतुकारामज्ञानेश्वरनामदेवरविदासप्रभृतयः।**

रामदास, सन्त तुकाराम, ज्ञानेश्वर, नामदेव, रविदास इत्यादि) हुए हैं, उन सब को मैं नमस्कार करता हूँ।

न पूर्णता क्वाप्यभिलक्ष्यतेऽत्र, पूर्णः प्रभुः केवलमेक एव।
तथापि सन्तो जलधिं तरन्तः सन्तारयन्तो मनुजान् नमस्याः।।80।।

इस संसार में कहीं पूर्णता दिखाई नहीं देती। पूर्ण तो केवल एक परमेश्वर ही है। तो भी जो साधु सन्त दुःख समुद्र को स्वयं पारकर अन्य मनुष्यों को भी पार कराने का यत्न करते हैं वे सब नमस्कार करने योग्य हैं।

एषां समेषां वचनेषु यद् यद् वेदाविरुद्धं मतियुक्तियुक्तम्।
ग्राह्यं तदेवेह विहाय फल्गु भाव्यं बुधैरत्र * मरालतुल्यैः।। 81।।

इन सब के वचनों में जो-जो वचन वेद के अविरुद्ध और बुद्धि संगत तथा युक्ति-युक्त हैं, असार का त्याग कर के उन को ग्रहण कर लेना चाहिये। इस संसार में बुद्धिमानों को हंस के समान होना चाहिये जो जल को पृथक् कर के दूध ले लेता है।

इति महात्मवर्गकीर्तनं नाम द्वितीयं काण्डं समाप्तम्।

अथ तृतीयं काण्डम्

विश्रुतविपश्चिद् वर्गः

कविमूर्धन्यो वाल्मीकिः

यो नीचोऽपि मुनित्वमाप तपसा स्वाध्यायसत्सङ्गतः,
काव्यं येन विनिर्मितं सुमधुरं रामायणाख्यं परम्।

***मरालो हंसो यद् विषय इयं प्रसिद्धिः'हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः'**

यस्यासेतुहिमाचलं सुकृतिनः, कीर्तिः सिता राजते,
वाल्मीकिं मुनिपुङ्गवं प्रमुदिताः, वन्दामहे तं वयम् ।।1।।

जिस ने नीच होकर भी सत्सङ्ग स्वाध्याय और तप से मुनित्व प्राप्त किया और फिर अत्यन्त मधुर रामायण नामक काव्य की रचना की, जिस पुण्यात्मा की विमल कीर्ति हिमालय से रामेश्वर तक विराजमान है, उस मुनिवर वाल्मीकि को हम प्रसन्न होकर नमस्कार करते हैं।

श्री रामस्य चरित्रमेव विमलं, सर्वत्र शिक्षाप्रदं,
तत्पद्यैरतिमोहनैः सुललितैर्योऽवर्णयत् सन्मतिः।
यावच्चन्द्रदिवाकरावमरवद्, रामायणं यत्कृतं,
वाल्मीकिं कविपुङ्गवं प्रमुदिता, वन्दामहे तं वयम्।।2।।

श्री राम का चरित्र ही अत्यन्त पवित्र और शिक्षाप्रद है। उसका अति सुललित मनोहर श्लोकों द्वारा वर्णन किया, जिस द्वारा निर्मित रामायण काव्य जब तक सूर्य, चन्द्र विद्यमान हैं तब तक अमर रहेगा, उस कवि शिरोमणि वाल्मीकि को हम प्रसन्न होकर नमस्कार करते हैं।

महामुनिर्वेदव्यासः

यो वेदांस्तपसाध्यगीष्ट सकलान्, श्रद्धान्वितेनात्मना,
तेषामुत्तमतत्त्वविद् विवृतवान्, यो ब्रह्मसूत्रेषु वै।
यो धर्मार्थसुकाममोक्षकथनं, चक्रे महाभारते,

वेदव्यासमुनिं सुकोविदवरं, वन्दामहे तं वयम्।।3।।

जिन मुनिवर ने श्रद्धायुक्त आत्मा से तप के साथ सब वेदों का अध्ययन किया, उन के उत्तम तत्त्व को जान कर ब्रह्मसूत्रों में उन तत्त्वों की व्याख्या की, जिन्होंने महाभारत में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का निरूपण किया उन विद्वानों में श्रेष्ठ मुनिवर वेदव्यास जी हम नमस्कार करते हैं।

भाष्यं यो हृदयङ्गमं च विदधे, सद्योगविज्ञापकम्,
आसीद् यो निगमागमेषु निपुणो नूनं सुविद्योदधिः।
ज्ञानं यस्य विलोक्य सर्वविषयं, मुग्धा बुधा आसते,
वेदव्यासमुनिं सुकोविदवरं वन्दामहे तं वयम्।।4।।

उत्तम योग के तत्त्व को बतलाने वाले भाष्य को जिन्होंने योगदर्शन पर बनाया, जो उत्तम विद्या के समुद्र, वेद शास्त्रों में पूर्ण निपुण थे, जिनके सब विषयों के ज्ञान को देखकर विद्वान् लोग भी चकित हो जाते हैं, उन विद्वानों में श्रेष्ठ मुनिवर वेदव्यास जी को हम नमस्कार करते हैं।

आधुनिककविशिरोमणिकालिदासः

यस्योपमा मन्यत एव लोके, सर्वोत्तमा मान्यमनो हरन्ती।
समन्वते यं कविसार्वभौमं, स कालिदासो भुवने प्रसिद्धः।।5।।

जिस की उपमा को सब से उत्तम और मान्य विद्वानों के मन का हरण करने वाली माना जाता है, जिस को विद्वान् लोग कवि चक्रवर्ती मानते हैं ऐसा कालिदास सारे संसार में प्रसिद्ध है।

शाकुन्तलं यस्य विलोक्य गोथे, शार्मण्यविद्वान् मुदितश्चुकूर्दे।
यन्मेघदूतं हृदयाभिरामं, स कालिदासो भुवने प्रसिद्धः।।6।।

जिस के अभिज्ञानशाकुन्तल नामक अद्भुत नाटक को देखकर जर्मनी देश का विद्वान् गोथे प्रसन्न होकर नाचने लग गया। जिस का मेघदूत भी हृदय को सुन्दर लगने वाला है वह कालिदास संसार में प्रसिद्ध है।

मूर्खोऽपि पूर्वं तपसा श्रमेण, कविप्रकाण्डो भुवि यो बभूव।
विद्योत्तमेत्याख्यसुयोग्यभार्याप्रोत्साहितोऽजायत लब्धकीर्तिः।।7।।

पहले मूर्ख होकर भी जो तप और परिश्रम से संसार में कविश्रेष्ठ बन गया। विद्योत्तमा नामक सुयोग्य पत्नि से प्रोत्साहित होकर जो कीर्तिशाली बना।

न केवलं विक्रमभूपरत्नं, परं सुकाव्येन कवीन्द्ररत्नम्।
विराजमानं कवितासुपत्न्या, श्रीकालिदासं मुदिता नमामः।।8।।

न केवल महाराज विक्रमादित्य की ही सभा का रत्न किन्तु उत्तम कविता के कारण कविकुल शिरोमणि बन गया। कविता कामिनी के साथ शोभायमान, ऐसे श्री कालिदास को हम प्रसन्न होकर नमस्कार करते हैं।

भासभवभूतिप्रमुखाः कवयः

श्री कालिदासभवभूतिसुभासबाणश्रीहर्षभर्तृहरिभारविभोजभूपाः।
श्रीदण्डिमाघसहिताः कवयस्तथान्ये,यत्कारणात्सुललिता सुरभारतीयम्।।9।।

श्री कालिदास, भवभूति, भारवि, भास, बाण, श्रीहर्ष, भर्तृहरि, महाराज भोज, दण्डि, माघ इत्यादि सैकड़ों संस्कृत के उत्तम कवि हुये हैं, जिनके कारण यह देववाणी बड़ी ललित बनी हुई है।

एतांस्तथान्यसुकवीन् मुदिता नमामः,तत्संचितां ललितकाव्यसुधां पिबामः।
गीर्वाणवाक्प्रसरणे निरता भवामः सन्तापपापमखिलं, नितरां हरामः।।10।।

हम प्रसन्न होकर इन तथा अन्य उत्तम कवियों को नमस्कार करते हैं, उनके द्वारा संचित ललित काव्यामृत का पान करते हैं। संस्कृत के प्रचार में हम निरन्तर तत्पर होते हैं और सर्वत्र फैले हुए सारे पाप ताप को दूर करते हैं।

महाप्राज्ञः श्रीशङ्कराचार्यः
(२२००-२१६८ वि. पू.)

नास्तिक्यमालोक्य ततं समस्ते, लोकेऽप्रशस्तं जिनबुद्धनाम्ना।
तद्वारणायाग्रसरो य आसीत्, तं शङ्कराचार्यमहं नमामि।।11।।

सारे संसार में जिन और बुद्ध के नाम से गर्हित नास्तिक मत को फैला हुआ देखकर उसके निवारण के लिये जो आगे बढ़े, ऐसे श्री शङ्कराचार्य जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

अधीत्य शास्त्राणि सुबाल्यकाले, विज्ञाय तत्त्वं निगमागमानाम्।
धर्मोद्दिधीर्षुर्विचचार योऽसौ, तं शङ्कराचार्यमहं नमामि।।12।।

बहुत छोटी आयु में ही वेदों को पढ़कर और वेद-शास्त्रों के तत्त्वों को जानकर, धर्म के उद्धार करने की इच्छा से जो पृथिवी पर विचरण करते रहे, ऐस ही शंङ्कराचार्य जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

मूर्धन्यभूतो भुवि तार्किकेषु, ह्यद्यापि यो मन्यत एव विप्रैः।
परास्तनास्तिक्यमतं सुधीन्द्रं, तं शङ्कराचार्यमहं नमामि।।13।।

आज भी जिन्हें बहुत से बुद्धिमान् तार्किक शिरोमणि मानते हैं, सब नास्तिकों को जिन्होंने अपने तर्क बल से परास्त कर दिया ऐसे श्री शङ्काराचार्य जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

यो ब्रह्मसूत्रोपनिषत्सुभाष्यं, निर्माय सर्वांश्चकितीचकार।
मेधाविनं तं परमात्मनिष्ठं, श्रीशंङ्कराचार्यमहं नमामि।।14।।

जिन्होंने वेदान्त सूत्रों और उपनिषदों का उत्तम भाष्य बनाकर सबको

चकित कर दिया, ऐसे अपने समय के बुद्धिमानों में श्रेष्ठ परमात्मानिष्ठ श्री शंङ्कराचार्य जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

धर्मप्रचाराय समस्तदिक्षु, मठाननेकान् किल कर्मयोगी।
यो निर्ममे शुद्धमना मनीषी, तं शङ्कराचार्यमहं नमामि।।15।।

जिस शुद्ध चित्त कर्मयोगी बुद्धिमान् ने धर्म के प्रचार के लिये सारी दिशाओं में मठों की स्थापना की, उन श्री शंङ्कराचार्य जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

व्यापादितोऽनीश्वरवादिभिर्यो, विषं प्रदायच्छलकौशलेन।
तथापि कीर्त्या ह्यमरं प्रशान्तं, श्रीशङ्कराचार्य नमामि।।16।।

जिन संयमी को अनीश्वरवादी नास्तिकों ने विष देकर छल से मार दिया तो भी अपनी कीर्ति के कारण अमर, प्रशान्त श्री स्वामी शङ्कराचार्य जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

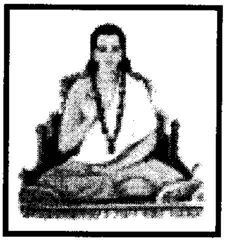

सुभक्तः श्रीरामानुजाचार्यः

(१०१७-११३७ ई०)

जातो ऽपि यो विप्रकुले ऽभिमानं, त्यक्त्वा समान् धर्ममुपादिदेश।
हितं जनानां हृदये दधानं, रामानुजाचार्यमहं नमामि।।17।।

जिन्होंने ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर भी अभिमान का परित्याग करके सब को धर्म का उपदेश दिया, ऐसे हृदय में सब लोगों के हित को धारण करने वाले श्री रामानुजाचार्य जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

स्वर्यान्तु लोका यदि मन्त्रदीक्षाहेतोरहं चेन्नरकं व्रजेयम्।
न तत्र चिन्तेति मुदा वदन्तं, रामानुजाचार्यमहं नमामि।।18।।

यदि मन्त्र–दीक्षा देने से लोग स्वर्ग को जाएं और मैं नरक को जाऊँ तो भी मुझे इस की कोई चिन्ता नहीं। इस प्रकार प्रसन्नता पुर्वक कथन करते हुए श्री रामानुजाचार्य को मैं नमस्कार करता हूँ।

यो विष्णुभक्तः स हि पूजनीयो, जातेर्विचारो नहि जातु युक्तः।
औदार्यमित्थं प्रतिपादयन्तं, रामानुजाचार्यमहं नमामि।।19।।

जो विष्णु (परमेश्वर) का भक्त है वह पूजनीय है। इस विषय में जाति का विचार नहीं है, इस प्रकार की उदारता का प्रतिपादन करने वाले श्री रामानुजाचार्य को मैं नमस्कार करता हूँ।

ये ह्यन्त्यजा इत्यभिधानवाच्याः, तेभ्योऽपि दीक्षामददादुदारः।
अस्पृश्यतावारणदत्तचित्तं, रामानुजाचार्यमहं नमामि।।20।।

जिन को अन्त्यज माना जाता है उन को भी जिस उदार महानुभाव ने दीक्षा दी, इस प्रकार अस्पृश्यता वा अछूतपन हटाने में जिन का चित्त लगा हुआ था, ऐसे भी रामानुजाचार्य को मैं नमस्कार करता हूँ।

भक्तियोगी श्रीमध्वाचार्यः
(स्वामी आनन्दतीर्थः)
(1199-1271 ई०)

ब्रह्मैव सर्वं न ततोऽस्ति पापं,पुण्यं न किञ्चिज्जगदेव मिथ्या।
इत्यादिनास्तिक्यमवेक्ष्य खिन्नम्, आनन्दतीर्थं तमहं नमामि।।21।।

सब कुछ ब्रह्म है, इस लिये पाप-पुण्य कुछ नहीं, संसार मिथ्या है इत्यादि रूप से नास्तिकता को फैलता हुआ देखकर दुःखित श्री आनन्दतीर्थ को मैं नमस्कार करता हूँ।

विष्णुः समस्तस्य भवस्य कर्ता सत्यस्य कार्यं जगदस्ति सत्यम्।
जीवेशभेदं ध्रुवमादिशन्तम्, आनन्दतीर्थं विबुधं नमामि।।22।।

विष्णुः (सर्वव्यापक परमेश्वर) इस सारे जगत् का कर्ता है, उस सत्यस्वरूप का बनाया यह जगत् भी सत्य वा यथार्थ है, जीव और परमेश्वर में वास्तविक भेद है इन तत्त्वों का उपदेश करने वाले श्री आनन्दतीर्थ को मैं नमस्कार करता हूँ।

***वेदाः प्रमाणं परमात्मजीवभेदं तु ते व्यक्तमुदाहरन्ति।**
मायावितर्के खलु तर्कतर्कुं युञ्जानमानन्दमुनिं नमामि।।23।।

1. द्वासुपर्णा ...अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति (ऋ० 1. 164. 20)। न तं विदाथ-अन्यद् युष्माकमन्तरं बभूव(यजु० 17. 31)इत्यादि मन्त्र-द्वारा।

वेद स्वतः प्रमाण हैं और वे स्पष्टतया जीव और ईश्वर के भेद का

प्रतिपादन करते हैं इस प्रकार मायावादियों के तर्क में अपने तर्क रूप चाकू का प्रयोग करने वाले श्री आनन्दतीर्थ को मैं नमस्कार करता हूँ।

यद् युक्तिजातं प्रबलं विवादशैली परास्तप्रतिवादिवर्गा।
देवेशभक्तिं प्रतिपादयन्तम्, आनन्दतीर्थं विबुधं नमामि।।24।।

जिनकी युक्तियां बड़ी प्रबल थीं और जिनकी विचार शैली विरोधियों को परास्त करने वाली थी, ऐसे परमात्मा के प्रति भक्तिभाव का प्रतिपादन करने वाले श्री आनन्दतीर्थ को मैं नमस्कार करता हूँ।

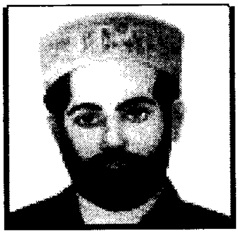

मेधावी गुरुदत्तः

(26 अप्रैल 1864-18 मार्च 1890 ई0)

ऋषेर्दयानन्दयतेः प्रसादात्, आस्तिक्यरत्नं ननु येन लब्धम्।
विद्वद्वरेण्यं प्रतिभान्वितं तं, मुनिं नमामो गुरुदत्तसंज्ञम्।। 25।।

यतिवर ऋषि दयानन्द की कृपा से जिन्होंने आस्तिकता- रूपी रत्न को प्राप्त किया, उन विद्वानों में श्रेष्ठ, प्रतिभाशाली मुनि गुरूदत्त जी को हम नमस्कार करते हैं।

ऋषेः प्रयाणस्य विलोक्य दृश्यं, यस्यात्मवह्निर्ज्वलितो बभूव।
विहाय नास्तिक्यमलं विशुद्धं, मुनिं नमामो गुरुदत्तसंज्ञम्।।26।।

ऋषि दयानन्द की मृत्यु के दृश्य को देखकर(विष का प्रभाव होते हुए भी उन की प्रसन्न मुद्रा और तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो, इत्यादि अन्तिम शब्दों का प्रसन्नता पूर्वक उच्चारण)जिन की आत्मिक

अग्नि प्रज्वलित हो गई और इस प्रकार नास्तिकता की मैल को छोड़ कर सर्वथा पवित्र बने हुए उन मुनि गुरुदत्त जी को हम नमस्कार करते हैं ।

वेदादिशास्त्राध्ययने प्रसक्तं, धर्मप्रसारे च सदानुरक्तम्।
विवेकयुक्तं विषयेष्वसक्तं, मुनिं नमामो गुरुदत्तसंज्ञम्।।27।।

वेदादि शास्त्रों के अध्ययन में तत्पर, धर्म के प्रचार में सदा प्रेम रखने वाले, विवेक से युक्त, लौकिक विषयों में अनासक्त मुनि गुरुदत्त जी को हम नमस्कार करते हैं।

लिलेख यः शोभनपुस्तकानि, प्रसारकामोऽमलवेदधर्मम्।
चकार मुग्धान् सुधियोऽपि बुद्ध्या, मुनिं नमामो गुरुदत्तसंज्ञम्।।28।।

जिन्होंने निर्मल वैदिक धर्म के प्रचार की इच्छा से अनेक उत्तम पुस्तकें लिखीं और अपनी अद्भुत बुद्धि से बड़े-बड़े बुद्धिमानों को भी मुग्ध कर दिया, ऐसे मुनि गुरुदत्त जी को हम नमस्कार करते हैं।

आर्षप्रणाल्या वितताऽत्र शिक्षा, भवेदतः स्थापयितुं प्रयेते।
संस्थां दयानन्दयतेः सुनाम्ना, मुनिं नमामो गुरुदत्तसंज्ञम्।।29।।

आर्ष प्रणाली से शिक्षा का प्रसार हो इस उद्देश्य से यतिवर ऋषि दयानन्द जी के उत्तम नाम से जिन्होंने (दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज नामक) संस्था की स्थापना का प्रयत्न किया, ऐसे मुनि गुरुदत्त जी को हम नमस्कार करते हैं।

स्तुत्यं महर्षिचरितं हृदये लिलेख,तस्याद्भुतांश्च सुगुणान् स्वयमादध ार।
प्राणाञ्जहौ न परमामिषमाद मोहात्, तं नौम्यहं बुधवरं गुरुदत्तविप्रम्।।30।।

प्रशंसनीय महर्षि दयानन्द जी के चरित्र को जिन्होंने हृदय पटल पर लिखा और उन के उत्तम गुणों को अपने में धारण किया, प्राणों का परित्याग कर दिया किन्तु मोहवश मांस का (डाक्टरों के कहने पर भी) सेवन नहीं किया, उन बुद्धिमानों में श्रेष्ठ सच्चे ब्राह्मण पण्डित गुरुदत्त जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

यः पत्रिकां वैदिकमैगजीननाम्नीं प्रशस्तामतिलब्धकीर्तिः।
सम्पादयामास विशुद्धचेतास्तं पण्डितं सादरमानतोऽस्मि।।31।।

जिन विशुद्ध-चित्त अत्यन्त कीर्तिशाली विद्वान् ने वैदिक मैगजीन नामक उत्तम अंग्रेजी पत्रिका का सम्पादन किया, उन पण्डित गुरुदत्त जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

वैज्ञानिकमूर्धन्यो जगदीशचन्द्रवसुः
(30 मई 1858-23 नवम्बर 1937 ई०)

वैज्ञानिको यो जगति प्रसिद्धो, देवे परां भक्तिमिहादधानः।
वृक्षेषु सर्वेष्वपि जीवसत्तां, संसाध्य सर्वांश्चकितीचकार।।32।।

जो संसार में प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे, साथ ही जिन की परमेश्वर में बड़ी भक्ति थी वृक्षों में जीव सत्ता को सिद्ध कर के जिन्होंने सब को चकित कर दिया।

कष्टानि सेहेऽति भयङ्कराणि, किन्त्वात्मसम्मानमिहात्यजन्न।
वैज्ञानिकाग्र्यं निजदेशभक्तं, नमामि विप्रं जगदीशचन्द्रम्।।33।।

जिन्होंने अत्यन्त भयंकर कष्टों को सहा, किन्तु आत्मसम्मान का परित्याग न किया, ऐसे वैज्ञानिक शिरोमणि स्वदेशभक्त श्री जगदीशचन्द्र जी नामक मेधावी को मैं नमस्कार करता हूँ।

अध्यातमविज्ञानसमन्वयस्य, प्रास्थापयत्साधु निदर्शनं यः।
मदेन हीनं परमेशभक्तं, नमामि मान्यं जगदीशचन्द्रम्।।34।।

आध्यात्मिकता और विज्ञान के समन्वय का जिन्होंने उत्तम उदाहरण

प्रस्तुत किया, अभिमान हीन, परमेश्वर भक्त ऐसे मान्य श्री जगदीशचन्द्र जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

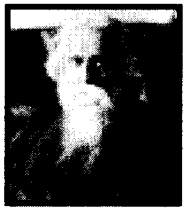

कवीन्द्रो रवीन्द्रः

(7 मई 1861–7 अगस्त 1941 ई०)

सुकाव्येन नित्यं जनान् मोहयन्तं सुवाचा सुधर्मं सदा बोधयन्तम्।
कुरीतीः कुतर्कांस्तथा खण्डयन्तं, रवीन्द्रं नमामः कवीन्द्रं सुधीन्द्रम्।।35।।

अपनी उत्तम कविताओं से सदा मनुष्यों को मुग्ध करते हुए, उत्तम वाणी से शुभ धर्म का उपदेश देते हुए, कुरीतियों तथा कुतर्कों का खण्डन करते हुए अत्यन्त बुद्धिमान् कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ जी को हम नमस्कार करते हैं।

सुशिक्षाप्रसारो भवेच्छात्रवर्गे, तमिस्रा तथाऽज्ञानजन्या विनश्येत्।
अतः शान्तिकेतं शुभं स्थापयन्तं,रवीन्द्रं नमामः कवीन्द्रं सुधीन्द्रम्।।36।।

विद्यार्थियों में उत्तम शिक्षा का प्रसार हो और अज्ञानान्धकार दूर हो इस उद्देश्य से शान्तिनिकेतन नामक उत्तम संस्था को संस्थापित करने वाले कवीन्द्र महाबुद्धिमान् रवीन्द्र नाथ जी को हम नमस्कार करते हैं।

परेशाय गीताञ्जलिं स्वर्पयन्तं, तथा तेन कीर्तिं सुसम्पादयन्तं,
सुभक्त्या च शान्तिं समासादयन्तं,रवीन्द्रं नमामः कवीन्द्रं सुधीन्द्रम्।।37।।

जिस ने अपनी सर्वोत्तम कृति गीताञ्जलि (जिस पर उन्हें लगभग सवा लाख रुपये का नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ) को भगवान् को समर्पित किया तथा उसके द्वारा सत्कीर्ति प्राप्त की, उत्तम ईश्वर-भक्ति

के द्वारा जिन्होंने शान्ति को प्राप्त किया, ऐसे महाबुद्धिमान् कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ जी को हम नमस्कार करते हैं।

स्वदेशस्य कीर्तिं सदा वर्धयन्तं, सुसंकीर्णभावान् सदा दूरयन्तम्।
जनेष्वत्र सौहार्दमुत्पादयन्तं, रवीन्द्रं नमामः कवीन्द्रं सुधीन्द्रम्।।38।।

अपने देश भारत की कीर्ति को सदा बढ़ाने वाले, संकुचित भावों को भगाने वाले, मनुष्यों में मित्रता उत्पन्न करने वाले, कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ जी को हम नमस्कार करते हैं।

त्यागमूर्तिराचार्यरामदेवः
(31 जुलाई1881-9 दिसम्बर1939 ई०)

धर्मप्रचारे सततं प्रसक्तं, देवेशभक्तं विषयेष्वसक्तम्।
विद्याप्रसारेऽतिशयानुरक्तं, श्री रामदेवं विनयेन नौमि।।39।।

निरन्तर धर्मप्रचार में तत्पर, परमेश्वर के भक्त, विषयों में आसक्ति रहित विद्या के प्रसार में अत्यधिक प्रेम रखने वाले आचार्य रामदेव जी को मैं विनयपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

यज्जीवितं वै सरलं नितान्तं किन्तूच्चभावैर्नितरां सुपूर्णम्।
कुलोन्नतावर्पितचित्तवित्तं, श्री रामदेवं विनयेन नौमि।।40।।

जिन का जीवन बिल्कुल सरल किन्तु उच्च भावों से भरपूर था। गुरुकुल की उन्नति में जिन्होंने तन, मन, धन को सर्वथा अर्पित कर रखा था, उन आचार्य रामदेव जी को मैं विनयपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

यस्य स्मृतिः साधु चमत्कृतासीद्,धर्मे च निष्ठा सततं विकम्पा।

सद्योग्यता विज्ञजनप्रशस्ता श्री रामदेवं तमहं नमामि।।41।।

जिन की स्मृति बड़ी चमत्कारिणी थी और जिन की धर्म में लगन सर्वथा अविचल थी, जिन की योग्यता का सिक्का सब विद्वान् लोग मानते थे, ऐसे आचार्य रामदेव जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

सम्पाद्य यो वैदिकमेगजीनसंज्ञं सुपत्रं प्रथितोऽत्रलोके।
भक्तोऽतुलो वैदिकसंस्कृतेर्यः, श्री रामदेवं तमहं नमामि।।42।।

वैदिक मैगजीन नामक (पं. गुरुदत्त जी द्वारा प्रवर्तित) उत्तम पत्रिका का सम्पादन करके जिन्होंने संसार में सर्वत्र प्रसिद्धि प्राप्त की, जो वैदिक संस्कृति के अत्यधिक भक्त थे ऐसे आचार्य रामदेव जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

वक्तृत्वशक्तिः किल यस्य भव्या धाराप्रवाहेण विमोहयन्ती।
तर्कस्य तर्कुर्निशतोऽति दिव्यः, श्रीरामदेवं तमहं नमामि।।43।।

जिन की भाषणशक्ति अपने धाराप्रवाह से सब को मुग्ध करने वाली अत्यन्त उत्तम थी, जिन का तर्करूपी चाकू अत्यन्त तीक्ष्ण था ऐसे आचार्य रामदेव जी को मैं विनय पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

वीरोऽमोघप्रभावः परहितनिरतस्त्यागमूर्तिस्तपस्वी,
कन्यानामप्यभीक्ष्णं सततहितकरे शिक्षणे दत्तचित्तः।
लोकेह्यादर्शभूतं, गुरुकुलविटपं, स्वीयरक्तेन सिञ्चन्,
आचार्यो रामदेवो गुणगणजलधिः कस्य नाभ्यर्चनीयः? ।।44।।

कर्मवीर, प्रभावशाली, परोपकारी, त्यागमूर्ति, तपस्वी, (कन्या गुरुकुल देहरादून के मुख्याधिष्ठाता रूप में) कन्याओं की हितकारिणी उत्तम शिक्षा देने में भी निरन्तर दत्तचित्त, अपने रुधिर से लोक में आदर्श रूप गुरुकुल को सींचने वाले गुणसागर आचार्य रामेदव जी किस के लिये वन्दनीय नहीं?

इति महापुरुषकीर्तने विश्रुतविद्वद्वर्गकीर्तनं
नाम तृतीयं काण्डम् समाप्तम्।।

अथ चतुर्थ काण्डम्
समाजसंशोधकवर्गः

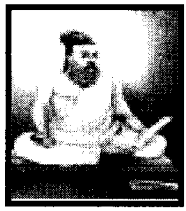

दाक्षिणात्यः सुधारकः श्री तिरुवल्लुवारः

जातोऽत्र हीने किल यः कुलेऽपि, स्वीयैर्गुणैः प्राप पदं महोच्चम्।
महर्षिसंज्ञां विरलां च लेभे, वन्द्यो महात्मा तिरुवल्लुवारः।।1।।

इस ससांर में एक नीच कुल में जन्म लेकर भी जिस महात्मा ने अपने गुणों से अत्यन्त उच्च पद को प्राप्त किया और दुर्लभ महर्षि की संज्ञा को प्राप्त किया वह महात्मा तिरुवल्लुवार वन्दनीय है।

*** ग्रन्थं शुभं तामिलवेदनाम्ना, प्राहुर्यदीयं बहुभक्तियुक्ताः।**
वेदर्षिभक्तः स हि संयतात्मा, वन्द्यो महात्मा तिरुवल्लुवारः।।2।।

जिस के उत्तम ग्रन्थ तिरुक्कुराल नामक को बहुत भक्ति युक्त लोग तामिल वेद के नाम से पुकारते हैं, वह वेद और ऋषियों का भक्त संयमी महात्मा तिरुवल्लुवार वन्दनीय है।

मांसाशनं योऽत्र निनिन्द नूनं, सत्यं दयां च प्रशशंस भूयः।
मांसाशिनो नास्ति दयेत्युवाच, वन्द्यो महात्मा तिरुवल्लुवारः।।3।।

जिस ने मांसभक्षण की निन्दा की और सत्य तथा दया की बहुत प्रशंसा की मांस भक्षक में दया नहीं रहती ऐसा स्पष्ट रूप से बताया, ऐसा महात्मा तिरुवल्लुवार वन्दनीय है।

1.* तिरुक्कुराल – इत्याख्यम्।

न जन्मना जातिमपोषयद् यो, मद्यादिपानं च भृशं निनिन्द।
देवेशभक्तः शुचितोपदेष्टा, वन्द्यो महात्मा तिरुवल्लुवारः।।4।।

जिस ने जन्म-मूलक जातिभेद का कभी समर्थन नहीं किया और मद्य आदि पान की अत्यधिक निन्दा की, वह परमेश्वर-भक्त, पवित्रता का उपदेशक श्री तिरुवल्लुवार वन्दनीय है।

क्रान्तिकारी कविः श्रीबसवेश्वरः

(द्वादशे शतके जन्म, तिथिर्नैवावगम्यते)

*** जातिभेदमस्पृश्यभावनां, निर्मूलयितुं येते।**
नैव जन्मना कोऽप्युच्चो ना, नीचो वेत्युपपेदे।।5।।

जिन्होंने जाति भेद और अस्पृश्यता की भावना को निर्मूल करने का प्रयत्न किया। जन्म से किसी को भी उच्च वा नीच जिन्होंने नहीं माना।

***लोभी पापी कोपी नीचश्चण्डालो नावरजः।**
इत्थं प्रचारयन् वचनेषु बसवेश्वरः प्रशस्यः।।6।।

1. केवल वही उच्च कुल का है जो ईश्वर की पूजा करना जानता है। महात्मा बसवेश्वर वचन भाषानुवाद पृ. 9।

---

* चाण्डाल वही है जो दूसरों ही हिंसा करता है। अस्पृश्य वही है जो अभक्ष्य पदार्थों को खाता है। जातिपाति क्या चीज है? वास्तव में उच्च कुलीन केवल ईश्वर के वे सेवक हैं जो प्राणिमात्र का भला चाहते हैं। 'महात्मा बसवेश्वर के वचन' श्री निवासमूर्ति कृत अनुवाद पृ. 9।

कुल में उत्पन्न व्यक्ति। इस प्रकार अपने वचनों में प्रचार करने वाले बसवेश्वर प्रशंसनीय हैं।

सर्वे परमेश्वरभक्ताः स्युः, शिवोपासकाः सर्वे।

लोभी, पापी, क्रोधी और नीच आदमी ही चण्डाल है न कि नीच

इतरपूजनं लोककल्पितं नहि यो जातु विषेहे।।7।।

सब परमेश्वर के ही भक्त हों, सब उस शिव (शान्ति दाता) के उपासक हों ऐसा जो चाहते थे, और लोगों द्वारा कल्पित अन्य देवी देवताओं व भूतादि की पूजा को जो कभी सहन न करते थे।

यज्ञे पशुवधविरोधकृद् यो मांसादनसुविरोधी।
दयां* बोधयन् धर्ममूलमिह बसवेश्वरः प्रशस्यः।।8।।

यज्ञ में पशुहिंसा तथा मांस भक्षण का अच्छी तरह विरोध करने वाले और दया को धर्म का मूल बताने वाले श्री बसवेश्वर प्रशंसनीय हैं।

कर्णाटकभाषाकविवर्यो भक्तिबोधको धीरः।
वीरशैवसंज्ञां शिष्येभ्यो ददौ सदा गम्भीरः।।9।।

कर्णाटक भाषा (कन्नड़) के कवियों में श्रेष्ठ, भक्ति का उपदेश देने वाले, धैर्यशाली, सदा गम्भीर, जिन्होंने अपने शिष्यों को 'वीर शैव' यह नाम दिया।

सर्वस्मिन् कर्णाटकविषये प्रथितं यदीयकाव्यम्।
बिज्जलभूपमन्त्रिपदमाप्तो बसवेश्वरः प्रशस्यः।।10।।

सारे कर्णाटक प्रान्त में जिसकी कविता प्रसिद्ध हो और जो कल्याण के राजा बिज्जल के मन्त्री थे, ऐसे बसवेश्वर प्रशंसनीय हैं।

---

1. दयवे 2 बेकु सकल प्राणिगलेल्लरल्लि।
दयवे 2 धर्मद मूलवैय्या। महात्मा बसवेश्वर वचन सं. 22

स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति वचनविरोधं चक्रे।
धर्मकर्मणोरधिकारं यः सर्वजनानां मेने ।।11।।

'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' अर्थात् स्त्री और शूद्र वेदादि न पढ़े इस कल्पित वचन का जिन्होंने विरोध किया और धर्म तथा शुभकर्म में जिन्होंने सब मनुष्यों का अधिकार माना।

मारैय्या चन्नैय्या संज्ञौ, शिष्यौ यस्यावरजौ।
दीन-दलित-पतितोद्धारे रतः बसवेश्वरः प्रशस्यः।।12।।

मारैय्या नामक मोची और चन्नैय्या नामक एक नीच कुलोत्पन्न जिनके शिष्य थे। ऐसे दीन दलित और पतित लोगों के उद्धार में तत्पर बसवेश्वर प्रशंनीय हैं।

श्री राजा राममोहनरायः

(1782-1833 ई०)

श्री राममोहनसुधीःसमतिष्ठिपद् यो,
ब्राह्मं सामजमथ लोकमुपादिदेश।
देवेशपूजनपराः सकला नराः स्युः,
सर्वे समाः समनसो न जातिभेदः ।।13।।

बुद्धिमान श्री राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की और लोगों को यह उपदेश दिया कि जिससे सब मनुष्य एक परमेश्वर की पूजा करने वाले हों, सब का परस्पर प्रेम हो, जन्म से जातिभेद को मानना ठीक नहीं। सब समान हैं।

बाल्ये हि यः परिणयःस तु निन्दनीयो,
निन्द्यो न चास्ति तरुणी-विधवा-विवाहः।
चक्रे विरोधमतिघोरसतीप्रथायाः,
इत्थं सुधारकतया स हि लब्धकीर्तिः।।14।।

बाल्यावस्था में विवाह निन्दनीय है युवति विधवाओं का विवाह नहीं। श्री राममोहन राय ने अति क्रूर सती प्रथा का विरोध किया और इस प्रकार सुधारक रूप में कीर्ति प्राप्त की।

ग्रन्थांल्लिलेख स बहून् किल मूर्तिपूजा-
जात्यादि-वारणपरान् जनताहिताय।
क्रीस्त-प्रचारकदलेन च शास्त्रचर्चां,
कृत्वा स्वधर्ममहिमानमसाधयत् सः ।।15।।

जिन्होंने मूर्तिपूजा जातिभेदादि के खण्डन में जनता के हित के लिये अनेक ग्रन्थ लिखे, ईसाई प्रचारकों के साथ शास्त्रार्थ करके अपने आर्य धर्म की महिमा को उन्होंने सिद्ध किया।

आसीदुदारहृदयः प्रथितो मनीषी,
गत्वा विदेशमपि तत्र चकार कार्यम्
इत्थं सुकार्यकरणे निरतो मनस्वी,
श्री राममोहनसुधीर्भुवि वन्दनीयः।।16।।

राजा राममोहन राय उदार हृदय और प्रसिद्ध बुद्धिमान् थे। विदेश में जाकर भी उन्होंने (सती प्रथा के विरोध में कानून बनवाने आदि का) कार्य किया। इस प्रकार उत्तम कार्य कारने में तत्पर राममोहन जी वन्दनीय हैं।

दान्तो देवेन्द्रनाथः
(1817-1905 ई.)

देवेन्द्रनाथ इति ठाकुर इत्युपाह्वो, नेता बभूव तदनतरमप्रमत्तः।
साधुः सदैव परमात्मरतो महर्षेः,संज्ञां स सात्त्विकगुणैः प्रथितैः प्रपेदे।।17।।

राजा राममोहनराय के पश्चात् देवेन्द्र नाथ ठाकुर (ब्रह्म समाज) के नेता बने। वे प्रमाद रहित, साधु, तथा परमेश्वर में प्रीति रखने वाले थे, अतः अपने प्रसिद्ध सात्त्विक गुणों से उन्होंने महर्षि की संज्ञा को प्राप्त किया।

गायत्रीजपतः सः आप हृदयेऽतुल्यां सुशान्तिं सुधीः,
आनन्दं च समाससाद विमलं, ब्रह्मानुभूत्युद्भवम्।
ब्राह्मीं प्राप्य दशां शुभामुपदिशन्, एकेश्वरोपासनां,
देवेन्द्रो न जनस्य कस्य सरलो वन्द्यो महर्षिर्भुवि? ।।18।।

गायत्री के जप से उस बुद्धिमान् ने हृदय में अनुपम शान्ति और ब्रह्मानुभव से होने वाले निर्मल आनन्द को प्राप्त किया। उत्तम ब्राह्मी अवस्था को प्राप्त कर एक ईश्वर की उपासना का उपदेश देने वाले, सरल स्वभाव महर्षि देवेन्द्रनाथ किसके लिये वन्दनीय नहीं?

द्विजेन्द-सत्येन्द्र-रवीन्द्रनाथा, यस्यात्मजाः सुप्रथिताः पृथिव्याम्।
पवित्रतामूर्तिमिह प्रशान्तं, देवेन्द्रनाथं प्रणमामि दान्तम्।।19।।

श्री द्विजेन्द्रनाथ, सत्येन्द्रनाथ और रवीन्द्रनाथ आदि जिनके पुत्र पृथिवी में अत्यन्त प्रसिद्ध हुये, उन पवित्रता की मूर्ति, अत्यन्त शान्त और संयमी देवेन्द्रनाथ जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

सुवक्ता श्री केशवचन्द्रसेनः
(1836-1884 ई.)

तस्यानुगः प्रथित-केशवचन्द्रसेनो,
वाग्म्याङ्.ग्लगिर्यधिक-पाटव-युक्त-धीमान्।
भक्तोऽतिभावुकमना अथ बुद्धिवादी,
चक्रे समाजगत-दोष-सुधारकार्यम्।।20।।

महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर के अनुयायी श्री केशवचन्द्र सेन एक प्रसिद्ध वक्ता, अंग्रजी में निपुण, बुद्धिमान् अत्यन्त भावुक भक्त बुद्धिवादी थे जिन्होंने सामाजिक दोषों के सुधार कार्य को किया।

क्रिस्तानुगामिजन चालितपाठशाला,
आसंस्तदा बहुविधाःस पपाठ तासु।
तज्जन्यसंस्कृतिवशान्नहि वेदमार्गे,
श्रद्धालुरास नहि चित्रमिदं कदाचित्।।21।।

उन दिनों ईसाईयों द्वारा संचालित अनेक विद्यालय थे उन में ही श्री केशवचन्द्रसेन ने शिक्षा ग्रहण की थी इसलिये उस शिक्षा से उत्पन्न संस्कारों के कारण वेद मार्ग में वे यदि श्रद्धालु न थे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

दृष्ट्या स्वया स हि चकार तथापि कार्यं,
कर्तुं जनान् प्रभुपरायणसत्यनिष्ठान्।

गत्वा विदेशमपि लब्धयशा निवृत्तः,
ओजस्विनायक इति प्रथितो मनस्वी।।22।।

तथापि अपनी दृष्टि से उन्होंने लोगों को सत्यनिष्ठ और परमेश्वर के भक्त बनाने का प्रयत्न किया और विदेश जाकर भी ओजस्वी, मनस्वी मनुष्य के रूप में उन्होंने प्रसिद्धि तथा यश को प्राप्त किया।

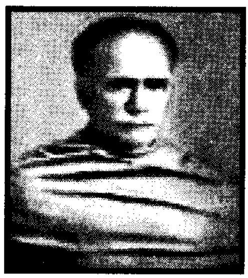

पण्डितप्रवर ईश्वरचन्द्रविद्यासागरः
(1820-1891 ई.)

वेदादिशास्त्रकृतभूरिपरिश्रमोऽसौ,
मान्यो बभूव विबुधेश्वरचन्द्रशर्मा।
विद्यापयोनिधिरिति प्रथितो जनेषु,
श्रीमान् कुशाग्रमतिरास दयार्द्रचेताः।।23।।

वेदादि शास्त्रों में जिन्होंने परिश्रम किया था ऐसे अत्यन्त बुद्धिमान् श्री ईश्वरचन्द्र जी शर्मा माननीय थे। लागों में वे विद्यासागर के नाम से प्रसिद्ध, अति सूक्ष्मबुद्धि और दयालु थे।

बाल्ये विवाहकरणस्य हि कुप्रथासीद्,
बङ्गाङ्गमागधकलिङ्ग-बिहार-देशे।
तत्कारणाच्च विधवा अपि सौकुमार्ये,

बह्व्यो बभूवुरदयैःपरिभूयमानाः।।24।।

बंगाल, अंग देश, मगध, उड़ीसा, बिहार आदि में बाल्यावस्था में विवाह की कुप्रथा प्रचलित थी जिसके कारण बहुत बड़ी संख्या बाल -विधवाओं की थी। निर्दय लोग इन बाल-विधवाओं का बड़ा तिरस्कार करते थे।

तासां विलोक्य कुदशामतिशोचनीयां,
कारुण्यसिन्धुहृदयं शतधा विदीर्णम्।
रात्रिन्दिवं यतितवान् विधवा विवाह-
शास्त्रानुमोदितसुतर्कयुतत्वसिद्ध्यै।।25।।

उनकी उस अतिशोचनीय दुर्दशा को देखकर उन दया सागर का हृदय सैकड़ों प्रकारों से विदीर्ण हो गया। विधवा विवाह को शास्त्र और तर्क-सम्मत सिद्ध करने के लिये उन्होंने दिन-रात प्रयत्न किया।

सन्तोषमाप नहि तेन स राजकीयं,
व्यक्तं विधानमपि कारयितुं प्रयेते।
साफल्यमाप भगवत्कृपया दयालुः,
वन्द्यो न कस्य सुजनस्य महामनीषी?।।26।।

केवल इतने से उन्हें सन्तोष नहीं हुआ बल्कि इस विषय में कानून बनवाने का भी उन्होंने यत्न किया और ईश्वर की कृपा से उन्हें इस में सफलता मिली। ऐसे महाबुद्धिमान् पं. ईश्वरचन्द्र जी विद्यासागर किस सज्जन के लिये वन्दनीय नहीं हैं?

महामतिर्महादेवगोविन्दः
(1840-1901 ई.)

य आप्तो विपश्चित्समाजस्य दोषान्,निराकर्तुमैच्छन् प्रयत्नं च तेने।
विनीतो दयालुर्महाराष्ट्रनेता, महादेवगोविन्दनामाभिनन्द्यः।।27।।

जिस आप्त विद्वान् ने समाज के दोषों को दूर करने की इच्छा की और उसके लिये प्रयत्न किया, वे विनीत, दयालु, महाराष्ट्र के नेता श्री महादेव गोविन्द रानाडे अभिनन्दनीय है।

दयानन्दसंन्यासिवर्यस्य संगात्, समाजोन्नतौ यः सदासक्त आसीत्।
सुधीर्न्यायशीलोऽर्थशास्त्रज्ञवर्यो,महादेवगोविन्दनामाभिनन्द्यः।।28।।

संन्यासियों में श्रेष्ठ ऋषि दयानन्द जी के संत्संग से जो सामाजिक उन्नति में सदा तत्पर थे, वे अत्यन्त बुद्धिमान्, न्यायशील, अर्थशास्त्रज्ञ शिरोमणि श्री महादेव गोविन्द रानाडे अभिनन्दन करने के योग्य हैं।

सुधारेच्छुसम्मेलनेऽध्यक्षभूतो, विरेजे ये ऐतिह्यशास्त्रप्रवीणः।
लिखन् ग्रन्थजातं सुवैदुष्यपूर्णं, महादेवगोविन्दनामाभिनन्द्यः।।

जो इतिहास शास्त्र जानने वालों में प्रवीण, समाज सुधार सम्मेलन के अध्यक्ष थे, जिन्होंने अत्यन्त विद्वतापूर्ण ग्रन्थों को लिखा, ऐसे श्री महादेव गोविन्द रानाडे अभिनन्दनीय हैं।

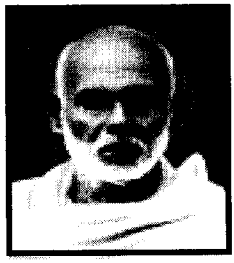

श्री नारायण-गुरुस्वामी

(1856-1928 ई०)

दलितपतितजनताया नित्यं,मार्गदर्शको नेता,
अन्धतमिस्राजस्याजस्रं,पाखण्डस्य विभेत्ता।
मद्यपानपशुहिंसायज्ञामिषसेवनविच्छेत्ता,
श्री नारायणगुरुदेवाख्यो विद्वान् यती नमस्यः।।30।।

दलित और पतित जनों के मार्गदर्शक नेता, अविद्या अन्धकार से उत्पन्न पाखण्ड का निरन्तर खण्डन करने वाले, मद्यपान, पुशुहिंसात्मक यज्ञ और मांसभक्षण का निषेध करने वाले श्री नारायण गुरुदेव नामी विद्वान् संन्यासी नमस्कार योग्य हैं।

***जातिभेदमस्पृश्यभावनां, सततं दूरीकुर्वन्,**
सर्वेष्वेव जनेषु हार्दिकं, सैहार्द च विजनयन्।
एको देवो ह्येको धर्मश्चैका मानवजातिः,
सन्देशं दददेतं वन्द्यो नारायणगुरुदेवः।।31।।

1.मनुष्याणां मनुष्यत्वं जातिर्गोत्वं गवां यथा।
न ब्राह्मणादिरित्येवं, शास्त्रसिद्धान्त ईरितः।।
-श्री नारायणगुरुस्वामिनो मां प्रति वचनं वार्कला शिवगिरिमठे 1924 ई. ।

जातिभेद और अस्पृश्यता की भावना को निरन्तर दूर करते, सब मनुष्यों में हार्दिक मित्रता को उत्पन्न करते और एक ही देव परमेश्वर है, एक धर्म है और एक मानव जाति है, ऐसे सन्देश को देते हुये श्री नारायण गुरुदेव वन्दनीय हैं।

जातो हीनकुलेऽपि गुणैर्यः सर्वलोकवन्द्योऽभूत्,
केरलरत्नं तापस इति यः सकलैरभिनन्द्योऽभूत्।
***प्रबलां संस्थां दलितजनानामुद्धरणार्थं कुर्वन्,**
श्री नारायणगुरुदेवाख्यो विद्वान् यती नमस्यः।।33।।

एक हीन कुल में उत्पन्न होकर भी जो अपने गुणों से सब लोगों के लिये वन्दनीय थे, जो केरल (मालाबार) के रत्न तपस्वी इस रूप से सब लोगों के लिये अभिनन्दनीय थे, दलितों के उद्धार के लिये 'श्री नारायण धर्म परिपालनयोगम्' नामक प्रबल संस्था को बनाने वाले नारायण गुरुदेव नामक विद्वान् संन्यासी नमस्करणीय हैं।

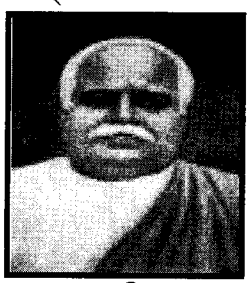

दलितोद्धारकः श्रीकुड्मलरङ्गरावः

(1859-1929 ई.)

सारस्वतब्राह्मणवंशजातः, सत्यव्रतो धीरवरो मनस्वी।
कर्णाटकप्रान्तललामभूतो, वन्द्यः सुधीः कुड्मलरङ्गरावः।।34।।

सारस्वत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न, सत्यव्रतधारी, धीरशिरोमणि

2. *श्री नारायण धर्म परिपालन योगम्(S. N. D. P. yogam)इति नाम्नीम्।,

विचारशील, कर्नाटक प्रान्त के भूषण, सुबुद्धिसम्पन्न श्री कुड्मलरङ्गराव जी वन्दनीय हैं।

समाजसंशोधनकार्यलग्नो, दीनोद्धृतौ यः सततं निमग्नः।
बहिष्कृतो बन्धुभिरप्रधृष्यो,वन्द्यः सुधीः कुड्मलरङ्गरावः।।35।।

समाज सुधार के कार्यों में सदा संलग्न, दीनों के उद्धार में निरन्तर मग्न, बन्धुओं द्वारा बहिष्कृत किये जाने पर भी कभी न दबने वाले श्री कुड्मलरङ्गराव जी नामक बुद्धिमान् वन्दनीय हैं।

जनैरस्पृश्या इति भाविता ये, उपेक्षिता वै दलितास्तदर्थम्।
***संस्थाप्य संस्थां यतमान आप्तो,वन्द्यः सुधीः कुड्मलरङ्गरावः।।36।।**

लोग जिन को अस्पृश्य वा अछूत कहकर अपेक्षा करते थे ऐसे दलितों के उद्धार के लिये 'डिप्रेस्ड क्लास मिशन्' नामक संस्था को स्थापित करके उसके द्वारा सदा यत्न करने वाले आप्त श्री कुड्मलरङ्गरावः जी वन्दनीय हैं।

कष्टानि घोराणि मुदा विषेहे, बहिष्कृतो नापितदासमित्रैः।
अस्पृश्यतावारणदत्तचित्तो, वन्द्यः सुधीः कुड्मलरङ्गरावः।।37।।

जिन्होंने नाई, नोकर चाकर तथा मित्रों से बहिष्कृत होकर अनेक घोर कष्टों को प्रसन्नता से सहन किया, वे अस्पृश्यता के निवारण में दत्तचित्त बुद्धिमान् श्री कुड्मलरङ्गराव जी वन्दनीय हैं।

सुशिक्षिताः स्वास्तनयाश्चकार, राधां* ददौ शूद्रकुलोद्भवाय।

ख्याताय* डाक्टर् सुबरायान्नाम्ने, वन्द्यः सुधीः कुड्मलरङ्गरावः।।38।।

1.* दक्षिण कर्णाटक प्रान्तराजधान्यां मङ्गलौर नगरे डिप्रेस्ड क्लास मिशन् दलितोद्धार सङ्घः) इति संज्ञाम्।

2.* केन्द्रीय व्यवस्थापिकासभायाः सदस्यां श्री राधाबाई-नाम्नीम्।

3.* डा. सुबरायन् एम.ए., पी.एच्.डी. इत्युपाधिभृद् बहुकालपर्यन्तं मद्रासससंस्थानस्य मुख्यमन्त्री।

जिन्होंने अपनी पुत्रियों को सुशिक्षिता बनाया और उनमें से श्रीमती राध ादेवी का शूद्रकुलोत्पन्न, सुप्रसिद्ध डा. सुबरायन् नामक सज्जन के साथ (जो बहुत वर्षों तक मद्रास संस्थान के मुख्यमन्त्री और फिर राज्य सभा के सदस्य थे) उन का विवाह कराया, वे श्री कुड्मलरङ्गराव जी वन्दनीय हैं।

भक्तः परो ब्राह्मसमाजनेता, वेदेषु निष्ठां परमां दधानः।
संन्यासदीक्षां विभयोऽत्र गृह्णन्, स ईश्वरानन्दयती नमस्यः।।39।।

जो ईश्वर के परम भक्त, ब्राह्म समाज के नेता थे, जिन की वेदों में निष्ठा थी, वैदिक रीति से निर्भय हो जिन्होंने (त्रिचूर में मुझ से) संन्यास की दीक्षा ग्रहण की, ऐसे स्वामी ईश्वरानन्द जी संन्यासी नमस्करणीय हैं।

नमाम्यहं तं सरलस्वभावं, लोभेन मोहेन मदेन हीनम्।
देवेशभक्तं विषयेष्वसक्तं, सदेश्वरानन्दमहानुभावम्।।40।।

मैं उन सरल स्वभाव वाले, लोभ, मोह, अभिमान से रहित, ईश्वरभक्त, विषयों में अनासक्त स्वामी ईश्वरानन्द जी नामक महानुभाव को नमस्कार करता हूँ।

विधवोद्धारकः श्री वीरेशलिङ्गं पन्तुलुः

(16 अप्रैल 1848-27 मई 1919 ई०)

आन्ध्रप्रदेशीयः सुधीरवलोक्य विधवानां दशाम्,
अतिशोचनीयां दुःखदां, तस्या निरासार्थं रतः।

विधवाश्रमं संस्थाप्य राज–महेन्द्रिनामकपत्तने,
तासां सुशिक्षोद्वाहजीवनवृत्तिपरिकल्पनपरः।
निजबन्धुभिः स तिरस्कृतः परमाद्रिवत्स हि निश्चलो
वीरेशलिङ्गं पन्तुलुर्वन्द्यो महान् स सुधारकः।।41।।

आन्ध्रप्रदेश वासी जो बुद्धिमान् श्री वीरेशलिङ्गम् पन्तुलु नामक महान् सुधारक विधवाओं की अत्यन्त शोचनीय, दुःखदायिनी अवस्था को देखकर उसको दूर करने को सदा तत्पर रहे और विधवाओं की उत्तम शिक्षा, विवाह तथा आजीविका के लिये राजमहेन्द्री में विधवाश्रम को स्थापित करके जो प्रयत्न करते रहे। अपने बन्धुओं द्वारा तिरस्कार किये जाने पर भी जो पर्वत की तरह अचल रहे, वे श्री वीरेशलिङ्ग पन्तुलु वन्दनीय हैं।

बाल्ये विवाहो नोचितो या बालविधवास्तत्कृताः,
ज्ञेयाःकुमार्यः कन्यकास्तासां विवाहश्चोचितः।
इत्थं दयालुर्बोधयन्, महिलाः सदैवोद्धारयन्,
वीरेशलिङ्गं पन्तुलुर्वन्द्यो महान् स सुधारकः।।42।।

बाल्यवस्था में विवाह उचित नहीं है, उसके कारण जो विधवायें बन गई हैं उनको कुमारी कन्या ही समझना चाहिये और उनका विवाह सर्वथा उचित है, दयालु होकर ऐसा उपदेश देते हुये और सदा महिलाओं का उद्धार करते हुये श्री वीरेशलिङ्गम् पन्तुलु वन्दनीय हैं।

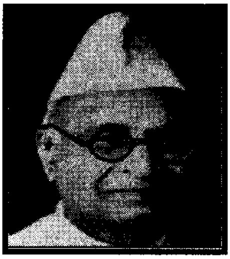

हरिजनसेवकः ठक्करबापा

(1869-1953 ई.)

सुखसुविधाः सर्वाः स्वास्त्यक्त्वा, समाजसेवासक्तः।
अस्पृश्यतानिवारण कर्ता, दलितोद्धृत्यनुरक्तः।।
हरिजनसेवकसंघसुमन्त्री, पश्चात्तस्याध्यक्षः।
अनिशं परोपकारे निरतः, ठक्करविबुधो वन्द्यः।।43।।

अपनी सब सुख सुविधाओं का परित्याग करके समाज सेवा में तत्पर, अस्पृश्यता का निवारण करके दलितोद्धार के कार्य में सदा अनुराग रखने वाले, हरिजन सेवक संघ के पहले महामन्त्री और अध्यक्ष, दिन रात परोपकार-परायण बुद्धिमान् श्री अमृतलाल ठक्कर बापा जी वन्दनीय हैं।

यान्त्रिककार्यं बहुधनदं यो, विहाय सेवां चक्रे।
'आदिवासिनां' दलितजनानाम्,उद्धारं खलु विदधे।।
सदयहृदयसरलः सद्वृत्तो, लोभमोहमदशून्यः।
परोपकारी जनभयहारी, ठक्करविबुधो वन्द्यः।।44।।

बहुत धन दायक यान्त्रिक (इंजिनीयर) के कार्य को छोड़कर जिन्होंने आदिवासी कहे जाने वाले लोगों तथा दलित वर्ग की प्रशंसनीय सेवा की और निश्चय से उन का उद्धार किया। दयालु, सरल, सदाचारी, लोभ, मोह, और अभिमान से रहित, परोपकारी, मनुष्यों के भय को दूर करने वाले वे बुद्धिमान् ठक्कर बापा जी वन्दनीय हैं।

इति महापुरुषकीर्तने समाजसंशोधकवर्गकीर्तनं
नाम चतुर्थं काण्डं समाप्तम्।

अथ पञ्चमं काण्डम्

वीरवर्गः

महाप्रतापी विक्रमादित्यः

(राज्याभिषेककालः 2015 वर्षाणि पू.)

महान् प्रतापी प्रथितः पृथिव्यां, शकारिनाम्ना च तथा प्रसिद्धः।
प्रजासमाराधनदत्तचित्तः, श्रीविक्रमादित्यनृपः प्रशस्यः।।1।।

संसार में प्रसिद्ध, महान् प्रतापी, शकारि नाम से भी प्रख्यात, प्रजा को प्रसन्न रखने में ही जिनका चित्त सदा लगा हुआ था- ऐसे महाराज विक्रमादित्य प्रशंसनीय हैं।

स्वयं विपश्चिद् बुधमानकर्त्ता, *रत्नानि चासन्नव यत्सभायाम्।
श्रीकालिदासामरसन्निभानि, स विक्रमादित्यनृपः प्रशस्यः।।2।।

जो स्वयं भी विद्वान् थे और बुद्धिमानों का मान करने वाले थे, जिन की सभा में कालिदास, अमरसिंह जैसे नवरत्न थे, वे विक्रमादित्य महाराज प्रशंसा के योग्य हैं।

---

1. *धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशंकु, वेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां, रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य।।

दयावीरः सम्राडशोकः

(272-232 ई.पू.)

भृशं प्रतापी प्रबलो ह्यशोकः, सपत्नजातस्य रणे विजेता ।
कलिंगदेशस्य जयस्य काले, रूपान्तरं तस्य सुचारु जातम्।।3।।

जो महाराज अशोक बहुत प्रतापी, बलशाली और रण- भूमि में शत्रुओं को जीतने वाले थे। कलिंग देश की विजय के समय उनका उत्तम रूपान्तर हो गया।

विलोक्य युद्धे निहतान् सपत्नान्, लक्षाधिकांस्तद्हृदयं विदूनम्।
नृशंसकार्यं पशुतुल्यमेतद्, नेतः परं जात्वहमाचरिष्ये ।। 4।।

युद्ध में लाखों शत्रुओं को मरा देख उन का हृदय विदीर्ण हो गया। उन्होंने निश्चय किया कि यह पशुतुल्य क्रूर कार्य मैं अब कभी नहीं करूँगा।

धर्मेण जेष्यामि नृणां मनांसि, चाप्लावयिष्यामि सुखेन तानि।
इत्येव संकल्प्य च तस्य पूर्त्यै, चकार कृत्यान्यभिनन्दितानि।।5।।

उन्होंने निश्चय किया कि मैं धर्म के द्वारा राजाओं के मनों (हृदयों) पर विजय प्राप्त करूंगा और उनको सुख से भरपूर कर दूंगा। इस प्रकार संकल्प कर के उसे पूरा करने के लिए सम्राट् अशोक ने प्रशंसनीय कार्य किए।

कृत्वा प्रतीकं स सुधर्मचक्रं, धर्मप्रसाराय सदा प्रयेते।
देशे विदेशे च स धर्मदूतान्, शान्तेः सुखसन्देशहरानयुंक्त।।6।।

उत्तम धर्मचक्र को प्रतीक बना कर उन्होने धर्म के प्रचार के लिए सदा प्रयत्न किया और शान्ति का उत्तम सन्देश देने वाले धर्मदूतों को देश-विदेश में नियुक्त किया।

महेन्द्रसंज्ञं स्वसुतं सुयोग्यं, स संघमित्रेत्यभिधानपुत्रीम्।
लङ्कां नृपः प्रेषितवान् समोदं, प्रसारकामो भुवि सत्यधर्मम्।।7।।

सम्राट् अशोक ने अपने महेन्द्र नामक सुयोग्य पुत्र को तथा संघमित्रा नाम वाली पुत्री को सत्य धर्म के प्रचार के लिए प्रसन्नतापूर्वक लंका भेजा।

नृणां चिकित्सासदनानि देशे, तथा पशूनामपि निर्ममेऽसौ।
उल्लेखयंश्चापि शिलासु धर्मान्, अशोकसम्राट् खलु वन्दनीयः।।8।।

उन्होंने इस देश में मनुष्यों तथा पशुओं की चिकित्सा के लिये अस्पताल खोले और शिलाओं पर धर्म-लेख खुदवाये, ऐसे सम्राट् अशोक निश्चय से वन्दना के योग्य हैं।

यो लोकविख्यातमहामनुष्यः, शान्त्यर्थयत्नेन बभूव धीरः।
लोकोपकारे सततं प्रवृत्तः, सम्राडशोकः किल वन्दनीयः।।9।।

संसार में प्रसिद्ध जो मनुष्यों में महान्, शांति के लिए बहुत यत्न करते थे, जो सदा लोकोपकार में लगे रहे-ऐसे वे राजा अशोक स्तुति के योग्य हैं।

महाराणा प्रतापसिंह:

(1540-1597 ई.)

यः शूरवीरेषु शिरोमणिः सन्, अदम्यमुत्साहमिहादधानः।
नांगीचकारेतरपारतन्त्र्यं, तं श्रीप्रतापं विनता नमामः।। 10।।

जिस शूरवीर शिरोमणि ने अदम्य (कभी न दबने वाले) उत्साह को इस जीवन में धारण करते हुए दूसरों की अधीनता को कभी स्वीकार नहीं किया, उन महाराणा प्रताप को हम विनययुक्त होकर नमस्कार करते हैं।

प्रतापसिंहेति यथार्थसंज्ञं,विकम्पयन्तं समरे स्वशत्रून्।
आह्लादयन्तं च सतां मनासिं, तं श्रीप्रतापं विनता नमामः।।11।।

प्रताप सिंह इस यथार्थ (वास्तविक) नाम वाले, युद्ध में अपने शत्रुओं को कम्पाने वाले और सज्जनों के मन को प्रसन्न करने वाले महाराणा प्रताप जी को हम विनय युक्त हो कर नमस्कार करते हैं।

एकोऽल्पसेनोऽपि न यो वरेण्यः,सत्क्षत्रियाणां नृमणिश्चकम्पे।
पुरः कदाचिन्मुगलाधिपानां, तं श्रीप्रतापं विनता नमामः।।12।।

उत्तम क्षत्रियों में श्रेष्ठ, मनुष्यों में मणि के समान प्रंशसनीय महाराणा अकेले और थोड़ी सेना वाले होते हुए भी मुगल बादशाहों के सामने कभी कम्पित नहीं हुए (जिन्होंने उन के सामने घुटने नहीं टेके) उन महाराणा प्रताप जी को हम विनय युक्त हो कर नमस्कार करते हैं।

यावत्स्वतन्त्रो न भवेत्स्वदेशस्तावन्न विश्रान्तिमहं करिष्ये।
इत्थं प्रतिज्ञाय तपश्चरन्तं, तं श्रीप्रतापं विनता नमामः।।13।।

जब तक अपना देश स्वतन्त्र नहीं हो जाता, तब तक मैं विश्राम न करूंगा, ऐसी प्रतिज्ञा कर के तप करने वाले महाराणा प्रताप जी को हम विनययुक्त होकर नमस्कार करते हैं।

वनेषु वीरो विजनेषु सेहे, कष्टान्यनेकानि भयावहानि।
परं न धर्म्यात्तु चचाल मार्गात्, तं श्रीप्रतापं विनता नमामः।।14।।

जिन वीर ने निर्जन अरण्यों में निवास करके अनेक भयङ्कर कष्टों को सहन किया किन्तु जो धर्म-सम्मत मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए, ऐसे महाराणा प्रताप को हम विनय युक्त होकर नमस्कार करते हैं।

महाराष्ट्रकेसरी शिवराजः
(1630-1680 ई०)

कीर्तिर्यदीया धवलामलेयं, विराजतेऽद्यापि हि सर्वदिक्षु।
तं राजनीतौ कुशलाग्रगण्यं, वीरं नमामः शिवराजसिंहम्।।15।।

जिनकी निर्मल स्वच्छ कीर्ति आज भी सब दिशाओं में विराजमान है, उन राजनीति में कुशल और नीतिज्ञ-शिरोमणि वीर शिवराज सिंह जी को हम नमस्कार करते हैं।

न पारतन्त्र्यं तु कदापि सह्यम्, आयान्तु विघ्ना बहवो न चिन्ता।
एवं सुधैर्येण सदाचरन्तं, वीरं नमामः शिवराजसिंहम् ।।16।।

परतन्त्रता को मैं कभी सहन नहीं कर सकता, कितनी भी विघ्न बाधायें आएं उन की कोई चिन्ता (परवाह) नहीं। इस प्रकार उत्तम धैर्य से सदा आचरण करते हुए वीर शिवराजसिंह को हम नमस्कार करते हैं।

भृशं विनीतं सृजनेषु नित्यं, जीजीजनन्या अनुरूपपुत्रम्।
शठेषु नूनं शठवच्चरन्तं, वीरं नमामः शिवराजसिंहम्।।17।।

सज्जनों के प्रति सदा अत्यन्त विनीत, किन्तु शठों के साथ निश्चय से शठ का तरह व्यवहार करते हुए जीजा बाई के अनुरूप वीर शिवराजसिंह को हम नमस्कार करते हैं।।17।।

यः पर्वतीयः खलु मूषिकोऽयम्, इतीव तुच्छामभिधामगृह्णात्।
गजेन्द्रतुल्यान् यवनान् व्यजेष्ट, वीरं स्तुमस्तं शिवराजसिंहम्।।18।।

जिन्हें विरोधियों ने 'पहाड़ी चूहा' यह तुच्छ नाम दिया किन्तु जिन्होंने बड़े हाथी के समान मुसलमानों पर भी विजय प्राप्त की, ऐसे शिवराज सिंह की हम स्तुति करते हैं।

यः स्थापयामास सुधर्मराज्यम्, प्राकम्पयच्चाप्यवरङ्गजीवम्।
श्रीरामदासादिसतां विधेयं, वीरं स्तुमस्तं शिवराजसिंहम्।।19।।

जिन्होंने उत्तम राज्य को स्थापित किया और औरंगजेब को कंपा दिया, श्री स्वामी रामदास इत्यादि सज्जनों के आज्ञाकारी उन महाराज शिवराजसिंह जी की हम स्तुति करते हैं।

धर्मवीरो हकीकतराय:

(षोडश-शतके शाहजहां-काले)

बालोऽपि यो धैर्ययुतो मनस्वी, न स्वीयधर्मं विजहौ कदाचित्।
प्रलोभितोऽनेकविधैरुपायैः, चचाल धर्म्मान्न भयान्न लोभात्।।20।।

बालक होता हुआ भी जो धैर्यवान् और मनस्वी था, जिसने अपना धर्म कभी नहीं छोड़ा, जिसे तरह-तरह के उपायों से प्रलोभन दिए गए, पर जो न तो डर कर, न ही लोभ के वश होकर अपने धर्म से डिगा।

मुहम्मदीये मत आगतश्चेत् ,
त्वं लप्स्यसे सर्वविधां समृद्धिम्।
नो चेद् विमुक्तोऽप्यसुभिः स्वकीयैः,
शोच्यां दशामाप्स्यसि बालक! त्वम्।।21।।

यदि तू मुसलमान बन जायेगा तो तुझे सब प्रकार की समृद्धि प्राप्त हो जायेगी, नहीं तो हे बालक! तुझे अपने प्राणों से भी हाथ धोने पड़ेंगे और इस प्रकार तेरी अत्यन्त सोचनीय अवस्था हो जाएगी।

इत्थं मतान्धैर्यवनैरनेकैः, सम्बोधितो नैव मनाक् चकम्पे।
हकीकतः किन्तु स धर्मवीरः, प्रोवाच वाचं विभयः प्रशान्तः।।22।।

इस तरह अनेक मतान्ध मुसलमानों द्वारा सम्बोधित किये जाने पर भी हकीकतराय जरा भी कम्पित नहीं हुआ किन्तु उस धर्मवीर ने निर्भर और प्रशान्त होकर कहा।

त्यक्ष्यामि धर्मं नहि जातु मूढाः,आस्था मदीया खलु सत्यधर्मे।
आत्मास्ति नित्यो ह्यमरो मदीयः, खड्गो न तं कर्त्तयितुं समर्थः।।23।।

हे मूर्खो! मैं कभी धर्म का परित्याग नहीं करूँगा। क्योंकि मेरी सत्य धर्म में पूरी आस्था या विश्वास है। मेरी आत्मा नित्य अमर है उसको कोई तलवार काट नहीं सकती।

मृत्योर्न भीतोऽस्मि मनागपीह, जानामि वासः-परिवर्तनं तम्।
न ह्यध्रुवे वस्तुनि मेऽनुरागो, येन ध्रुवं धर्ममहं त्यजेयम्।।24।।

मुझे मृत्यु से कुछ भी भय नहीं है क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह पुराने वस्त्रों को बदलने के समान है। अस्थिर वस्तु में मुझे कोई प्रेम नहीं है जिससे मैं नित्य स्थायी धर्म का परित्याग कर दूँ !

यूयम् मतान्धाः कुरुत प्रकामं, मतान्धता मानवताविरुद्धा।
अहं प्रहृष्टोऽस्मि मदीयधर्मे, हास्यामि तं लोभवशान्न भीत्या।।25।।

हे मतान्ध लोगो! तुम्हारी जो इच्छा हो वह करो। मतान्धता मानवता के विरुद्ध है। मैं अपने धर्म में सर्वथा प्रसन्न हूँ। उसे मैं लोभ अथवा भय के कारण न छोडूंगा।

इत्थं गभीरां गिरमानिशम्य, *अबालिशस्याद्भुतबालकस्य।
जना नृशंसाश्चकिता बभूवुः, चक्रुस्तु कृत्यं जननिन्दनीयम्।।26।।

इस प्रकार उस बुद्धिमान्, अतिअद्भुत् बालक की गम्भीर वाणी को सुनकर वे क्रूर मनुष्य चकति हो गये किन्तु उन्होंने मनुष्यों द्वारा निन्दनीय कार्य किया।

आदाय खड्गम् यवना मतान्धाः, अनेक खण्डान् विदधुस्तदानीम्।
देहस्य तस्याद्भुतधैर्यधर्तुः, परं तमेवामरतां विनिन्युः।।27।।

---

1. * अबालिशः- अमूढः प्राज्ञः।

मतान्ध यवनों ने तलवार पकड़कर उस अद्भुत धैर्यधारी बालक के शरीर के कई टुकड़े कर डाले, किन्तु इस प्रकार उन्होंने उसे अमर कर दिया।

आसीद् वसन्तोत्सव एष रम्यो, यदा नृशंसं विदधुः कुकृत्यम्।
धन्यः स बालो हि हकीकताख्यो, धन्या च सा पञ्चनदीयभूमिः।।28।।

यह वसन्त पञ्चमी का रमणीय उत्सव का दिन था जब उन्होंने क्रूर कुत्सित कार्य किया। वह हकीकतराय नामक वीर बालक धन्य है और वह पंजाब की भूमि भी धन्य है जिसने ऐसे वीर को जन्म दिया।

यावद्भवे चन्द्रदिवाकरौ स्तो, यावत्समुद्रा गिरयश्च लोके।
तावद् बुधा वीरहकीकतस्य, गास्यन्ति गाथां विमलां विनीताः ।।29।।

संसार में जब तक सूर्य और चन्द्र हैं, जब तक जगत् में समुद्र और पर्वत हैं तब तक बुद्धिमान् लोग हकीकतराय की विमल गाथा को विनीत होकर गाते रहेंगे।

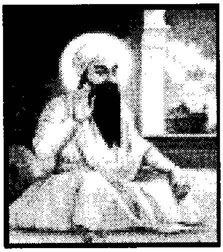

धर्मवीरो गुरुरर्जुनदेवः
[१५७१-१६१४ ई०]

यो धर्ममार्गाद् विचचाल नैव, सेहे तु कष्टानि भयानकानि।
प्राणाहुतिं धर्ममखेऽर्पयन्तं,नमामि भक्त्या गुरुमर्जुनं तम्।।30।।

जिन्होंने भयंकर कष्टों को सहन किया किन्तु जो धर्ममार्ग से कभी विचलित नहीं हुए, धर्मयज्ञ में अपने प्राणों की आहुति अर्पित करने

वाले गुरु अर्जुनदेव जी को मैं भक्ति से नमस्कार करता हूँ।

जना नृशंसा निदधुः कटाहे, प्रक्षिप्तवन्तः स तथाप्यनार्तः।
तैलं तथोष्णं सिकताभियुक्तं, नमामि भक्त्या गुरुमर्जुनं तम्।।31।।

जिन्हें क्रूर पुरुषों ने तपते कड़ाह में डालकर उन के ऊपर गर्म रेत और तेल फेंका, तो भी जो व्याकुल नहीं हुए, ऐसे गुरु अर्जुनदेव जी को मैं भक्ति से नमस्कार करता हूँ।

धर्मवीरो गुरुस्तेगबहादुरः
(१६१९-१६७५ ई०)

य आर्यधर्मस्य हि रक्षणार्थं, स्वीयानसूनुज्झितवान् समोदम्।
नाङ्गीचकारान्यमतप्रवेशं, नमामि वीरं गुरुतेगसंज्ञम्।।32।।

जिन्होंने आर्यधर्म की रक्षा के लिए प्रसन्नता के साथ अपने प्राणों की आहुति दे दी, किन्तु अपना धर्म छोड़कर अन्य मत में प्रवेश करना स्वीकार नहीं किया, उन वीर तेगबहादुर जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

इत्थं हुतात्मा ह्यमरो बभूव, ख्यातं तथाद्यापि हि शीशगञ्जम् ।
यत्राहुतिस्तेन तनोः प्रदत्ता, नमामि वीरं गुरुतेगसंज्ञम् ।।33।।

इस प्रकार ये हुतात्मा (शहीद)अमर हो गए जिन के नाम से आज भी वह शीशगंज नामक गुरुद्वारा देहली में बना हुआ है जहाँ उन्होंने अपने शरीर की बलि दी थी। ऐसे वीर गुरु तेगबहादुर जी को मैं नमस्कार करता हूँ ।

गुरुर्गोविन्दसिंहः

(1665-1707 ई०)

गुरोस्तेगस्यासीद् भुवि बहुमतो वीरतनयो,
धृतोऽसिर्येनाऽऽसीत् सकलखलपापं शमयितुम् ।
कविर्योगी भक्तो खिलजगति विख्यातमहिमा,
गुरुं गोविन्दं तं प्रमुदितमनस्का इह नुमः।।34।।

जो गुरु तेगबहादुर जी के उत्तम वीर पुत्र थे, जिन्होंने सब दुष्टों के पाप (अन्याय) को शान्त करने के लिए तलवार को धारण किया था ऐसे कवि,योगी, भक्त सारे जगत् में प्रसिद्ध महिमा वाले गुरु गोविन्दसिंह जी को हम प्रसन्न चित्त होकर नमस्कार करते हैं।

जनान् सामान्यान् यो जगति विदधे सिंहसदृशान्,
खलानां नाशार्थं सततमुपयुक्तान् सुकृतिनः।
शिशिक्षे सद्भक्तिं सकलजगतोप्यादिमगुरौ,
गुरुं गोविन्दं तं प्रमुदितमनस्का इह नुमः।।35।।।

सामान्य लोगों को भी संसार में जिन्होंने सिंह के समान, दुष्टों के नाश के लिए निरन्तर उपयोगी और पुण्यात्मा बना दिया, उन्हें सारे संसार के आदि गुरु परमेश्वर में उत्तम भक्ति की शिक्षा दी, ऐसे गुरु गोविन्दसिंह जी को हम प्रसन्न-चित्त होकर नमस्कार करते हैं।

यदीयैः सत्पुत्रैरपि निजबलिर्धर्ममतिभिः,

वितीर्णः सामोदं न तु सुकृतमार्गाद् विचलितम्।
सुधैर्ये सच्छौर्ये प्रथितयशसं सर्वविषये,
गुरुं गोविन्दं तं प्रमुदितमनस्का इह नुमः ।।36।।

जिन के धर्मात्मा सुपुत्रों ने भी प्रसन्नता पूर्वक अपनी बलि दे दी, किन्तु पुण्य के मार्ग से जो विचलित नहीं हुए, उत्तम धैर्य, शूरवीरता और राजनीतिज्ञता आदि सब विषयों में प्रसिद्ध यश वाले गुरु गोविन्दसिंह जी को प्रसन्नचित्त होकर नमस्कार करते हैं।

....

बन्दावीरः

विरक्तो यो वीरः, सकलखलनाशोद्धृतकरः,
जहौ प्राणान् धर्मे न हि परमसौ धर्ममजहात्।
चकम्पे यच्छक्तेर्यवननिवहो जम्बुक इव,
नमामो बन्दाख्यं प्रथितमपि योगे सुकृतिनम्।।37।।

जिस वीर ने वैराग्ययुक्त होकर भी दुष्टों के नाश के लिये हाथ में तलवार पकड़ी, जिसने धर्म के लिये अपने प्राणों का परित्याग कर दिया किन्तु धर्म को नहीं छोड़ा, जिस की शक्ति से यवनसमूह गीदड़ की तरह कांपता था, ऐसे प्रसिद्ध योगी पुण्यात्मा बन्दा वैरागी को हम नमस्कार करते हैं।

धर्मवीरो लेखरामः

(1858-1897 ई०)

वैदोदितो धर्म इहास्त्यभीष्टः, लोकस्य सर्वस्य हिताय नूनम्।
तस्य प्रचारे सततं प्रसक्तः, श्रीलेखरामो महनीय आसीत्।। 38।।

सारे संसार के कल्याण के लिये निश्चय से वेद में कहा गया धर्म अभीष्ट है, ऐसा समझकर वेद धर्म के प्रचार में निरन्तर लगे हुये श्री लेखराम जी सब के पूजनीय थे।

अभ्यस्य भाषां यवनादिकानाम्, अधीत्य तेषां मतपुस्तकानि।
सत्यं विभीकः प्रथयन् यथार्थं, श्रीलेखरामो महनीय आसीत्।।39।।

यवनादियों की भाषा को सीख कर और उन के मत की पुस्तकें पढ़कर निडर होकर यथार्थ सत्य का प्रचार करने वाले श्री लेखराम जी सब के पूज्य थे।

छलस्य नामापि विवेद नासौ, भीतेर्लवोऽप्यास न तस्य चित्ते।
पाखण्डमुग्रं खलु खण्डयन् सः, श्रीलेखरामो महनीय आसीत्।।40।।

वे छल के नाम तक से अपरिचित थे, उन के मन में लेश मात्र भी डर नहीं था, उन्होंने तीव्र रूप से पाखण्डों का खण्डन किया; ऐसे श्री लेखराम जी सब के पूज्य थे।

लिलेख लेखान् स यथार्थनामा, तर्कस्य तर्कुं सततं दधानः।
चरन् विशङ्को नरकेसरीव, श्रीलेखरामो महनीय आसीत्।।41।

उन्होंने अपने नाम को सार्थक करते हुये, तर्क रूप चाकू का

प्रयोग निरन्तर कर कई लेख लिखे। नृसिंह (मनुष्यों में सिंह) के समान निर्भय होकर विचरण करने वाले श्री लेखराम जी सबके पूज्य थे।

चचार भूमावभयः सुधीरः, सुखं न दुःखं गणयन् न चाभूत्।
धर्मप्रचारं विदधच्छ्रमेण, श्री लेखरामो महनीय आसीत्।।42।।

भारत भूमि में उन्होंने निर्भय होकर विचरण किया और सुख दुःख की परवाह नहीं की। उत्तम धैर्य से कष्ट सहते हुये,श्रमपूर्वक, धर्म का प्रचार करने वाले श्री लेखराम जी सबके पूज्य थे।

व्यापादितो लवपुरे छुरिकारप्रहारैर्धूर्तेन केनचिदहो यवनेन यूना।
प्राप्तोऽमरत्वपदवीं बलिदानतोऽसौ,श्रीलेखरामविबुधो महनीय आसीत्।।43।।

पर, हा! दुःख है कि उन्हें किसी धूर्त, मत से अन्धे जवान मुसलमान ने लाहौर में छुरे से मार डाला। अपने बलिदान से अमर होने वाले वे विद्वान् लेखराम जी सबके पूज्य थे।

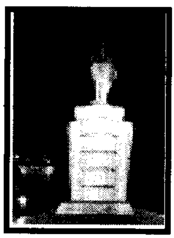

हैदराबादहुतात्मानः

भाग्यनगरे संप्रवृत्तो यो महान् सत्याग्रहः,
स्वामिनो नारायणाख्या यस्य नेतारोऽभवन्।
धार्मिकं स्वातन्त्र्यमाप्तुं संप्रवृत्ते ह्यध्वरे,
यैर्मुदा वीरैर्बुधैर्दत्ता निजप्राणाहुतिः ।।44।।
ते नमस्याः सर्व एते येऽमरा जाता ध्रुवं,
तत्प्रभावादन्त आर्या लेभिरे विजयश्रियम्।
यातनाः सोढा सुघोराः किन्तु न त्यक्तं व्रतम्

अर्पयामः सादरं तेभ्यो वयं श्रद्धाञ्जलिम् ।।45।।

हैदराबाद में जो महान् सत्याग्रह सन् 1939 में हुआ जिसके प्रथम सर्वाधिकारी नेता महात्मा नारायण स्वामी जी थे। उस धार्मिक स्वतन्त्रता को पाने के लिये किये गये सत्याग्रह यज्ञ में जिन वीर बुद्धिमानों ने प्रसन्नता से अपने प्राणों की आहुति दी, वे सब नमस्कार करने योग्य हैं जो इस बलिदान के कारण निश्चय से अमर हो गये हैं। उनके बलिदान के प्रभाव से आर्यों ने अन्त में विजय लक्ष्मी को प्राप्त किया। उन धर्मवीरों ने अनेक घोर कष्टों को सहन किया किन्तु व्रत का परित्याग नहीं किया इसलिये हम उन्हें आदर सहित श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

श्यामललारूढ–माधव–विष्णु–भगवन्तादयः,
स्वामिसत्यानन्द–वेंकटराव–छोटेलालकाः।।46।।
स्वामि परमानन्द–बदनसिंह–रतिरामादयः।
गुरुकुलीयो ब्रह्मचारी श्रीदयानन्दाभिधः।।47।।
धर्मप्रकाशः सुकृतो फकीरो वेदप्रकाशो बुधपाण्डुरङ्गः।
श्रीसत्यनारायण–भीमरावौ मल्खानसिंहाख्यबुधो मनस्वी।।
कल्याणानन्दः स्वामी, श्रीमान् शान्तिप्रकाशकः।
महावीरो धर्मवीरः, खण्डेरावस्तथेतरे।।49।।
एतान् सर्वान् नमस्कुर्मो धर्मवीरान् हुतात्मनः।
प्रत्यब्दं यान् स्मरन्त्यार्याः प्रस्तुते विजयोत्सवे।।50।।

श्री श्यामलाल जी, भक्त अरूढ़ा, श्री माधव, श्री विष्णु भगवन्त, श्री सुनहरेलाल, स्वामी सत्यानन्द जी, श्री वेंकटराव, श्री छोटेलाल, स्वामी परमानन्द, श्री रतिराम, श्री बदनसिंह, गुरुकुल कांगड़ी का ब्रह्मचारी दयानन्द, श्री धर्मप्रकाश जी, फकीरचन्द्र, श्री वेदप्रकाश, श्री पाण्डुरंग, श्री सत्यनारायण, श्री भीमराव, श्री मलखान सिंह, स्वामी कल्याणानन्द, श्री शान्तिप्रकाश, श्री महावीर, श्री खाण्डेराव आदि धर्मवीरों को जिन्हें आर्य, प्रतिवर्ष सत्याग्रह स्मारक दिवस पर (श्रावणी पर्व के अवसर पर) स्मरण

करते हैं, हम नमस्कार करते हैं।

इति महापुरुषकीर्तनं नाम पञ्चमं काण्डं समाप्तम्।।

अथ षष्ठं काण्डम्

राष्ट्रनायकवर्गः

देशभक्तो दादाभाई नौरोजी महोदयः

(4सितम्बर 1825-30 जून 1917 ई.)

यो देशस्य दशां विलोक्य पतितां, दारिद्र्यपङ्काकुलां,
खिन्नोऽतीव बभूव शुद्धहृदयः,कारुण्यरत्नाकरः।
येते देशमिमं समुन्नमयितुं, सर्वैरुपायैः शुभैः,
दादाभाई नरोजिनं प्रमुदितास्तं देशभक्तं नुमः।।1।।

जो शुद्ध हृदय, दया के समुद्र देश की पतित और निर्धनतारूप कीचड़ में फंसी अवस्था को देखकर अत्यन्त दुःखित हुये और सब उत्तम उपायों से जिन्होंने इस देश को उन्नत करने का प्रयत्न किया, उन देश-भक्त दादाभाई नौरोजी को हम प्रसन्नता पूर्वक नमस्कार करते हैं।

आंग्लानां न हि शासनं हितकरं, दारिद्र्यसंवर्धकम्,
इत्येवं प्रबलैः प्रमाणनिचयैर्यः* पुस्तकेऽसाधयत्।
इंग्लैण्डीयविधानकर्तृसदसो यो मान्यसभ्योऽभवद्,
दादाभाई नरोजिनं प्रमुदितास्तं देशभक्तं नुमः।।2।।

1.* Poverty of India इति नामके पुस्तके।

जिन्होंने अपनी अंग्रेजी पुस्तक में प्रबल प्रमाणों से इस बात को सिद्ध किया कि अंग्रेजों का राज्य हमारे लिये हितकारक नहीं किन्तु गरीबी का बढ़ाने वाला है, जो 1892 ई. में इंग्लैन्ड की पार्लियामेन्ट के मान्य सदस्य बन गये थे, ऐसे देशभक्त दादाभाई नौरोजी को हम प्रसन्नता पूर्वक नमस्कार करते हैं।

यो राष्ट्रियमहासभापतिपदे त्रिर्नायकैर्योजितः,
दारिद्र्यादिविनाशकं सुखकरं, नान्यत् स्वराज्यं विना।
इत्थं योऽपि जुघोष वै कलिकता-पुर्यां विना साध्वसं,
दादाभाई नरोजिनं प्रमुदितास्तं देशभक्तं नुमः।।3।।

जो तीन वार इन्डियन नैशनल कांग्रेस (राष्ट्रीय महासभा) के प्रधान चुने गये और जिन्होंने सन् 1906 के कलकत्ता के अधिवेशन में निर्भय होकर इस बात की स्पष्ट घोषणा की कि स्वराज्य के बिना कोई भी चीज गरीबी अशिक्षा आदि को दूर करने वाली और सुख देने वाली नहीं हो सकती, ऐसे देशभक्त दादाभाई नौरोजी को हम प्रसन्नता पूर्वक नमस्कार करते हैं।

लोकमान्यो बालगंगाधर तिलकः

(23 जुलाई 1856 - अगस्त 1920 ई.)

यो विद्वान् प्रतिभान्वितः शुभगुणैः सवर्त्र पूज्योभवत्,
स्वातन्त्र्यं समवाप्तुमेव सततं, यो यत्नशीलोऽभवत्।
त्यागी देशहितार्थमत्र विविधाः सेहे हि यो यातना-

स्तं सिंहं नृषु लोकमान्यतिलकं, श्रद्धान्वितो नौम्यहम्।।4।।

जो प्रतिभाशाली विद्वान् अपने उत्तम गुणों से सब जगह पूजनीय बने, जो देश को स्वतन्त्र कराने के लिये निरन्तर प्रयत्न करते रहे, जिन त्यागी महानुभाव ने देशहित के लिये अनेक कष्टों को सहन किया, ऐसे पुरुषों में सिंह के समान लोकमान्य तिलक को मैं श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूँ।

गीताया विदधे प्रमोदजनकं भाष्यं विपश्चिद्वरो,
यो नित्यं शुभकर्मयोगनिरतः, सद्देशभक्ताग्रणीः।
आसीद् यो जनताहृदामविरतं, सम्राड् बुधः सेवया,
तं सिंहं नृषु लोकमान्यतिलकं, श्रद्धान्वितो नौम्यहम्।।5।।

जिन उत्तम कर्मयोग में तत्पर, देशभक्तों के नेता महाविद्वान् तिलक जी ने गीता का अत्यन्त प्रसन्नता जनक भाष्य 'गीता रहस्य' के नाम से किया, जो अपनी सेवाओं के कारण जनता के हृदयों के निरन्तर सम्राट् थे, उन पुरुषसिंह लोकमान्य तिलक जी को मैं श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूँ।

विद्रोहस्य विनायको गणपतिर्यो मन्यते मानवैः,
चैतन्यं नवमेव साहसमयं, यद् यत्नतो विस्तृतम्।
ग्रस्पृश्यत्वनिवारणार्थमपि यो यत्नं चकोरप्सितं,
तं सिंहं नृषृ लोकमान्यतिलकं श्रद्धान्वितो नौम्यहम्।।6।।

जिन्हें लोक में विद्रोह का सवोच्च्च नेता, गणेश के समान माना जाता है, जिन के यत्न से साहसपूर्ण नई जागृति सब जगह फैल गई, अस्पृश्यत्व के निवारण के लिये भी जिन्होंने इष्ट यत्न किया, ऐसे नरकेसरी लोकमान्य तिलक को मैं श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूं।

स्वराज्यं हि मे जन्मसिद्धोऽधिकारः,अवश्यं मया लप्यस्यते तद् यथार्थम्।
इतीमां गिरं घोषयन्तं विभीकं, सुधीरं मुदा लोकमान्यं नमामि।।7।।

'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे अवश्य प्राप्त

करुंगा, इस बात की स्पष्ट घोषणा करते हुये निर्भय, अत्यन्त धीर लोकमान्य तिलक जी को मैं प्रसन्नता पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

सम्पाद्य चारु शुभ 'केसरिं' नाम पत्रं, यश्चेतनां जनमनस्सु समानिनाय।
आसक्तिहीनमनसा च चकार सेवां,तं लोकमान्यतिलकं विनयेन नौमि।।8।।

जिन्होंने 'केसरी' नामक उत्तम पत्रिका के सम्पादन से लोगों के मन में नये चैतन्य का संचार कर दिया और आसक्ति-रहित मन से सदा सेवा की, ऐसे लोकमान्य तिलक को मैं श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूँ।

यत् किञ्चिदत्र कथयेयुरिमे समेता:,नाहं मनागपि बुधा विहितापराध:।
इत्यादिकां विभयवाचमुदाहरन्तं, तं लोकमान्यतिलकं विनयेन नौमि।।9।।

ये जूरी (न्याय सभा) के लोग कुछ भी कहें, मैंने जरा भी अपराध नहीं किया, निर्भय होकर ऐसी वाणी बोलने वाले लोकमान्य तिलक को मैं विनयपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

पञ्चाम्बुकेसरी लाजपतराय:

(28 जनवरी 1865-17 नवम्वर 1928 ई.)

वक्तारं प्रतिभान्वितं हि नितराम्, ओजस्विनं स्फूर्तिदं,
देशस्योन्नतये सदैव निरतं, कष्टेषु घोरेष्वपि।
अस्पृश्यत्वनिवारणार्थमनिशं यत्नं दधानं परं,
लालालाजपतं कुशाग्रधिषणं, भक्त्या नुमस्तं वयम्।।10।।

प्रतिभाशाली, ओजस्वी, निरन्तर, स्फूर्त्तिदायक वक्ता, घोर कष्ट आने पर भी देश की उन्नति के लिये सदा तत्पर, अस्पृश्यता के निवारण के लिये उत्तम यत्न करने वाले, कुशाग्रबुद्धि लाला लाजपतराय जी को हम भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं।

निर्भीकः सततं प्रयत्ननिरतो योऽत्र स्वराज्याप्तये,
कार्यं यः प्रवसंश्चकार परमं, धीमान् विदेशेष्वपि।
यस्यौजस्विगिरा विपक्षिनिवहो नित्यं चकम्पे भृशं,
लालालाजपतं कुशाग्रधिषणं, भक्त्या नुमस्तं वयम्।।11।।

जो निर्भय हो कर इस देश में स्वतन्त्रता लाने के लिये सदा प्रयत्नशील रहे, विदेशों में प्रवास करते हुये भी जिन्होंने अत्यन्त अद्भुत कार्य किया, जिन की ओजस्वी वाणी को सुनकर विरोधीवर्ग सदा बहुत कांपने लगता था, ऐसे कुशाग्रबुद्धि लाला लाजपतराय जी को हम भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं।

आसीद् यः प्रथितः समस्तभुवने पञ्चाम्बुसत्केसरी,
जज्वालोरसि यस्य पापदहनः, स्वातन्त्र्यवह्निः सदा।
आङ्ग्लानां निशितैरतीव विषमैर्यष्टिप्रहारैः क्षतं,
लालालाजपतं कुशाग्रधिषणं, भक्त्या नुमस्तं वयम्।।12।।

सारे संसार में जो पंजाब केसरी के नाम से प्रसिद्ध थे, जिन की छाती में पापों को दग्ध करने वाली स्वतन्त्रता की अग्नि सदा जलती रहती थी, अंग्रेजों के अत्यन्त तीक्ष्ण लाठी प्रहारों से चोट खाये हुये कुशाग्रबुद्धि लाला लाजपतराय जी को हम भक्ति-पूर्वक नमस्कार करते हैं।

एको मेऽत्रगुरुस्तपोनिधिदयानन्दो मनीषी महान्,
माताचार्यसमाजनाममहिता, स्वातन्त्र्यसत्स्फूर्तिदा।
इत्थं यो हि जुघोष भक्तिसहितो निर्भीकनेत्रग्रणीः,

लालालाजपतं कुशाग्रधिषणं, भक्त्या नुमस्तं वयम्।।13।।

संसार में मेरे एक ही तप के भण्डार महान् बुद्धिमान् ऋषि दयानन्द जी गुरु हैं और स्वतन्त्रता के लिये उत्तम स्फूर्ति देने वाली आर्य समाज मेरी माता है, इस प्रकार निर्भय नेताओं में श्रेष्ठ जिन महानुभाव ने भक्ति सहित घोषणा की थी ऐसे कुशाग्रबुद्धि लाला लाजपतराय जी को हम भक्ति पूर्वक नमस्कार करते हैं।

देशभक्तो विपिनचन्द्रपालः

(1858-1932 ई.)

विविनचन्द्रपालो महान् देशभक्तः, स्वदेशीयवस्तूपयोगोपदेष्टा।
स्ववाचोग्रया कम्पयन् देशशत्रून्, न विस्मर्त्तुमर्हः कदाचित्सुवाग्मी।।114।।

स्वदेशी वस्तुओं के ही उपयोग का सदा उपदेश देने वाले श्री विपिनचन्द्रपाल महान् देशभक्त थे जो अपनी उग्र वाणी से देश के शत्रुओं को कंपा देते थे। वे अत्यन्त प्रभावशाली उत्तम वक्ता कभी भुलाने योग्य नहीं।

बाललालपालनाम्नी देशनायकत्रयी।
भारते स्वराष्ट्रनौका-कर्णधारतामगात्।।15।।

बाल(श्री बाल गंगाधर तिलक)लाल(लाला लाजपतराय)और पाल (श्री विपिनचन्द्रपाल)ये तीन देश के नेता, भारत की नौका के कर्णधार थे।

यातना अनेकरूपाः सा प्रसेहेऽहर्निशम्
किन्तु राष्ट्रियध्वजाया गौरवं ह्यरक्षयत्।।16।।

इन तीनों ने अनेक प्रकार के कष्टों को दिन रात सहन किया किन्तु राष्ट्रिय ध्वजा के गौरव की सदा रक्षा की।

सादरं वयं स्मरामोऽतस्त्रिमूर्तिं स्वर्गताम्।
यत्प्रतापाद् राष्ट्रवादो भारते प्रसृतिं गतः।।17।।

इसलिये दिवंगत इस त्रिमूर्ति को हम सादर सहित स्मरण करते हैं जिसके प्रताप से भारत में राष्ट्रीयता प्रसार को प्राप्त हुई।

भारतभूषणं मदनमोहनमालवीयः
(1861-1946 ई.)

सुशीलः सुवाग्मी विपश्चिन्मनस्वी, स्वदेशस्य सेवारतोऽसौ यशस्वी।
सुशिक्षाप्रसारे सदा दत्तचित्तो, मनोमोहनो मालवीयः प्रशस्तः।।18।।

सुशील, उत्तम प्रभावशाली वक्ता, विद्वान्, विचारशील, स्वदेश सेवा में तत्पर, कीर्तिशाली, अच्छी शिक्षा के प्रसार में सदा दत्तचित्त पं. मदनमोहन जी मालवीय प्रशंसनीय हैं।

शुभं विश्वविद्यालयं यो हि काश्यां, मुदा स्थापयामास यत्नेन धीरः।
विरोधं सदाऽन्यायचक्रस्य चक्रे, मनोमोहनो मालवीयः प्रशस्यः।।19।।

जिस धीर ने बड़े यत्न से प्रसन्नता पूर्वक काशी में शुभ हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की, जिन्होंने अन्याय चक्र का सदा विरोध

किया, ऐसे पं. मदनमोहन जी मालवीय प्रशंसनीय हैं।

त्रिवारं हि निर्वाचितो यः प्रधानः, समेषां स्वराष्ट्रस्थितानां सभायाः।
यदीया गिरो मोहयन्ति स्म सर्वान्, मनोमोहनो मालवीयः स वन्द्यः।।20।।

जो तीन वार राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के प्रधान चुने गये, जिन की वाणी सब को मोहित कर देती थी, ऐसे पं. मदनमोहन जी मालवीय प्रशंसनीय हैं।

भवेद् राष्ट्रभाषा-पदस्था तु हिन्दी, समे मानवाः प्रेमबद्धा भवेयुः।
इदं लक्ष्यमुद्दिश्य कुर्वन् प्रयत्नं, मनोमोहनो मालवीयः प्रशस्यः।।21।।

हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन् हो (राष्ट्रभाषा रूप में स्वीकृत की जाये), सब मनुष्य परस्पर प्रेम बद्ध हों इस उद्देश्य से प्रयत्न करते हुये पं. मदनमोहन जी मालवीय प्रशंसनीय हैं।

भृशं रूढिवादी पुराणादिभक्तः, मुदाऽस्पृश्यतोन्मूलने किन्तु सक्तः।
स्वजातेः स्वदेशस्य चिन्तानिमग्नो, मनोमोहनो मालवीय नमस्यः।।22।।

पुराणादि भक्त और बहुत रूढिवादी होते हुए भी जो प्रसन्नता से अस्पृश्यता के निवारण में तत्पर थे, जिनको अपनी आर्य-जाति और देश की चिन्ता सदा रहती थी, ऐसे पं. मदनमोहन जी मालवीय प्रशंसनीय है।

न वेषं स्वकीयं जहौ यः कदाचित्,न वा संस्कृतिं भारतीयां कदाचित्।
सुशिक्षादिकार्यार्थभिक्षाप्रवीणो, मनोमोहनो मालवीयो नमस्यः।।23।।

जिन्होंने अपने स्वदेशी वेष और अपनी भारतीय संस्कृति का भी कभी परित्याग नहीं किया, जो उत्तम शिक्षा-प्रसारादि कर्मों के लिये भिक्षा मांगने में अत्यन्त निपुण थे, ऐसे पं. मदनमोहन जी मालवीय नमस्कार करने योग्य हैं।

यस्मिन्न मोहो न मदो न लोभः, कामादिदुष्टैर्व्यसनैर्विहीनः।
माधुर्यमूर्तिं तमजातशत्रुं, श्रीमालवीयं विनयेन नौमि।।24।।

जिनमें न मद था, न मोह था, न लोभ था, जो कामादि दुष्ट व्यसनों

से रहित थे। ऐसे माधुर्यमूर्ति अजात शत्रु पं. मदनमोहन जी मालवीय को मैं विनय पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

विद्याप्रसारे सततं प्रसक्तं, देवेशभक्तं विषयेष्वसक्तम्।
परोपकारेऽतिशयानुरक्तं, तं मालवीयं विनयेन नौमि।।25।।

विद्या प्रसार में निरन्तर तत्पर, परमेश्वर के भक्त, विषयों में अनासक्त, प. मदनमोहन जी मालवीय को विनयपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

देशबन्धुश्चित्तरञ्जनदासः
(1882- 1925 ई०)

प्राज्ञः सुदक्षो विधिशास्त्रवेत्ता बुद्ध्यारविन्दादिकबन्धछेत्ता।
विरोधिवर्गस्य धिया विजेता श्री देशबन्धुः सकलैर्नमस्यः।।26।।

जो बुद्धिमान् अतिचतुर विधिशास्त्र (कानून) के जानने वाले थे, बुद्धि के प्रभाव से जिन्होंने तर्क करके श्री अरविन्द आदि को बन्धन से मुक्त कराया, वे बुद्धि-बल से विरोधियों के वर्ग को जीतने वाले देशबन्धु श्री चित्तरंजनदास सब के लिए नमस्कार करने योग्य थे।

स्वातन्त्र्यसंग्रामविनायको यस्त्यागं विधायात्यधिकं बभूव।
तं वाग्मिवर्यं विभयं प्रगल्भं, श्री देशबन्धुं मुदितो नमामि।।27।।

जो बहुत त्याग कर के स्वतन्त्रता संग्राम के एक उच्चनेता बन गये थे, उन उत्तम वक्ताओं में श्रेष्ठ, निर्भय, साहसी श्री देशबन्धु चित्तरंजनदास को मैं प्रसन्नता पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

निर्वाचितं राष्ट्रमहासभाया अध्यक्षरूपेण गयाप्रदेशे।
स्वराज्यपक्षस्य विनायकं तं श्रीदेशबन्धुं मुदितो नमामि।।28।।

जिन्हें राष्ट्रीय महासभा(कांग्रेस)के सन् 1922 के गया अधिवेशन के लिये अध्यक्ष चुना गया था उन स्वराज्य दल के उच्चनेता श्री देशबन्धु चित्तरंजनदास को मैं प्रसन्नता पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

कविं प्रशस्तं परमेशभक्तं दयार्द्रचित्तं शुभभावयुक्तम्।
सुभाषचन्द्रस्य सुशिक्षकं तं श्री देशबन्धुं मुदितो नमामि।।29।।

उत्तम कवि, परमेश्वर के भक्त, दयालु चित्त वाले उत्तम भावों से युक्त नेता श्री सुभाषचन्द्र जी के शिक्षक उन देशबन्धु श्री चित्तरंजनदास जी को मैं प्रसन्नता पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

जनमान्यनेता सुभाषचन्द्रः
(23 जनवरी 1897-18 अगस्त 1945 ई०)

स्वातन्त्र्यवह्निर्हृदये यदीये, दीप्तोऽभवद् दास्यविनाशकारी।
तं त्यागिनं तापसमप्रमत्तं सन्नायकं नौमि सुभाषचन्द्रम्।।30।।

जिन के हृदय में दासता का नाश करने वाली स्वतन्त्रता की अग्नि प्रज्वलित थी, ऐसे त्यागी, तपस्वी, प्रमाद-रहित, उत्तम नेता श्री सुभाषचन्द्र जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

यः क्रान्तिकारी विषयं स्वतन्त्रं दिवानिशं द्रष्टुमिहातुरोऽभूत्।
सुघोरकष्टानि च यः प्रसेहे तन्नायकं नौमि सुभाषचन्द्रम्।।31।।

जो क्रान्तिकारी अपने देश को स्वतन्त्र देखने के लिये दिन रात व्याकुल थे, इसके लिए जिन्होंने भयंकर कष्ट भी सहन किये, ऐसे उत्तम नेता सुभाष जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

गत्वा विदेशेषु च यो नयज्ञः स्वतन्त्रसेनां प्रचकार दक्षाम्।
यूनां हृदां योऽभवदेकसम्राट्, तं नायकं नौमि सुभाषचन्द्रम्।।32।।

जिस राजनीतिज्ञ ने विदेशों में जाकर चतुर स्वतन्त्र भारत-सेना का संगठन किया, उन युवक-हृदय-सम्राट नेता श्री सुभाषचन्द्र जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

अद्यापि यन्नाम्नि गृहीतमात्रे, चैतन्यमाविर्भवति प्रसुप्तम्।
नृकेसरी योऽमरनामधेयः, तं नायकं नौमि सुभाषचन्द्रम्।।33।।

अब भी जिनका नाम लेते ही सोई हुई चेतना फिर प्रकट होने लगती है, ऐसे अमर नाम वाले पुरुष सिंह नेता श्री सुभाष चन्द्र जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

न ज्ञायते यद्विषये स लीनो, ब्रह्मण्यनन्ते क्व नु वा निलीनः।
स्वातन्त्र्यसत्साहसमूर्तरूपं, तं नायकं नौमि सुभाषचन्द्रम्।।34।।

जिन के विषय में अब भी पूर्ण निश्चय से यह ज्ञात नहीं कि वे अनन्त ब्रह्म में लीन हो गये (परलोक सिधार गये) अथवा कहीं गुप्त रूप में विद्यमान हैं (जैसे कि उन के कई सम्बन्धियों और अनुयायियों का विश्वास है) स्वतन्त्रता और उत्तम साहस के मूर्तरूप नेता उन श्री सुभाष चन्द्र जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

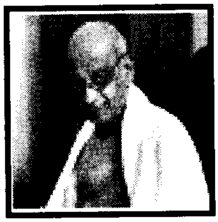

लोहपुरुषो वल्लभभाई पटेलः
(31 जनवरी 1875–16 दिसम्बर 1950 ई०)

आसीत् कुशाग्रा खलु यस्य बुद्धिः,यो राजनीतिज्ञशिरोमणिः सन्।
राष्ट्रस्य चक्रेऽद्भुतकार्यजातं मान्यं पटेलं तमहं नमामि।।35।।

जिन की बुद्धि कुशाग्र थी और राजनीतिज्ञ–शिरोमणि होकर जिन्होंने राष्ट्र के लिये अद्भुत कार्य करके दिखाये, ऐसे माननीय पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

राष्ट्रं विभक्तं परेदशजानां, धौर्त्येन खण्डेषु परश्शतेषु।
दाक्ष्येण चक्रे पनुरेकरूपं, मान्यं पटेलं तमहं नमामि।।36।।

विदेशियों की धूर्तता से सैकड़ों टुकड़ों में विभक्त राष्ट्र को जिन्होंने अपनी कुशलता से फिर एक रूप कर दिया ऐसे माननीय पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

चकम्पिरे यस्य पुरो विपक्षाः, न वीरसिंहस्य पुरोऽपि तस्थुः।
उग्रं खलेष्वेव न जातु सत्सु, मान्यं पटेलं तमहं नमामि।।37।।

जिन वीरसिंह के आगे विरोधी लोग काँपते थे और उन के सामने खड़े भी न हो सकते थे, उन दुष्टों के लिये ही भयंकर न कि सज्जनों के लिए, ऐसे माननीय पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

आसीदुदारो न परन्तु नम्रो, योऽन्यायिनामत्र पुरो जनानाम्।
नृकेसरी लोहनरः प्रसिद्धो, यस्तं पटेलं विनतो नमामि।।38।।

जो उदार थे किन्तु जो अन्यायी मनुष्यों के आगे कभी झुकने वाले न थे, ऐसे नरकेसरी लोह पुरुष के नाम से प्रसिद्ध श्री पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

गान्धी महात्मानमतीव मान्यं, मेने परं यो न जहौ विवेकम्।
राष्ट्रस्य दृष्ट्या हितमाचरन्तं, मान्यं पटेलं तमहं नमामि।।39।।

जो महात्मा गान्धी जी को अत्यन्त माननीय समझते थे किन्तु जो अपने विवेक का कभी परित्याग न करते थे राष्ट्र की दृष्टि से हितकारक कार्यों को सदा करने वाले उन माननीय पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

आसीद् विशालं हृदयं यदीयं, सहानुभूत्या परिपूरितं यत्।
श्रद्धास्पदं तं बहुसंख्यकानां, नृणां पटेलं विनतो नमामि।।40।।

जिन का हृदय बड़ा विशाल तथा सहानुभूति से भरा हुआ था, लोगों की बहुत बड़ी संख्या के श्रद्धापात्र उन मान्य पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

दृष्ट्वा निजामं मदमत्तमित्थं, स्वतन्त्रसाम्राज्यमभीप्समानम्।
दिनत्रये सैनिकशक्तियोगात्, संत्रासयन्तं नृमणिं नमामि।।41।।

हैदराबाद निजाम को मदमत्त और स्वतन्त्र साम्राज्य की इच्छा करने वाला देख कर जिन्होंने सैनिक शक्ति के प्रयोग द्वारा तीन दिनों में सन्त्रस्त कर दिया, ऐसे मनुष्यों में मणि के समान माननीय पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

शूरं क्रियास्वेव न वाक्प्रसारे, काश्मीरराज्ये निजसैन्यवर्गम्।
विमानमार्गेण विना विलम्बं, संप्रेषयन्तं नृमणिं नमामि।।42।।

क्रिया में (न कि बातें बनाने में) शूर, कश्मीर राज्य में विमान द्वारा विना विलम्ब के अतिशीघ्र अपनी सेना को भिजवाने वाले मनुष्यों में मणि के समान श्रेष्ठ पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

चकार कार्यं न भृशं जगाद, जगाद यत् तद्धयविधृष्यमासीत्।
देवे परां भक्तिमिहादधानं, मान्यं पटेलं विनतो नमामि।।43।।

जो खूब काम करते थे किन्तु अधिक बोलते न थे, पर जो कुछ बोलते थे उसे कोई दबा न सकता था, ऐसे परमेश्वर में उत्तम भक्ति को धारण करने वाले माननीय पटेल जी को मैं विनय से नमस्कार करता हूँ।

चाणक्यतुल्यो नयशास्त्रदक्षो, यो मंस्यते सर्वजनैर्जगत्याम्।
राष्ट्रस्य निर्मातृवरेषु गण्यं, मान्यं पटेलं विनतो नमामि।।44।।

जिन को संसार में सब मनुष्य चाणक्य के समान नीति शास्त्र में निपुण मानेंगे, भारतराष्ट्र का निर्माण करने वालों में श्रेष्ठ गिने जाने वाले उन माननीय पटेल जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

बङ्गकेसरी श्यामाप्रसादमुखोपाध्यायः
(1901-1953 ई०)

यो निर्भयः सन् विचचार लोके, राष्ट्रे परां भक्तिमिहादधानः।
सुवाग्मिनं तं स्फुटवक्तृवर्यं, श्यामाप्रसादाख्यसुवीरमीडे।।45।।

जो राष्ट्र में उत्तम भक्ति को धारण करते हुए निर्भय होकर लोक में विचरण करते थे ऐसे प्रभावशाली वक्ता और स्पष्ट वक्ताओं में श्रेष्ठ डॉ. श्यामाप्रसाद जी मुखेपाध्याय नामक उत्तम वीर की मैं स्तुति करता हूँ।

केन्द्रीयमन्त्रित्वमलञ्चकार, विचारभेदाद् विजहौ पदं तत्।
आसीत् सुयोग्यो नरकेसरी यः, श्यामाप्रसादाख्यसुवीरमीडे।।46।।

जो केन्द्रीय शासन में उद्योग मन्त्री थे, किन्तु विचारभेद के कारण जिन्होंने उस पद से त्यागपत्र दे दिया, जो सुयोग्य पुरुषसिंह थे ऐसे डॉ. श्यामा प्रसाद जी नामक उत्तम वीर की मैं स्तुति करता हूँ।

आसीद् विरोधी परितोषनीत्याः, न्यायस्य पक्षं परिपोषयन् यः।

प्राचीनसत्संस्कृतिपोषकं तं, श्यामाप्रसादाख्यसुवीरमीडे।।47।।

जो मुस्लिम परितोषिणी नीति के विरोधी और न्याय का समर्थन करने वाले थे, उन प्राचीन भारतीय श्रेष्ठ संस्कृति के पोषक डॉ. श्यामाप्रसाद जी नामक उत्तम वीर की मैं स्तुति करता हूँ।

अकम्पयद् यस्य वचो विपक्षान् निर्भीकमुक्तं बहुयुक्तियुक्तम्।
प्रवर्तकं तं जनसंघकस्य श्यामाप्रसादाख्यसुवीरमीडे।।48।।

जिनका निर्भयता पूर्वक कहा गया अनेक युक्तियों से युक्त वचन विरोधियों को कम्पित कर देता था, उन जनसंघ के प्रवर्तक डॉ. श्यामाप्रसाद नामक उत्तम वीर की मैं स्तुति करता हूँ।

काश्मीरराज्यं ननु भारमाङ्गं भवेद् विभक्तं नहि तत्कदाचित्।
बन्धे स्वदेहस्य बलिं ददानं, श्यामाप्रसादाख्यसुवीरमीडे।।49।।

कश्मीर राज्य निश्चय से भारत का ही एक अङ्ग है वह कभी भारत से पृथक् न हो जाए, और न उसके टुकड़े किये जाएं, नजरबन्दी की अवस्था में ही अपने शरीर की बलि देने वाले डॉ. श्यामाप्रसाद नामक उत्तम वीर की मैं स्तुति करता हूँ।

विविधशास्त्रविशारदो भीमरावः
(डॉ. अम्बेदकरः)
(14 अप्रैल 1897 - 6 दिसम्बर 1953 ई०)

हीनेऽन्वये जात इह स्वकीयैर्गुणैर्महत् प्राप पदं य उच्चम्।
प्राज्ञो विपश्चिद् बुधमानकर्ता स्तुत्यो विधिज्ञाग्रणिभीमरावः॥50॥

एक नीच कुल में जन्म लेकर भी जो अपने गुणों से ऊँचे और बड़े पद को प्राप्त हो गये, वे बुद्धिमान्, विद्वान्, बुद्धिमानों का मान करने वाले, विधिशास्त्र (कानून) जानने वालों में मुखिया डॉ. भीमराव अम्बेदकर प्रशंसा करने योग्य हैं।

आसन् जना ये दलिता नितान्तं, तिरस्कृता जात्यभिमानमत्तैः।
तान् शिक्षयित्वा विबुधानकार्षीत्, स्तुत्यो विधिज्ञाग्रणिभीमरावः॥51॥

जो दलित वर्ग के लोग जाति के अभिमान में मस्त लोगों द्वारा बिल्कुल तिरस्कृत थे उनको शिक्षित करके जिसने बुद्धिमान् बना दिया, वे विधिशास्त्र जानने वालों में अग्रगण्य डॉ. भीमराव अम्बेदकर प्रशंसा करने योग्य हैं।

पदं महोच्चं विधिमन्त्रिणो यः, सभाजयन् भारतसंविधाने।
चकार कार्यं सकलैः प्रशस्यं, स्तुत्यो विधिज्ञाग्रणिभीमरावः॥52॥

जिन्होंने भारत के विधिमन्त्री के अत्यन्त उच्च पद को सुशोभित करते हुए, भारत के संविधान बनाने में सब के द्वारा प्रशंसनीय कार्य को कर

दिखाया, ऐसे विधिशास्त्र जानने वालों में अग्रगण्य डॉ. भीराव अम्बेदकर स्तुति करने योग्य हैं।

यो जातिभेदं किल राष्ट्रदृष्ट्या विघातकं निन्द्यमतीव मेने।
प्राचोदयत् तद्विनिवारणाय स्तुत्यो विधिज्ञाग्रणिभीमराव:।।53।।

जो जातिभेद को राष्ट्र की दृष्टि से निश्चय पूर्वक घातक और अत्यन्त निन्दनीय मानते थे और उसके निवारणार्थ लोगों को प्रेरित करते रहते थे, वे विधिशास्त्र जानने वालों में अग्रगण्य डॉ. भीमराव प्रशंसा करने योग्य हैं।

आसीन्नितान्तं सरल: सुविद्वान् चक्रे भृशं य: समयोपयोगम्।
संकल्प आसीत् सुदृढो यदीय: स्तुत्यो विधिज्ञाग्रणिभीमराव:।।54।।

जो बिल्कुल सरल स्वभाव के उत्तम विद्वान् थे और अपने समय का जो खूब अच्छा प्रयोग करते थे, जिनका संकल्प दृढ़ था, ऐसे विधि शास्त्र जानने वालों में अग्रगण्य डॉ. भीमराव प्रशंसा करने योग्य हैं।

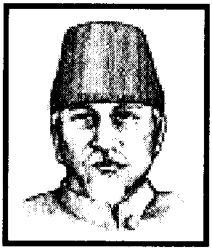

मौलाना अब्बुल-कलाम आजाद:
(1881-22 फरवरी 1958 ई०)

यो राष्ट्रवादी प्रबलो बभूव, तथा च सौहार्दसमर्थकोऽभूत्।
मतोपदेष्टापि भवन्नुदार:, अबुल्कलाम: स किलाभिनन्द्य:।।55।।

जो प्रबल राष्ट्रवादी और इस्लाम के एक बड़े मौलाना होते हुए भी उदार और मित्रभाव के समर्थक थे, वे अब्बुल कलाम आजाद अभिनन्दनीय हैं।

आजादनाम्ना स लिलेख लेखान्, स्वतन्त्रतावाप्तिकृतप्रयत्नः।
स्वातन्त्र्ययुद्धे प्रथिताग्रणीर्यः अबुल्कलामः स किलाभिनन्द्यः।।56।।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए जो यत्नशील थे और आजाद के नाम से युवावस्था में भी लेख लिखते थे, स्वाधीनता के युद्ध में जो प्रसिद्ध नेता थे, वे अब्बुलकलाम आजाद निश्चय से अभिनन्दनीय हैं।

नेत्रग्रणीर्राष्ट्रमहासभायाः प्रवृत्त आन्दोलन उग्ररूपे।
सेहे चिरं बन्धनयातना यः, अबुल्कलामः स किलाभिनन्द्यः।।57।।

जो 'भारत छोड़ो' इत्यादि आन्दोलन के प्रवृत्त होने पर राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के अध्यक्ष के रूप में उच्चनेता थे और जिन्होंने चिरकाल तक नजरबन्दी के कष्टों को सहन किया, वे अब्बुलकलाम आजाद निश्चय से अभिनन्दनीय हैं।

प्रलोभानानां न पुरो नमाम, नैवापवादस्य भयेन भीतः।
तस्थावकम्प्यो हिमवत्समो यः, अबुल्कलामः स किलाभिनन्द्यः।।58।।

जो मुस्लिम लीग के दिये प्रलोभनों के आगे कभी नहीं झुके और न उनकी निन्दा के भय से कभी डरे हिमालय के समान जो अविचल व अडिग रहे, वे अबुल कलाम आजाद निश्चय से अभिनन्दनीय हैं।

आसीत्सुधीरः कुशलो नयज्ञः शिक्षासुविज्ञानविभागमन्त्री।
कुरानभाष्यं विदधेऽत्युदारम् अबुल्कलामः स किलाभिनन्द्यः।।59।।

जो उत्तम धैर्यशाली चतुर राजनीतिज्ञ और शिक्षा तथा विज्ञान विभाग के केन्द्रीय मन्त्री थे, जिन्होंने कुरान का उदारतापूर्ण भाष्य किया, वे मौलाना अबुल कलाम आजाद निश्चय से अभिनन्दनीय हैं।

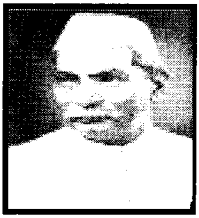

अजातशत्रू राष्ट्रपती राजेन्द्रप्रसादः

(3 दिसम्बर 1884-28 फरवरी 1963 ई०)

शुद्धं यस्य सुनिर्मलं च सरलं, शान्त्या युतं जीवितम्,
भक्तिर्यस्य पराचला च विमला, राजाधिराजे हरौ।
सत्याहिंसकतादिसात्त्विकगुणैः, यो राजते सर्वदा
जीव्याद् राष्ट्रपतिः शताधिकसमाः, सर्वा प्रजा रञ्जनम् ।।61।।

जिनका जीवन अत्यन्त पवित्र, सरल और शान्ति से युक्त है, जिनकी राजाधिराज परमेश्वर में परम दृढ़ शुद्ध भक्ति है, जो सत्य, अहिंसा आदि सात्त्विक गुणों से सदा शोभायमान हैं ऐसे मान्य राष्ट्रपति जी सारी प्रजाओं का रञ्जन करते हुए सौ से अधिक वर्षो तक सुखपूर्वक जीएं।

यो विद्वान् प्रतिभानवान् सुचरितः, सत्कार्यनिष्ठः सदा,
सर्वेषां हितमेव शुद्धमनसा, यः साधयन् वर्तते ।
मूर्तं रूपमिवार्यधीरविदुषां, सत्संस्कृतेर्यः सुधीः ,
जीव्याद् राष्ट्रपतिः शताधिकसमाः, सर्वान् सदानन्दयन्।।61।।

जो प्रतिभाशाली सच्चरित्र विद्वान् सदा उत्तम कार्यो के करने में तत्पर हैं, जो शुद्ध मन से सदा सब के हित को ही साधते रहते हैं, जो उत्तम बुद्धिमान् धीर आर्य विद्वानों की श्रेष्ठ संस्कृति का मानो मूर्तरूप हैं, ऐसे राष्ट्रपति जी सदा सबको आनन्दित करते हुए सौ से अधिक वर्षों तक सुख पूर्वक जीएं।

स्थितः सर्वोच्चे यः, पद इह तथाप्यस्ति विनतः,
न दर्पक्रोधाद्याः, क्वचिदपि तु यस्मिन् बुधजने।
यदीयं सौजन्यं, सकलमनुजादर्शसदृशं
स राजेन्द्रो जीव्यात् सुजनमहितो वर्षशतकम्।।62।।

जो सर्वोच्चपद में स्थित होते हुए भी नम्र हैं, जिन बुद्धिमान् के अन्दर अभिमान, क्रोध इत्यादि का सर्वथा अभाव है, जिनकी सज्जनता सब मनुष्यों के लिये आदर्श रूप है, सज्जनों द्वारा पूजित राजेन्द्र प्रसाद जी सौ वर्ष तक जीएं।

दयालुः स्यादीशः सततमिह भक्ते हितरते
स दद्यादारोग्यं सकलविधवृद्धिं सुखयुताम्।
प्रतीक्ष्यः सर्वेषाम्, अविदितरिपुर्दुष्टदमनः,
स राजेन्द्रो जीव्यात् सुकलमहितो वर्षशतकम्।।63।।

भगवान् अपने सबके हित में तत्पर भक्त पर निरन्तर दयालु हों, वे उन्हें आरोग्य सुख और सब प्रकार की समृद्धि प्रदान करें। सबके लिये पूजनीय, अजातशत्रु, दुष्टों को दमन करने वाले, सब द्वारा सत्कृत मान्य राजेन्द्र प्रसाद जी सौ वर्षों तक जीएं।

1. जन्मदिवससमुपलक्ष्य निर्मितश्लोकाः।

जगद्विख्यात-दार्शनिको राधाकृष्णः
(5 दिसम्बर 1888-17 अप्रैल 1975 ई०)

यो वाग्मिप्रवरोऽखिलेऽपिभुवने विख्यातकीर्तिः सुधीः,
तत्त्वज्ञानिशिरोमणिर्बुधजनैर्राष्ट्रौपपत्ये वृतः।
प्राचीनां सरणीं सुसंस्कृतगिरं यः श्लाघतेऽहर्निशम्,
राधाकृष्णमहोदयो विजयते देशावतंसो महान् ।।64।।

जो उत्तम वक्ताओं में श्रेष्ठ, सारे संसार में प्रसिद्ध यशस्वी बुद्धिमान्, तत्त्व-ज्ञानियों के सिरमौर, बुद्धिमानों द्वारा भारत राष्ट्र के उपपति के रूप में चुने गये, जो प्राचीन भारतीय संस्कृति और सस्कृत भाषा की दिनरात प्रशंसा करते हैं, उन देश के महान् भूषण डॉ. राधाकृष्ण जी की सदा विजय हो।

प्रीतिर्यस्य हि भारतस्य सततं, प्राचीन सत्संस्कृतौ,
सन्देशं वितरन् सुशान्तिजनकं, चास्ते य आध्यात्मिकम्।
योऽसौ दार्शनिकाग्रणीः सुविदितो मूर्धन्यभूतः सतां,
राधाकृष्णमहोदयो विजयते देशावतंसो महान् ।।65।।

जिनका भारत की प्राचीन उत्तम संस्कृति से निरन्तर प्रेम है, जो उत्तम शान्ति के उत्पादक आध्यात्मिक सन्देश को सदा देते रहते हैं, जो दार्शनिकों में श्रेष्ठ, सज्जनों में सुप्रसिद्ध शिरोमणि हैं, ऐसे देश के महान् भूषण डॉ. राधाकृष्ण जी की सदा विजय हो।

माननीयो जवाहरलालः

(14 नवम्बर 1889-27 मई 1964 ई०)

यस्य जन्म सुगौरवान्वितवंश आसीदृद्धियुक्ते,
मोतिलालस्यात्मजो यः शिक्षितो बाल्ये विदेशे।
यस्य कीर्ती राजते हि सिता तता देशे विदेशे,
श्रीजवाहरलाल ईड्यो नेहरूवंशावतंसः।।66।।

जिनका जन्म एक अत्यन्त समृद्ध प्रतिष्ठित कुल में हुआ, जो पं. मोतीलाल जी के सुपुत्र हैं और जिन्होंने बाल्यावस्था में विदेश में शिक्षा ग्रहण की जिनकी उज्जवल कीर्ति देश विदेश में सर्वत्र फैली हुई है, ऐसे नेहरू कुल के भूषण श्री जवाहरलाल जी प्रशंसा करने योग्य हैं।

लालितो मातापितृभ्यां चक्रवर्तिसुतेन तुल्यम्,
पालितश्चेङ्गलैण्डदेशे सर्वथैवांग्लेन तुल्यम्।
दीक्षितः स्वातन्त्र्ययुद्धे देवगान्धीसङ्गतो यः,
श्रीजवाहरलाल ईड्यो नेहरूवंशावतंसः।।67।।

जिनका माता पिता ने चक्रवर्ती के पुत्र के समान लाड़ प्यार से पालन किया और इङ्गलैंड में बिल्कुल अंग्रेज के समान जिन्हें पाला-पोसा गया । पर देव पुरुष महात्मा गान्धी के सङ्ग से जिनको स्वतन्त्रता युद्ध में दीक्षा मिली, ऐसे नेहरू कुल के भूषण श्री जवाहरलाल जी प्रशंसा करने योग्य हैं।

भारतीयं राष्ट्रमेतत् संविधातुं हि स्वतन्त्रं,
यः प्रसेहे यातना नानाविधाः कारागृहेषु।
वर्तते सौभाग्यतो यो मन्त्रिमुख्यो भारतस्य
श्रीजवाहरलाल ईड्यो नेहरूवंशावतंसः।।68।।

इस भारतीय राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने के लिये जेलों में जिन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट उठाए, जो सौभाग्य से अब भारत के प्रधान मन्त्री के पद को सुशोभित कर रहे हैं ऐसे पं. जवाहरलाल जी नेहरू प्रशंसनीय हैं।

राष्ट्रहितचिन्तारतो रात्रिन्दिवं यो देशभक्तः,
शिल्पविज्ञानादिदृष्ट्या भारताभ्युदये प्रसक्तः।
विश्वशान्तिस्थापना स्यादीदृशे विषयेऽनुरक्तः,
श्रीजवाहरलाल ईड्यो नेहरूवंशावतंसः।।69।।

जो देश भक्त रात दिन राष्ट्र के हित की चिन्ता में तत्पर हैं, जो भारत को शिल्प विज्ञान आदि दृष्टि से उन्नत करने में विशेष आसक्ति रखते हैं, संसार में शान्ति की स्थापना हो ऐसे विषयों में जिनका विशेष प्रेम है, ऐसे पं. जवाहरलाल जी नेहरू प्रशंसा करने योग्य हैं।

स्पष्टवक्ता राजनीतिज्ञाग्रणीर्लोकेऽखिले,
शान्तिमानेतुं जगत्यां यः सदा यततेऽनिशम्।
यस्य हेतोर्भारतं मान्यं पदं प्राप्तं भुवि ,
श्रीजवाहरलालसंज्ञं तं बुधं मुदिता नुमः ।।70।।

जो स्पष्ट वक्ता है, सारे संसार में राजनीति जानने वालों के जो मुखिया माने जाते हैं, जो दिन-रात जगत् में शान्ति को लाने का प्रयत्न करते रहते हैं, जिनके कारण भारत ने भूमि में मानयुक्त स्थान को प्राप्त

किया है, उन जवाहरलाल जी नामक बुद्धिमान् की हम प्रसन्नतापूर्वक स्तुति करते हैं।

वर्तते दृष्टिर्विशाला यस्य लोकैक्यान्विता,
द्वेष्टि निखिलेष्वेव रूपेष्वत्र यः सङ्कीर्णताम्।
यो दिदृक्षुः सर्वजातीयेषु सौहार्द सदा,
श्रीजवाहरलालसंज्ञं तं बुधं मुदिता नुमः ॥71॥

जिनकी विश्व को एक परिवार समझने की भावना से युक्त विशाल दृष्टि है, जो सब रूपों में संकुचित भावना से द्वेष करते अथवा उसे नापसन्द करते हैं, जो सब जातियों के लोगों में सदा मित्र भाव को ही देखना चाहते हैं ऐसे पं. जवाहरलाल जी नामक बुद्धिमान् की हम प्रसन्नतापूर्वक स्तुति करते हैं।

दीर्घमायुः शुद्धबुद्धिं, देवदेवेशः सदा,
कीर्तिमारोग्यं प्रदद्याद्, देशनेत्रे सन्ततम्।
स्यात्समृद्धं राष्ट्रमेतत्, सर्वसुखभागुत्तमं,
श्रीजवाहरलालहेतोः प्रार्थयन्तस्तं नुमः ॥72॥

देवाधिदेव परमेश्वर, देश के नेता श्री जवाहरलाल जी को दीर्घ आयु, शुद्ध बुद्धि, कीर्ति और आरोग्य निरन्तर प्रदान करें, जिससे उनके नेतृत्व में यह हमारा राष्ट्र सब प्रकार से सुखयुक्त, उत्तम और समृद्ध बने। श्री जवाहरलाल जी के लिये ऐसी प्रार्थना करते हुए हम उन को नमस्कार करते हैं।

राजर्षिः श्रद्धेयः पुरुषोत्तमदासः
(1अगस्त 1882-1 जुलाई 1962 ई.)

निर्भीकतामिह दधन्निजशासनस्य व्यक्तं करोति खलु सत्यरतः समीक्षाम्।
सत्संस्कृतेः प्रबलपोषणतत्परं तं,मान्यं नमानि पुरुषोत्तमदासवीरम् ।।73।।

जो सत्य में तत्पर निर्भय होकर अपनी सरकार की भी निर्भयता को धारण करते हुए स्पष्ट समालोचना करते हैं, उन उत्तम भारतीय संस्कृति के प्रबल पोषक मान्य श्री पुरुषोत्तमदास जी नामक वीर को मैं नमस्कार करता हूँ।

अध्यक्षरूप इह राष्ट्रमहासभाया, योऽपोषयत् किल सदोज्ज्वलराष्ट्रवादम्।
तत्कारणाच्च दलनायककोपपात्रं,मान्यं नमामि पुरुषोत्तमदासवीरम् ।।74।।

जो सन् 1850 में राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के प्रधान के रूप में भी सदा विशुद्ध राष्ट्रीयता का समर्थन करते थे और इसके कारण जो कुछ दल के नेताओं के कोप-पात्र बन गये ऐसे मान्य पुरुषोत्तमदास जी नामक वीर को मैं नमस्कार करता हूँ।

यज्जीवितं सरलताप्रतिमानरूपं, किन्तूच्चभावभरितं हि मनो यदीयम्।
जात्या न वर्णमिह कर्मभिरामनन्तं, मान्यं नमामि पुरुषोत्तमदासवीरम्।।75।।

जिन का जीवन सरलता वा सादगी की मूर्ति है किन्तु जिनका मन उच्च भावों से भरपूर है, जो वर्णव्यस्था को जन्म से नहीं, किन्तु कर्मों से मानते हैं ऐसे मान्य पुरुषोत्तमदास जी नामक वीर को मैं नमस्कार करता हूँ।

हिन्दीतिनाम्नी जनभारती या, सोद्घोषिता स्यान्निजराजभाषा।
निरन्तरं संसदि चेष्टमानं, नमामि मान्यं पुरुषोत्तमं तम् ॥76॥

हिन्दी के नाम से प्रसिद्ध जो लोकभाषा है वह अपने देश शीघ्र राजभाषा घोषित कर दी जाए, इसके लिये लोक सभादि में निरन्तर चेष्टा करने वाले मान्य श्री पुरुषोत्तमदास जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

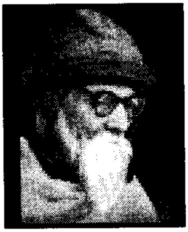

आचार्यो विनायकः (विनोबा भावे)
(11 सितम्बर 1894-15 नवम्बर 1982 ई०)

भूदानाख्यमहाध्वर*स्य भुवने, योऽस्तीह नेता महान्,
देवोपास्तिपरः श्रुतिं सुसुखदां, यो मन्यते मातरम्।
दीनोद्धाररतस्तपस्विषुवरो ऽहिंसाव्रतो सात्त्विक
मान्याचार्यविनायको विजयतेऽसौ कर्मयोगी महान् ॥77॥

जो भूदान नामक महायज्ञ के महान् नेता है, जो परमेश्वर की उपासना करने वाले और श्रुति (वेद) को उत्तम सुख देने वाली माता मानने वाले हैं, दीनों के उद्धार में तत्पर, तपस्वियों में उत्तम, सात्त्विक, अहिंसाव्रत धारी उन महान् कर्मयोगी मान्य आचार्य विनायक (विनोबा भावे) जी की जय हो।

1. *अध्वरस्य = यज्ञस्य।

निर्भीकश्चरतीह यो हि सकले, देशे महाकोविदः*,

स्वीयं नैव सुखं कदापि गणयन्, नक्तं न पश्यन्दिनम्।
पद्भ्यामेव सदा चरन् प्रमुदितः, सेवाव्रतं पालयन्,
मान्याचार्यविनायको विजयतेऽसौ कर्मयांगी महान् ।।78।।

जो महाविद्वान् निर्भय होकर सारे देश में विचरण करते हैं अपने सुख की कभी पर्वाह न करते हुए, न दिन और न रात देखते हुए जो सेवाव्रत का पालन करते हुए प्रसन्नता पूर्वक सदा पैदल यात्रा करते हैं, ऐसे महान् कर्मयोगी मान्य आचार्य विनायक (विनोबा भावे) जी की जय हो।

येनाचारि सदैव शुद्धमनसा सद् ब्रह्मचर्यव्रतं,
यः शास्त्राध्ययनं मतिमान्, भाषा ग्रनेकाः पठन्।
शुद्धं जीवितमेव यस्य निखिलं सद्यज्ञरूपं महद्,
मान्याचार्यविनायको विजयतेऽसौ कर्मयोगी महान्।।79।।

जिन्होंने शुद्ध मन से सदा ब्रह्मचर्य के उत्तम व्रत को धारण किया हुआ है, जिन बुद्धिमान् ने अनेक भाषाओं का ज्ञान करते हुए शास्त्रों का अध्ययन किया है, जिनका सारा पवित्र जीवन ही उत्तम महान् यज्ञ रूप है, ऐसे महान् कर्मयोगी मान्य आचार्य विनोबा जी की जय हो।

यो गान्धीव्रतभृत् सदैव सुमनाः, सम्पूरयंस्तत् कृतं,
कार्यं भर्त्सयतीह लक्ष्यविमुखानप्युत्तमान् शासकान्।
पाश्चात्यैर्विबुधैः मतः प्रतिनिधिर्देशस्य सत्संस्कृतेः,
मान्याचार्यविनायको विजयतेऽसौ कर्मयोगी महान्।।80।।

जो महात्मा गांधी जी के व्रत को धारण करते हुए सदा प्रसन्नता पूर्वक उनके प्रारम्भ किये हुए कर्म को पूरा करते हैं और लक्ष्य से विमुख उच्च शासकों की भी जो भर्त्सना (डांट-डपट) कर देते हैं, पाश्चात्य

2.* कोविदः = विद्वान्, पण्डित।

बुद्धिमान् भी जिन्हें भारत देश की उत्तम संस्कृति का प्रतिनिधि मानते हैं, ऐसे मान्य आचार्य विनायक (विनोबा भावे) जी की जय हो।

भारतीयस्वातन्त्र्यकर्णधाराः

स्वतन्त्रतेयं सहजोऽधिकारः, लोके मतो मानवमात्रतुल्यः।
श्रमेण लब्धं तपसार्जवेन, स्वातन्त्र्यमेतत् किल रक्षणीयम्।।81।।

स्वतन्त्रता वा स्वराज्य यह संसार में मनुष्य-मात्र का जन्मसिद्ध स्वाभाविक अधिकार माना गया है। परिश्रम, तप तथा सरलता से प्राप्त इस स्वतन्त्रता की हमें निश्चय से रक्षा करनी चाहिए ।

यद् भारतं पद्दलितं विदेशो, समुद्भवैः स्वार्थपरायणैर्वै।
तेनैव लब्धं तपसा स्वराज्यं, सर्वप्रयत्नेन हि रक्षणीयम्।।82।।

जिस भारत को स्वार्थी विदेशियों ने पददलित कर रक्खा था, उसने तप के द्वारा जो स्वराज्य प्राप्त किया है उसकी सब प्रयत्नों से रक्षा करनी चाहिए।

नाना-दयानन्द-पटेल-दादा-सुभाष-गान्धी-तिलकादिवीरैः।
कष्टानि सोढ्वा विकटानि लब्धं, स्वातन्त्र्यमेतत् किल रक्षणीयम्।।83।।

श्री नाना फड़नवीस, ऋषि दयानन्द, दादा भाई नौरोजी, महात्मा गान्धी, लोकमान्य तिलक, विट्ठल भाई तथा सरदार वल्लभभाई पटेल, नेता सुभाषचन्द्र जी आदि वीरों द्वारा अनेक कष्ट सहकर प्राप्त किया हुआ यह स्वराज्य निश्चित रूप से रक्षा करने योग्य है।

ऋषिर्दयानन्दयतिर्युगेऽस्मिन्, स्वराज्यमाहात्म्यमिदं जुघोष ।
विदेशिराज्यं हितकारि चेत्स्यात्, न तत् स्वराज्येन समं कदाचित्।।84।।

ऋषि दयानन्द ने इस युग में स्वराज्य के महत्त्व की इन महत्त्वपूर्ण शब्दों में घोषणा की थी 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये के पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

सर्वं स्वदेशीयपदार्थजातं, जनैः प्रयोज्यं निजराष्ट्रवृद्ध्यै।
वेदादि-शास्त्राणि पुरातनानि,पाठ्यानि रक्ष्या श्रुतिसंस्कृतिश्च।।85।।

ऋषि दयानन्द ने यह भी शिक्षा दी थी कि अपने राष्ट्र की वृद्धि के लिये सबको स्वदेशी पदार्थों का उपयोग करना चाहिये, वेदादि पुरातन शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिये और प्राचीन वैदिक संस्कृति की रक्षा करनी चाहिये।

युगस्य निर्मातृतमः स एव, स्वराज्यमन्त्रस्य स एव दाता।
मान्यः समस्तैरपि सत्यभक्तैः, संशोधकानां प्रथमः स नेता ।।86।।

ऋषि दयानन्द का स्थान इस नवीन युग के निर्माताओं में सबसे उच्च है, वे ही स्वराज्य मन्त्र के देने वाले सुधारक शिरोमणि हैं, अतः सत्य-भक्त सब लोगों को उनका मान करना चाहिये।

श्रीश्यामजी लाजपतप्रतापवारीन्द्र सावर्करभक्तसिंहैः।
भाई हरिश्चन्द्र-बुधारविन्द-यत्नेन लब्धं महितं स्वराज्यम्।।87।।

श्री श्याम जी कृष्णवर्मा, ला. लाजपतराय, राजा महेन्द्र प्रताप, श्री वारीन्द्र कुमार घोष, श्री अरविन्द, भगतसिंह, वीर सावरकर, भाई परमानन्द, पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार इत्यादि के यत्नों के पश्चात् प्राप्त इस स्वराज्य की रक्षा करनी चाहिये।

आजाद-चन्द्रादि-यतीन्द्रदास-रामप्रसादैः सुखदेवयुक्तैः।

स्वकीयरक्तेन सुसिक्त एष, स्वातन्त्र्य-वृक्षः किल वर्धनीयः॥88॥

सर्व श्री चन्द्रशेखर आजाद, यतीन्द्रनाथ दास, रामप्रसाद, सुखदेव राजगुरु आदि ने अपने रुधिर से जिस स्वतन्त्रता वृक्ष को सींचा उसको निश्चय से बढ़ाना चाहिये।

गान्धी महात्माऽसहयोगशस्त्रं, हस्ते जनानां प्रबलं प्रदाय।
सत्यार्जवाहिंसकताबलेन, स्वराज्यमाप्तुं सततं प्रयेते॥89॥

महात्मा गान्धी ने लोगों के हाथों में असहयोग रूप प्रबल अस्त्र देकर सत्य, सरलता और अहिंसा के बल से स्वराज्य प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न किया।

नेता सुभाषोऽप्यकरोत् प्रयत्नं, कर्त्तुं स्वतन्त्रं सकलं स्वदेशम्।
स्वतन्त्रसेनां च चकार यस्यां, स्वदेशभक्ता बहवः समेयुः॥90॥

नेता सुभाषचन्द्र जी ने भी अपने सारे देश को स्वतन्त्र करने का प्रयत्न किया और इसके लिये स्वतन्त्र भारत सेना का निर्माण किया, जिसमें बहुत से देशभक्त सम्मिलित हो गये।

न तस्य यत्नः फलमाप तूर्णं, यद्यप्यनेकैः प्रबलैर्निदानैः।
तथापि यत्न किल तस्य वन्द्यः, स्वातन्त्र्यमाप्तुं च बभूव हेतुः॥91॥

यद्यपि अनेक प्रबल कारणों से उन का प्रयत्न शीघ्र सफल नहीं हुआ, तथापि वह प्रयत्न अत्यन्त प्रशंसनीय था और स्वतन्त्रता की प्राप्ति में वह भी कारण बना।

श्रद्धायुतानन्दधनस्तपस्वी, येते स्वराष्ट्रं सबलं विधातुम् ।
शिक्षां प्रदायाभयदां पवित्रां, स्वदेशभक्तिं किल वर्धयन्तीम्॥92॥

१ श्रद्धा से युक्त आनन्द ही जिनका धन था ऐसे तपस्वी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने निर्भयता उत्पन्न करने वाली और स्वदेश-भक्ति को बढ़ाने वाली शिक्षा को देकर अपने राष्ट्र को बलशाली बनाने का यत्न किया।

अस्पृश्यतावारणदत्तचित्तः, परोपकारार्पितसर्ववित्तः।
धीराग्रगण्यो गतभीर्यतीन्द्रः, स्वराज्यसंग्रामसुनायकोऽभूत्।।93।।

अस्पृश्यता (अछूतपन) के निवारण में जिन्होंने अपने चित्त को लगाया हुआ था और परोपकार में जिन्होंने अपना सारा धन लगा दिया था वे धीरवर निर्भय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भी स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख नेता थे।

वीराग्रणी रासबिहारिनामा, श्री हरदयालुश्च बुहप्रयासम्।
प्रचक्रतुदेशमिमं स्वतन्त्रं, कर्तुं परेषां निगडैर्निबद्धम्।।94।।

श्री रासबिहारी बोस और लाला हरदयाल एम. ए. इन दोनों महानुभावो ने पराधीनता की शृङ्लाओं से जकड़े हुए इस देश को अनेक उपायों से स्वतन्त्र कराने का प्रयत्न किया।

वीराङ्गना झांसिमहीपलक्ष्मीर्लक्ष्मीः सरोजिन्यभिधा अनेकाः।
स्वातन्त्र्यसंग्रामपरायणास्ताः, स्वकीयनामान्यमराणि चक्रुः।।95।।

झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई, स्वतन्त्र भारत सेना की नेत्री लक्ष्मी देवी, श्रीमति सरोजनी देवी इत्यादि वीराङ्गनाओं ने भी स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय सहयोग देकर अपने नाम को अमर कर दिया।

परस्सहस्त्रैर्विभवयैः सुवीरैः, सशास्त्रनिश्शस्त्रविकीर्णकृत्यैः।
प्रज्वालितो यैर्निजराज्यवह्निः, ते पुण्यभाजः सकला नमस्याः।।96।।

इस प्रकार जिन हजारों निर्भय उत्तम वीरों ने सशस्त्र व निश्शस्त्र क्रांति के अनेक कार्यो से स्वराज्य की अग्नि को प्रदीप्त किया वे सब पुण्यात्मा नमस्कार करने योग्य हैं।

2 अस्मिन्ननेहस्यखिलान् नमामः, स्वदेशभक्तान् विषयेष्वसक्तान्।
नेतॄन् समस्तान् नरपुङ्गवांस्तान्, स्वराष्ट्रनावः शुभकर्णधारान्।।97।।

इस स्वतन्त्रता के दिन(15-8-1947) को हम सांसारिक विषया

१. अनेहसि =समये। १. निगडैः =शृङ्खलाभिः।

में आसक्ति रहित, राष्ट्र की नौका के उत्तम कर्णधार (संचालक), सब देशभक्तों और नरवर समस्त नेताओं को नमस्कार करते हैं।

भवेत् सदा राष्ट्रमिदं स्वतन्त्रं, मूर्धन्यभूतं भुवने सुमन्त्रम्।
भवेत् समृद्धं मुदितं सुशान्तं, सदैव धातुः कृपया च कान्तम्।।98।।

यह हमारा राष्ट्र सदा स्वतन्त्र और संसार में सबका शिरोमणि बन के उत्तम मन्त्र व विचारयुक्त रहे। यह सदा समृद्धियुक्त, प्रसन्न, शान्त, परमेश्वर की दया से अखण्ड और सुन्दर बना रहे।

महापुरुषाभिलषितम् अस्मदीयं गणराज्यम्

आदर्शभूतं गणराज्यमेतद्, भवेत् समस्ते भुवनेऽस्मदीयम्।
जीवाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु, निरामयाः शोकविषादहीनाः।।99।।

हमारा यह गणराज्य सारे संसार में आदर्श रूप हो। सब प्राणी रोग, शोक और दुःख से रहित एवं सुखी हों।

प्रीतिः समेषां भवतु प्रशस्ता, सर्वोदयः स्यात् सहयोगतश्च।
कृषीवला ये श्रमिकास्तथान्ये, न पीडिताः स्युः क्वचिदत्र केचित्।।100।।

सब का आपस में उत्तम प्रेम हो, परस्पर सहयोग से सब की उन्नति हो। किसान, मजदूर या अन्य जन कोई भी कहीं पीड़ित न हों।

ये शासकास्ते जनताहितं वै, कर्त्तव्यरूपेण विभावयेयुः।
सेवारताः स्युः परमेशभक्ताः, धर्मे स्वदेशे च तथानुरक्ताः।।101।।

जो शासक हैं वे जनता के हित को ही अपना कर्त्तव्य समझें। वे परमेश्वर के भक्त, धर्म और स्वदेश में प्रेम रखने वाले और सेवापरायण हों।

प्रजाः समस्ताः सुखशान्तियुक्ताः, स्वशासकेष्वादरमादधानाः।
सौहार्दमासां सुखदं सदा स्यात्, उत्कर्ष आसां च भवेत्सुहर्षः।।102।।

प्रजाएं सुख और शान्ति से युक्त हों, वे अपने शासकों में आदर का भाव रखने वाली हों। इनकी (शासकों और प्रजाओं की) परस्पर

मित्रता सबके लिए सुखदायिनी हो और इनकी उन्नति उत्तम हर्षकारिणी हो।

नराः सदाचाररताः समस्ताः, नार्यस्तथादर्शपतिव्रताः स्युः।
***जारो न कश्चिन्न च मद्यपः स्याद्,नाशिक्षितः कोऽपि जनः सुराष्ट्रे।।103।।**

सब पुरुष सदाचारी हों और नारियां आदर्श पतिव्रताएं हों। इस उत्तम राष्ट्र में कोई भी व्यभिचारी, शराबी तथा अशिक्षित न हो।

सत्येऽनुरक्ता सकला मनुष्याः, हिंसाद्यधर्माच्च तथा निवृत्ताः।
शान्तिं शुभां जीवन आदधानाः, शान्तेः प्रसारं जगतीह कुर्युः।।104।।

सब मनुष्य सत्य में अनुरक्त हों, हिंसादि अधर्म से सदा निवृत्त हों। जीवन में शान्ति को धारण करते हुए सब इस जगत् में शान्ति का प्रसार करें।

***स्तेनः कदर्यो न नरोऽस्तु कश्चित्,कामी*नृशंसो न च नास्तिकःस्यात्।**
सर्वे स्वकर्तव्यपरायणाः स्युः, त्यागस्य भावं बहुधा दधानाः।।105।।

कोई पुरुष चोर, कंजूस, कामी, क्रूर और नास्तिक न हो। सब त्याग के भाव को अनेक प्रकार से धारणा करते हुये अपने कर्त्तव्य के पालन करने में तत्पर हों।

औदार्यशौर्यादिगुणैः प्रसिद्धं, राष्ट्रं भवेन्नः सुखितं समृद्धम्।
विद्याकलाकौशलबुद्धिवृद्धम्, आवश्यकं सर्वमिहास्तु सिद्धम्।।106।।

हमारा राष्ट्र उदारता, शूरवीरता आदि गुणों के कारण प्रसिद्ध, समृद्धियुक्त और सुखी हो। विद्या, कलाकौशल, और बुद्धि में यह बड़ा चड़ा हो और देश के लिये आवश्यक सब वस्तुयें यहीं तैयार हों।

1.* जारः = व्यभिचारी।

2. स्तेनः-चोरः।

3. नृशंसः-क्रूरः।

शान्तेः सुसन्देशमिदं प्रदद्याद्, भ्रान्तेर्निवारं सततं विदध्यात्।

कान्तेः सदैवायतनं च भूयाद्, राष्ट्रं हरानुग्रहतोऽस्मदीयम्।।107।।

यह हमारा राष्ट्र शान्ति का उत्तम सन्देश संसार को देता रहे, यह ज्ञान फैलाकर सब भ्रमों का निवारण करने वाला हो, परमेश्वर की कृपा से यह हमारा राज्य सब प्रकार की कान्ति वा तेज और शोभा का घर बने।

न गोवधः स्यात् क्वचिदत्रदेशे, सर्वत्र गीता सुरभारती स्यात्।
नित्यं प्रसारः श्रुतिसंस्कृतेः स्याद्, भवेद् दयालोः करुणेयमित्थम्।।108।।

सारे देश में कहीं गोवध न हो, संस्कृत का सर्वत्र गान तथा प्रचार हो, उत्तम वैदिक संस्कृति का सदा प्रसार हो। दयालु परमेश्वर की ऐसी कृपा हो।

इति महापुरुषकीर्तने राष्ट्रनायकवर्गकीर्तनं
नाम षष्ठं काण्डं समाप्तम्।।

अथ सप्तमं काण्डम्
विदेशस्थमहापुरुषावली

समाजसंशोधको जरदुष्ट्रः
(अ. 3100-3020 ई.पू.)

चिराद् विलुप्तं किल वेदधर्मं, प्राचारयद् यः पुनरार्यभूमौ*।
***वेदेऽसुरं योऽहुरमज्दमाह, स वन्दनीयो जरदुष्ट्रधीरः।।1।।**

-ऋग्0 1. 24. 14.।

बहुत देर से लुप्त हुये वेद धर्म का जिसने आर्य देश (ईरान) में फिर से प्रचार किया। वेद में जिस परमेश्वर को अनेक स्थानों में महान् असुर के नाम से पुकारा गया है उसे जिस ने अहुरमज्द के नाम से पुकारा वह धीर जरदुश्त वन्दनीय है।

सर्वज्ञ एकः स महानुपास्यः, देवोऽसुरः शक्तिनिधानरूपः।
इत्यादि तत्त्वानि दिशन् महात्मा, स वन्दनीया जरदुष्ट्रध ीरः।।2।।

परमेश्वर एक सर्वज्ञ, महान्, सर्वशक्तिमान् और उपासनीय है, इत्यादि बातों का उपदेश करने वाला और धर्मात्मा जरदुश्त वन्दनीय है।

*** गवाद्यहिंसां पुनरादिदेश, तथाग्निहोत्रं नियमेन कार्यम्।**
वर्णव्यवस्थां प्रतिपादयंश्च, स वन्दनीयो जरदुष्ट्रधीरः।।3।।

1. आर्यभूमौ-ईरान् इतिख्यातदेशे।

2. क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि।।

3.* एतान् विषयान् सविस्तरं ज्ञातुकामैः मान्य श्री पं. गंगाप्रसाद एम. ए. सेवा निवृत्त मुख्य न्यायाधीशकृतं Fountain head of Religion (अजमेर आर्य सावहित्य मएडल प्रकाशितम्) अथवा तदनुवादरूपम् 'धर्म का आदि स्त्रोत' इति पुस्तकमवश्यमध्येयम्।

जिस ने फिर से गौ आदि प्राणियों को न मारने का आदेश दिया तथा नियमपूर्वक अग्निहोत्र, हवन-यज्ञादि करने का उपदेश दिया और वर्णव्यवस्था का प्रतिपादन किया वह धीर जरदुश्त वन्दनीय है।

पवित्रतां मानसकायवाचां, योऽबोधयत् साधनमीशमाप्तुम्।
व्यपादितो नीचजनैर्नृशंसैः, स वन्दनीयो जरदुष्ट्रधीरः।।4।।

जिसने शरीर वाणी और मन की पवित्रता को ईश्वर की प्राप्ति का साधन बताया, किन्तु जिस को नीच क्रूर जनों ने मार दिया, ऐसा धैर्यशाली जरदुश्त वन्दनीय है।

पुण्यात्मा कन्फ्यूशियसः
(551-478 ई. पू.)

चीनप्रदेशे शुभजन्म लब्ध्वा, प्रचारयद् यो भुवि सत्यधर्मम्।
जनाः स्वकर्त्तव्यपरायणाः स्युः, कन्फ्यूशियससंज्ञमुनिः प्रशस्यः।।5।।

चीन में उत्तम वंश जन्म ग्रहण करके जिसने संसार में सत्य धर्म का प्रचार किया और सदा यह चाहा कि लोग अपने कर्त्तव्यों का पालन करने वाले हों, वह कन्फ्यूशियस मुनि प्रशंसनीय है।

श्रेष्ठो जनो मन्दगतिर्गिरि स्यात्, उत्साहवंस्त्वाचरणे सदैव।
इत्थं सुशिक्षां ददत्र धीमान्, कन्फ्यूशियससंज्ञमुनिः प्रशस्यः।।6।।

उत्तम मनुष्य को चाहिये कि वह बातों में तो मन्द गति वाला हो (अधिक बातें बनाने वाला न हो) किन्तु आचरण करने में सदा उत्साही हो। इस प्रकार यहाँ उत्तम शिक्षा को देता हुआ बुद्धिमान् कन्फ्यूशियस नामक मुनि प्रशंसनीय है।

जानन्ति सत्यं नहि ते समानाः, सत्यप्रियैः सत्यरतैर्न तेऽपि।
इमां सुशिक्षां वितरन् जनेभ्यः, कन्फ्यूशियससंज्ञमुनिः प्रशस्यः।।7।।

जो सत्य को जानते हैं वे उनके बराबर नहीं हैं जो सत्य को प्यार करते हैं और जो लोग सत्य को प्यार करते हैं वे उनके बराबर नहीं जो सत्य में आनन्द पाते और उसी में तत्पर हैं, लोगों को इस अच्छी शिक्षा को देता हुआ कन्फ्यूशियस मुनि प्रशंसनीय है।

विश्वस्तता सरलता सहिता सदेयं,

सिद्धान्त एष सकलैः प्रथमोऽस्ति वेद्यः।
त्याज्यं न धर्ममिह जातु जनेन शंसन्,
कन्फ्यूशियसमुनिरिहास्त्यभिनन्दनीयः।।8।।

सरलता से युक्त विश्वास-पात्रता इसे सब मनुष्य को प्रथम सिद्धान्त समझना चाहिये। धर्म का मनुष्य को कभी परित्याग न करना चाहिये, इस प्रकार उपदेश देता हुआ कन्फ्यूशियस मुनि प्रशंसनीय है।

सुकृती सुकरातः
(469-399 ई. पू.)

करे गृहीत्वा खलु तर्कतर्कुं, य खण्डयामास विमूढवादान्।
सत्यं ग्रहीतुं च सदैव सिद्धः, स सत्यवीरः सुकरात ईड्यः।।9।।

हाथ में तर्क रूप चाकू को पकड़कर जिसने मूर्खतापूर्ण वादों का खण्डन किया और जो सत्य को ग्रहण करने के लिये सदा तैयार था, वह सत्यवीर सुकरात प्रशंसनीय है।

भ्रष्टान् स्वधर्माद् विदधाति यूनोऽयं दोषमित्थं परिकल्प्य मिथ्या।
न्यायालये यं ननु पर्यभूवन्, स सत्यवीरः सुकृती प्रशस्यः।।10।।

यह युवकों को अपने धर्म से भ्रष्ट करता और बिगाड़ता है, इस झूठे दोष को लगाकर जिसे न्यायालय में लोगों ने तिरस्कृत किया, वह सत्यवीर पुण्यात्मा सुकरात वन्दनीय है।

खण्ड्यं त्वया लोकमतं न नूनं, विषस्य पात्रं ह्यथवा निपेयम्।
इत्युक्तिमाकर्ण्य न भीतचित्तं, सत्यं ब्रुवन्तं सुकरातमीडे।।11।।

तू यह प्रतिज्ञा कर कि लोगों के विश्वास का खण्डन न करेगा, नहीं तो तुझे विष का प्याला पीना पड़ेगा। इस बात को सुनकर जिसके चित्त में जरा भी भय उत्पन्न नहीं हुआ, ऐसे सत्यवादी सुकरात की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रिया भवन्तो मम देशवासिनः, प्रेष्ठं तु सत्यं न जहामि जातुचित्।
पास्यामि पात्रं गरलस्य हर्षात्, त्यक्ष्यामि सत्यस्य नहि प्रचारम्।।12।।

हे देशवासियो! मैं तुम से प्रेम करता हूँ किन्तु मुझे सत्य सब से अधिक प्रिय है और उसको मैं कभी नहीं छोड़ सकता। मैं हर्ष से विष के पात्र को पी लूंगा, किन्तु सत्य के प्रचार को कभी न छोड़ूँगा।

इत्यादिकां वाचमुदीर्य मोदात्, पात्रं पिबन्तं गरलस्य शान्त्या।
जीवात्मनोऽस्यामरतां दिशन्तं, नमामि वन्द्यं सुकरातसंज्ञम्।।13।।

इत्यादि बात को प्रसन्नता पूर्वक कह कर शान्ति से विष का प्याला पीते और आत्मा की अमरता का उपदेश करते हुये सुकरात नामक वन्दनीय महानुभाव को मैं नमस्कार करता हूँ।

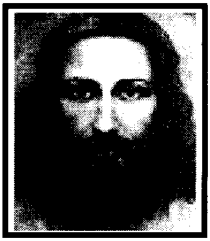

महात्मेसामसीहः

पिता जनानां परमेश्वरोऽसौ, सदा पवित्रः करुणासमुद्रः।
सौभ्रात्रमित्थं प्रदिशन् नराणाम्, ईसामसीहः किल सोऽभिनन्द्यः॥14॥

परमात्मा सब मनुष्यों का पिता है, वह पवित्र और दया का समुद्र है, इस प्रकार सब मनुष्यों के उत्तम भ्रातृभाव का प्रतिपादन करने वाला ईसामसीह निश्चय से प्रशंसनीय है।

जना विनम्रा अभिनन्दनीयाः, वात्सल्यभाजः परमेश्वरस्य।
इत्यादि शिक्षां वितरन् विनीतः, ईसामसीहः किल सोऽभिनन्द्यः॥15॥

जो पुरुष नम्र हैं वे अभिनन्दनीय हैं, वहीं परमेश्वर के प्रिय होते हैं इत्यादि शिक्षा को देने वाला विनीत ईसामसीह निश्चय से प्रशंसनीय है।

द्वेष्यो न कश्चित्प्रतिपक्षिणोऽपि, प्रीत्या सदैवेह हि वर्तनीयाः।
प्रेम्णा सुशिक्षाममलां ददत् सः, ईसामसीहः सरलोऽभिनन्द्यः॥14॥

संसार में द्वेष करने योग्य कोई नहीं। शत्रुओं के साथ भी तुम्हें प्रेम करना चाहिये। प्रेम से इस उत्तम शिक्षा को देने वाला सरल स्वभाव ईसामसीह प्रशंसनीय है।

पवित्रता चेतस एव मुख्या, देवेशमाप्तुं विधयो न बाह्याः।
एवं सुबोधं वितरन् जनेभ्यः, ईसामसीहः किल सोऽभिनन्द्यः॥17॥

परमात्मा को प्राप्त करने के लिये चित्त की पवित्रता ही मुख्य है न कि बाह्य क्रिया कलाप। इस प्रकार मनुष्यों को उत्तम शिक्षा को देता

हुआ ईसामसीह निश्चय से प्रशंसनीय है।

किमुत्तमं मां वदथेह वत्साः, श्रेष्ठः प्रभुः केवलमेक एव।
इत्यादि वाक्यं कथयन् विनम्रः, ईसामसीहः किल सोऽभिनन्द्यः॥18॥

प्रिय शिष्यो ! तुम मुझे क्यों अच्छा कहते हो, अच्छा तो केवल एक परमात्मा ही है। इत्यादि वाक्य को कहने वाला विनम्र ईसामसीह निश्चय से प्रशंसनीय है।

न मे प्रशंसानिरतो हि नाकं, गन्तुं समर्थो यदि सोऽस्त्यसाधुः।
इत्थं चरित्रं परमं वदन् सः, ईसामसीह भुवि नन्दनीयः॥19॥

जो मेरी प्रशंसा करता किन्तु सच्चरित्र सम्पन्न नहीं है वह स्वर्ग को प्राप्त नहीं कर सकता। इस प्रकार सच्चरित्र को ही प्रधानता देता हुआ ईसामसीह प्रशंसनीय है।

आरोप्य शूलं स हतो नृशंसैः, देवस्य राज्यं भुवि कर्त्तुकामः।
तिरस्कृतः किन्तु विशुद्धचेताः, ईसामसीह सरलोऽभिनन्द्यः॥20॥

पृथिवी पर ईश्वर का राज्य स्थापित करने की इच्छा करने वाले उस ईसामसीह को क्रूर लोगों ने शूली पर चढ़ा दिया। उस का तिरस्कार किया गया किन्तु वह विशुद्ध चित्त वाला सरल स्वभाव ईसामसीह प्रशंसनीय है।

1.Why callest thou me good? There is none good but one, That is god? - Matthew 19.17

संशोधको मार्टिन-ल्यूथरः
(1483-1546 ई.)

दृष्ट्वा पोपसमर्थिततं भुवि भृशं, पाखण्डजालं महद्,
यस्तद् दूरयितुं प्रयत्नमकरोत्, सहेऽभयो यातनाः।
सेहे किन्तु न धर्मनामविदितं, योऽधर्म्यकृत्यं सुधीः,
मार्टिन-लूथर-नामधेयमहितो धीरः स वन्द्यो बुधः।।21।।

पोप द्वारा समर्थित बड़े पाखण्ड जाल को फैलते हुए देख कर जिसने उसे दूर करने का प्रयत्न किया और निर्भय होकर अनेक कष्टों को सहन किया किन्तु जिस बुद्धिमान् ने धर्म के नाम से और उस की आड़ में किये जाने वाले अधार्मिक कृत्यों को सहन नहीं किया, वह धैर्यशाली मार्टिन लूथर वन्दनीय है।

पोपः पापपरायणों धनयुतो लक्षैर्जनैः पूजितः,
स्वर्गं गन्तुमिहाधिकारमददान् मूढान् गृहीत्वा धनम्।
दर्शं दर्शमधर्मस्य भुवि योऽबध्नात् कटिं खण्डने,
वन्द्यो लूथर-नामधेय विबुधः, शार्मण्यदेशोद्भवः।।22।।

पाप में तत्पर, लाखों लोगों द्वारा पूजित धनी पोप उस समय मूर्ख लोगों को भी उनसे धन लेकर स्वर्ग जाने का अधिकार पत्र दे देता था, उसके इस अधर्म को देखकर जिसने उसके खण्डन के लिये कमर कसी, वह जर्मन देशीय लूथर नामक बुद्धिमान् वन्दनीय है।

पाखण्डस्य विखण्डनेन सरलः, कोपेन पोपेन यः,
संनिस्सारित एव यद्यपि न तच्चिन्तां स चक्रे सुधीः।
पोपो भ्रान्तिविहीनमानव इति, भ्रान्तिं सदा खण्डयन्,
सम्राजं गणयन्न चैव विमुखं, वन्द्योऽभयो लूथरः।।23।।

जिस सरल स्वभाव वाले बुद्धिमान् लूथर को पोप ने उसके पाखण्ड खण्डन से क्रुद्ध होकर निकाल दिया किन्तु जिसने उसकी कुछ चिन्ता नहीं की, पोप निभ्रान्त मनुष्य है इस भ्रम का जिसने सदा खण्डन किया वह उस समय के सम्राट् के विरुद्ध होने की भी परवाह न करने वाला निर्भय लूथर वन्दनीय है।

वैज्ञानिको न्यूटनः

(1642-1727 ई.)

वैज्ञानिकानां प्रमुखो मनस्वी, भूमाविहाकर्षणतत्त्ववेत्ता।
***देवेशनिष्ठामचलाम् दधानः, स न्यूटनः कस्य न वन्दनीयः।।24।।**

पाश्चात्य वैज्ञानिकों के मुख्य, मनस्वी, भूमि में आकर्षण नियम के तत्त्व का पता लगाने वाला, परमेश्वर में विश्वास रखने वाला न्यूटन किसके लिये वन्दनीय नहीं।

1.* 'All this material universe is the handiwork of one omniscient and Omnipotent Creator' Sir Issac Newton in.

यस्य स्वाभावो भृशमेव शान्तः, कोपो जितो येन मनस्वीनासीत्।
ज्योतिर्विदां प्राज्ञ इहाग्रगण्यः, स न्यूटनः कस्य न वन्दनीयः।।25।।

जिसका स्वाभाव बहुत ही शान्त था और जिस मनस्वी अथवा विचारशील ने क्रोध को जीत रखा था, जो बुद्धिमान् ज्योतिषियों में भी प्रमुख था वह न्यूटन किसके लिये वन्दनीय नहीं ?

अहं तु विज्ञानमहाम्बुराशेः, चिनोमि तीरे सिक्ताकणान् वै।
इत्थं वदन् चार्वभिमानशून्यो, स न्यूटनः कस्य न वन्दनीयः ।।26।।

मैं तो अभी विज्ञान रूपी महासमुद्र के किनारे रेत के कणों को चुन रहा हूँ, सर्वथा अभिमान रहित होकर इस प्रकार बोलने वाला न्यूटन किस के लिये वन्दनीय नहीं?।

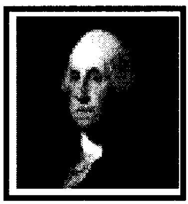

वीरो जार्जवाशिंगटनः

(1732-1799 ई.)

स्वीयेन धैर्येण सुसंयमेन, वीर्येण नित्यं दृढनिश्चयेन।
पातालराष्ट्रप्रथमः प्रधानो, वाशिंगटनो वन्द्यचरित्र आसीत्।।27।।

अपने धैर्य से, उत्तम संयम से, बल से और नित्य दृढ़ निश्चय से अमरीका का पहला प्रधान वा राष्ट्रपति वाशिंगटन वन्दनीय चरित्र वाला था।

आसीद् यदीयं विमलं चरित्रं, सत्येन पूर्णं व्यवहारजातम्।
युद्ध सुशान्तौ प्रथमो जनानां, सम्मानपात्रं किल जार्ज आसीत्।।28।।

जिसका चरित्र निर्मल था और जिसका समस्त व्यवहार सत्य से पूर्ण था, युद्ध में और उत्तम शान्ति स्थापना में अपने देश के सब लोगों में आगे रहने वाला जार्जवाशिंगटन आदरणीय था।

स्वातन्त्र्ययुद्धे जनमान्यनेता, राष्ट्रैक्यकार्ये खलु दत्तचेताः।
वीरः परं नैव कठोरचित्तो, वाशिंग्टनः सर्वजनाभिनन्द्यः।।29।।

स्वतन्त्रता के युद्ध में जो लोगों का मान्य नेता था, जिसका चित्त राष्ट्र की एकता के कार्य में लगा हुआ था, जो वीर था किन्तु कठोर चित्त वाला न था, वह वाशिंगटन सब लोगों के लिये अभिनन्दनीय था।

कृषीवलानां कुलसम्प्रसूतः, स्वीयैर्गुणैरुच्चपदाधिरुढः।
गर्वाभिभूतो नहि यो बभूव, वाशिंग्टनः सर्वजनाभिनन्द्यः।।30।।

जो किसानों के कुल में उत्पन्न होकर भी अपने गुणों से उच्च पद पर पहुंच गया किन्तु जिसने कभी अभिमान नहीं किया ऐसा वाशिंगटन सब लोगों के लिये अभिनन्दनीय था।

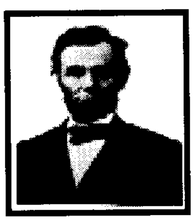

अब्राहमलिंकनमहोदयः

(1809-1864 ई०)

योऽकिञ्चनोऽप्यध्यवसाययोगाद्, धियः प्रतापात् पुरुषार्थतश्च।
पातालदेशेऽधिपतित्वमाप, लिङ्कन् सुधीः सोऽस्त्यभिनन्दनीयः।।31।।

जो निर्धन होते हुये भी अपने दृढ़ निश्चय, बुद्धि के प्रताप और पुरुषार्थ से अमरीका का राष्ट्रपति बन गया वह उत्तम बुद्धि सम्पन्न

अब्राहम लिंकन अभिनन्दनीय है।

शशास राष्ट्रं किल यः सुचारु, प्रकाशयामास महत्त्वमित्थम्।
अद्यापि राष्ट्रस्य पितेव पूज्यो, लिङ्कन् सुधीः सोऽस्त्यभिनन्दनीयः।।32।।

जिसने अपने राष्ट्र का बड़ी उत्तमता से शासन किया और इस प्रकार से अपने महत्त्व को प्रकट किया, जिसकी आज भी अमेरिका निवासी राष्ट्र के पिता के रूप में पूजा करते हैं, वह उत्तम बुद्धि सम्पन्न अब्राहम लिंकन अभिनन्दनीय है।

आसीद् दयालुः स महान् मनीषी, दास्यप्रथां राष्ट्रकलङ्करूपाम्।
निवारयामास विधिं विधाय, लिङ्कन् सुधीः सोऽस्त्यभिनन्दनीयः।।33।।

वह बड़ा दयालु और महान् बुद्धिमान् था, जिसने राष्ट्र पर कलंक रूप दासत्व की प्रथा को कानून बनाकर दूर कर दिया वह उत्तमबुद्धि सम्पन्न अब्राहम लिंकन अभिनन्दनीय है।

कठोरचित्ता किल यस्य पत्नी, परं जहौ यो न कदापि धैर्यम्।
उग्रस्वभावं सहमानधीरो, लिङ्कन् सुधीः सोऽस्त्यभिनन्दनीयः।।34।।

जिसकी पत्नि कठोर चित्त वाली थी किन्तु फिर भी जिसने कभी धैर्य का परित्याग नहीं किया, इस प्रकार उसके उग्र स्वाभाव को सहने वाला धीर, उत्तमबुद्धि सम्पन्न अब्राहम लिंकन अभिनन्दनीय है।

मनस्वी तालस्तायः
(1827-1910 ई.)

कविस्तालस्तायः प्रथितविबुधो रूसविषये,
प्रणेता ग्रन्थनाम् अतिशुभविचारान् प्रददात्।
विहायैश्वर्यं यो ह्यतिसरलरूपे न्युषितवान्,
महर्षेश्चैवाख्यामलभत निजैः सात्त्विकगुणैः।।35।।

तालस्ताय रूस देश का अत्यन्त प्रसिद्ध बुद्धिमान्, कवि और अत्युत्तम विचारों के देने वाले अनेक ग्रन्थों का निर्माता था; जिसने समस्त ऐश्वर्य पर लात मारकर अत्यन्त सीधा साधा जीवन व्यतीत किया और अपने सात्त्विक गुणों से महर्षि की संज्ञा को प्राप्त किया।

स वन्द्यः सद्बुद्धिर्विदितपरतत्त्वो हि विजने,
भवन् ध्यानारूढः प्रमुदितमनास्त्यक्तविषयः।
तदेवेहाध्यात्मं, विबुधजनतायां प्रचुरयन्,
कविस्तालस्तायो जयति सदयः शुद्धहृदयः।।36।।

उत्तम बुद्धि वाले, एकान्त में ध्यानरूढ़ होकर परम तत्त्व को जानने वाले, प्रसन्न मन से सांसारिक विषयों का त्याग करने वाले, बुद्धिमानों में उस अध्यात्मतत्त्व का ही प्रचार करने में शुद्ध हृदय, दयालु कवि तालस्ताय की सदा जय हो।

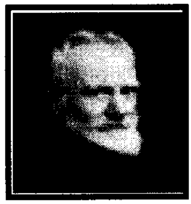

प्रतिभाशाली बर्नार्ड शा महोदयः

सुलेखकोऽसौ सरलो मनस्वी, मांसाशनाद्यैर्व्यसनैर्विहीनः।
पाखण्डजालं सहसा विकृन्तन्, बर्नार्डशासंज्ञकविज्ञ ईड्यः।।37।।

उत्तम लेखक, सरल स्वभाव युक्त, विचारशील, मांस, मदिरा धूम्रपान आदि व्यसनों से रहित, पाखण्ड जाल को अपने तर्क बल से काटने वाला बर्नार्ड शा नामक बुद्धिमान् प्रशंसनीय है।

प्राप्यापि लोके शतकल्पमायुः, यो मौलिकानेव ददौ विचारान्।
अकुण्ठितासीत् प्रतिभा यदीया, बर्नार्डशां तं मुदितो नमामि।।38।।

संसार में सौ वर्ष के लगभग (94) वर्ष की आयु को प्राप्त करके भी जो मौलिक विचारों को देता रहा और जिसकी प्रतिभा अन्त तक अकुण्ठित रही उस बर्नार्डशा को मैं प्रसन्न होकर नमस्कार करता हूँ।

सन्नाटकानां रचने प्रवीणः, कलाविदां मूर्धनि संस्थितोऽसौ।
सत्यं वदन् स्पष्टमिहार्जवेन, बर्नार्डशा नूनमिहास वन्द्यः।।39।।

उत्तम नाटकों की रचना में निपुण, कला वेत्ताओं में अग्रगामी, सत्य को स्पष्टता और सरलता से प्रकट करने वाला बर्नार्डशा निश्चय से वन्दनीय था।

वीरो हिटलरमहोदयः

शार्मण्यदेशजनतोद्धृतितत्परो यः, रात्रिन्दिवं स्वविषयस्य हिते सचिन्तः।
मद्यामिषादिसकलैर्व्यसनैर्विहीनो, वीरः सुधीर्हिटलरोऽप्यभिनन्दनीयः।।40।।

जर्मनी देश की जनता के उद्धार में जो तत्पर था और रात-दिन जिसको अपने देश के हित की ही चिन्ता रहती थी। शराब, मांससेवनादि सब व्यसनों से रहित वीर, बुद्धिमान् हिटलर भी प्रशंसनीय है।

दृष्ट्वा स्वदेशमनुजान् चलितान् सुमार्गात्,
चारित्र्यमप्यगणयद्बहुलोकपूर्णान्।
आर्या भवेयुरिह ते विमला इतीच्छन्,
वीरःसुधीर्हिटलरोऽप्यभिनन्दनीयः।।41।।

अपने देश के लोगों को उत्तम मार्ग से विचलित और चरित्र की भी पर्वाह न करने वाले बहुत लोगों से भरा हुआ अपना देश देखकर सब पवित्र चरित्र वाले आर्य बनें, यह इच्छा करता हुआ हिटलर भी अभिनन्दनीय है।

जातोऽप्यकिञ्चनकुले निजपौरुषाद् यः,
प्रापाधिनायकपदं शुभशर्मदेशे।
राष्ट्रं तथोन्नमयितुं सततं प्रयेते,
वीरः सुधीर्हिटलरोऽस्त्यभिनन्दनीयः।।42।।

एक निर्धन कुल में जन्म लेकर भी जो अपने पुरुषार्थ से जर्मनी

देश में सर्वोच्च अधिनायक पद को प्राप्त हुआ तथा जिसने अपने राष्ट्र को उन्नत करने का निरन्तर प्रयत्न किया, वह बुद्धिमान् वीर हिटलर अभिनन्दनीय है।

आत्मावलम्बनमदम्यमथाप्रधृष्यम्,
उत्साहमव्यसनितां निजदेशभक्तिम्।
त्यागं सुवाग्मिवरतां दृढनिश्चयं च,
सन्धारयन् हिटलरोऽप्यभिनन्दनीयः।।43।।

स्वावलम्बन, अदम्य तथा प्रबल उत्साह निर्व्यसनता, स्वदेशभक्ति, त्याग, तथा उत्तम भाषण शक्ति और दृढ निश्चय इत्यादि गुणों वाला हिटलर भी अभिनन्दनीय है।

दर्पो न केनापि कदापि कार्यः, दर्पेण हानिर्महती समेषाम्।
इमां सुशिक्षां प्रददद् दुरन्तात्, स्मर्यो नरैर्हिटलरसंज्ञवीरः।।44।।

कभी किसी को अभिमान न करना चाहिये, अभिमान से सब को हानि होती है, इस उत्तम शिक्षा को अपने दुःखदायक अन्त से देते हुए वीर हिटलर को लोगों को स्मरण करना चाहिये।

महात्मा हंसराज

(19 अप्रैल 1864-15 नवम्बर 1938 ई०)

योग्यो भृशं किन्तु समाजसेवाव्रतं समादाय चकार कार्यम्।
आजीवनं साधु महान् मनीषी, श्री हंसराजः किल सोऽभिनन्द्यः।।1।।

जो बहुत योग्य थे किन्तु जिन महान् बुद्धिमान् ने समाज सेवा का

व्रत धारण करके जीवन पर्यन्त उत्तम सेवा कार्य किया, वे महात्मा हंसराज जी अभिनन्दन करने योग्य हैं।

स्वजीवितं यः सरलं नितान्तं, विद्याप्रसारेऽर्पितचित्तवित्तम्।
चक्रे समाजस्य हितेऽनुरक्तं, श्री हंसराजः किल सोऽभिनन्द्यः।।2।।

जिन्होंने अपने अत्यन्त सादे जीवन को विद्या के प्रचार में तन मन धन लगा कर समाज के कल्याण में ही प्रीतियुक्त बना दिया, वे महात्मा हंसराज जी निश्चय से अभिनन्दनीय हैं।

कष्टापहारे भुवि पीडितानां, धर्मप्रसारे च कृतप्रयत्नः।
तत्कारणाल्लब्धयशा मनस्वी श्री हंसराजः किल सोऽभिनन्द्यः।।3।।

इस भूमि पर पीड़ित लोगों के कष्ट दूर करने और धर्म के फैलाने के लिये जिन्होंने सदा प्रयत्न किया और इसके कारण जिन्हें यश मिला ऐसे विचारशील महात्मा हंसराज जी निश्चय से अभिनन्दनीय हैं।

मांसाशनं वेदविरुद्धमेतत्, तथा दयानन्दमते निषिद्धम्।
इत्थं जुघोषेह हि यो महात्मा, श्री हंसराजः किल सोऽभिनन्द्यः।।4।।

मांसाहार करना वेद के विरुद्ध और महर्षि दयानन्द के विचार में भी निषिद्ध है, जिस महात्मा ने ऐसी स्पष्ट घोषणा की वे महात्मा हंसराज जी निश्चय से प्रशंसनीय हैं।

महात्मानो नारायण-स्वामिनः

(पूर्वाश्रमनाम श्री नारायणप्रसादाः)

(वसन्त पंचमी 1866-15 अगस्त 1947 ई०)

परोपकारे सततं प्रसक्तान्, दान्तान् प्रशान्तान् सुगुणैश्च कान्तान्।
सप्रश्रयं तानिह संस्मरामो, नारायणस्वामिमहात्मनो वयम्।।5।।

परोपकार में निरन्तर तत्पर, जितेन्द्रिय, प्रशान्त, अपने गुणों से कान्त (चमकने वाले) महात्मा नारायण स्वामी जी का हम आदर पूर्वक स्मरण करते हैं।

धर्मप्रचारे जनतासुधारे, लोकोपकारे किल दत्तचित्तान्।
तपोनिधींस्तानिह संस्मरामो, नारायणस्वामिमहात्मनो वयम्।।6।।

धर्म प्रचार, जनता के सुधार तथा लोक के उपकार में जिन्होंने अपने चित्त को लगाया हुआ था, उन तपोनिधि महात्मा नारायण स्वामी जी का हम सादर स्मरण करते हैं।

येषां प्रसिद्धोपनिषत्कथासौ, श्रद्धालुवर्गाय ददाति मोदम्।
समर्पयामः कुसुमानि भक्तेः, श्रद्धास्पदेभ्यो मुदिताः समस्ताः।।7।।

जिन की प्रसिद्ध उपनिषदों की कथा (उपनिषद् रहस्य) श्रद्धालुओं को प्रसन्नता देती है। उन श्रद्धेय महात्मा नारायण स्वामी जी के ऊपर हम श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं।

वृन्दावनाचार्यपदे निषण्णान्, विनायकान् दक्षिणधर्मयुद्धे।
वचोऽमृतैस्तर्पयतः समस्तान्, नारायणस्वामिमहात्मनो नुमः।।8।।

वृन्दावन गुरुकुल में आचार्य पद पर सुशोभित, हैदराबाद दक्षिण के धर्मयुद्ध में प्रथम सर्वाधिकारी के रूप में मुख्य नेता, अपने वचनामृत से सब को तृप्त करने वाले महात्मा नारायण स्वामी जी की हम स्तुति करते हैं।

नेत्रग्रगण्यान् सकलार्यलोके, ज्ञानाग्निना दग्धसमस्तपापान्।
नारायणस्यात्र यथार्थभक्तान्, नारायणस्वामिमहात्मानो नुमः।।9।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप में अपने काल

में आर्य जगत् के सर्वोच्च नेता, ज्ञान रूप अग्नि से समस्त पापों को दग्ध करने वाले नारायण पद-वाच्य, परमात्मा के सच्चे भक्त महात्मा नारायण स्वामी जी की हम स्तुति करते हैं।

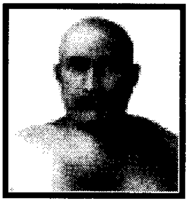

वीतरागः स्वामी दर्शनानन्दः
(पूर्वाश्रमनाम पं. कृपाराम शर्मा)
(1861-1913 ई०)

यः ख्यातसद्दार्शनिकाग्रणीः सन्, बभूव शास्त्रार्थमहारथीन्द्रः।
यद्युक्तिजातं प्रबलं नितान्तं, स दर्शनानन्दसरस्वतीड्यः।।10।।

जो अपने समय के प्रसिद्ध उत्तम दार्शनिकों में अगुआ हो कर शास्त्रार्थ महारथियों में श्रेष्ठ बन गए। जिन की युक्तियाँ बहुत प्रबल होती थीं, वे स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती स्तुति करने योग्य हैं।

यस्तापसोऽसौ सरलस्वभावः, संन्यासधर्मप्रतिपालकोऽभूत्।
मिथ्यातमिस्रहरणे प्रवृत्तः, स दर्शनानन्दसरस्वतीड्यः।।11।।

जो तपस्वी सरल स्वभाव सम्पन्न और संन्यासियों के धर्म का पालन करने वाले थे, जो अज्ञानान्धकार को दूर करने में प्रवृत्त थे, ऐसे स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती स्तुति करने योग्य हैं।

योऽस्थापयद् गुरुकुलं परमेशभक्तो,
ज्वालापुरे शुभमना निगमागमानाम्।
शिक्षां प्रसारयितुमेव महामनीषी,

वन्द्यो न कस्य भुवि दार्शनिकाग्रगण्यः।।12।।

जिन परमेश्वर के भक्त उत्तम मन वाले महान् बुद्धिमान् ने वेदशास्त्रों की शिक्षा के प्रसार के लिए ज्वालापुर (उ.खं.) में गुरुकुल की स्थापना की, वे दार्शनिकों में श्रेष्ठ स्वामी दार्शनानन्द जी संसार में किस के लिए वन्दनीय नहीं?

यः पुस्तिकाप्रणयनेऽनुपमः स्वकाले,
धर्मप्रचारकरणेऽतिशयानुरक्तः।
यस्याचलाभवदिहेश्वर एकनिष्ठा,
वन्द्यो न कस्य भुवि दार्शनिकाग्रगण्यः?।।13।।

जो छोटी-छोटी पुस्तिकाओं (ट्रैक्टों) के बनाने में अपने समय में अनुपम थे और धर्म प्रचार करने में जिनको अत्यधिक प्रेम था, परमेश्वर में जिनकी अटल निष्ठा थी, वे दार्शनिकों में श्रेष्ठ स्वामी दर्शनानन्द जी पृथिवी पर किसके लिये वन्दनीय नहीं?

उपसंहाररूपा प्रार्थना

हे देवेश दयाम्बुधे तव सुता ये विश्रुता भूतले,
ख्याताः स्वीयगुणैः स्वशक्तिमनु ये राज्यं तवातेनिरे।
तेषां कीर्तनतो ध्रुवं सफलतां, नीता स्ववाणी मया,
शक्तिं धेहि धरेम सद् गुणगणं नित्यं हि पुण्यात्मनाम्।।1।।

हे दयासागर परमेश्वर! अपने गुणों के कारण जिन तेरे प्रसिद्ध पुत्रों ने अपनी शक्ति के अनुसार पृथिवी में तेरे राज्य का विस्तार किया, उनके कीर्तन से मैंने निश्चय से अपनी वाणी को सफल किया है, तू हमें शक्ति दे कि हम सदा उन पुण्यात्माओं के गुण अपने में धारण करें।

पूर्णस्त्वं प्रभुरेक एव भगवन्, नान्योऽस्ति पूर्णः क्वचिद्,
दृष्टः सर्वविकारदोषरहितोऽजोऽनाद्यनन्तो विभुः।

भक्तिं ज्ञानमपापतामत इह त्वत्तोऽभियाचामहे ,
देवादेशसुपालनेऽत्र निरता भूयास्म लोके वयम्।।2।।

हे भगवन्! सब का स्वामी पूर्ण तो केवल तू ही है और कोई भी पूर्ण, सर्व दोषरहित अजन्मा, अनादि, अनन्त, सर्वव्यापक नहीं। इसलिये हम तुझ से ज्ञान और निष्पापता की प्रार्थना करते हैं। हे परमेश्वर! हम लोक में तेरी आज्ञा का भली भांति पालन करने में सदा तत्पर रहें।

तात त्वद्विमुखा अहङ्कृतिरताः पापानि ये कुर्वते,
ईर्ष्याद्वेषपरायणाश्च सततं येऽशान्तिमातन्वते।
तेषां त्वं हृदयानि दिव्यदयया, देवेन्द्र संद्योतय,
सौहार्दस्य भवेद्धि येन भुवने, राज्यं सुशान्तेः सदा।।3।।

हे परमप्रिय! जो तुझ से विमुख होकर अहंकारी बन कर पाप करते तथा ईर्ष्या-द्वेष-परायण होकर निरन्तर अशान्ति को संसार में फैलाते हैं, हे देवाधिदेव! उनके हृदयों को भी तू दिव्य दया करके अपनी ज्योति से प्रकाशित कर दे जिससे इस संसार में सर्वत्र मित्रभाव और उत्तम शान्ति का राज्य हो जाए ।

इति महापुरुषकीर्तने स्वदेशविदेशस्थमहापुरुषकीर्तनं
नाम सप्तमं काण्डं समाप्तम्।

आर्ष-कन्या-गुरुकुल (आर्ष-शोध- संस्थान)

27 अक्टूबर 2000 से ग्राम-अलियाबाद, मण्डल-शामीरपेट, जि. -रंगारेड्डी (आं.प्र.) में 'आर्ष-कन्या-गुरुकुल' व्यवस्थित रूप से चल रहा है।

इस गुरुकुल में विभिन्न (उ.प्र., हरयाणा, राजस्थान, म.प्र., उड़ीसा, गुजरात, प. बंगाल, आं.प्र. आदि) प्रान्तों की छात्राएँ बड़ी श्रद्धा और परिश्रम से अध्ययन कर चुकी/ कर रही हैं।

इस संस्थान/ गुरुकुल में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा 'सत्यार्थ-प्रकाश' आदि में निर्दिष्ट पाठ-विधि के अनुसार अध्यापन होता है, जिससे अल्पकाल में ही पाणिनीय-व्याकरण, निरुक्त, षड्दर्शन तथा अन्य वेद वेदाङ्गादि विषयों की पारंगत विदुषी एवं दक्ष महिलाएँ तैयार हो सकें, वैदिक विद्वानों की निरन्तर होती जा रही कमी को यथासम्भव पूरा किया जा सके, वैदिक एवं ऋषियों की विद्या का देश-विदेश में व्यापक प्रचार हो सके तथा प्राचीन वैदिक ग्रन्थों का विभिन्न भाषाओं में प्रामाणिक भाष्य/अनुवाद हो सकें।

आर्ष-पाठविधि से अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त इस संस्थान गुरुकुल की विशेषताएँ हैं:- समान भोजन, आवास, वस्त्र आदि की नि:शुल्क व्यवस्था, संस्कृति सम्भाषण, आध्यात्मिक प्रशिक्षण आदि। यहाँ के अध्ययन काल में किसी प्रकार की सरकारी परीक्षाएँ नहीं दिलाई जातीं। दक्षिण-भारत में यह अपने ढंग का एकमात्र आर्ष-कन्या-गुरुकुल है।

प्रवेश की योग्यता:- न्यूनतम दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, छात्रा की आर्ष-पाठविधि में तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में अपनी रुचि, आध्यात्मिक रुचि तथा अनुशासन-प्रिय हो। प्रवेश मई जून में होता है।